



बी वी वोरकर

भूमि कन्या सीता

लेखक

मार्गनराम विठ्ठल वररत्न

धनुषाक्षर

२० श० फेल्लर, एम० ए०

१९२६

आत्माराम मण्डल संस
प्रकाशक तथा पुस्तक-विभेता
कास्मीरी गेट
दिल्ली ६

प्रकाशक

रामनाथ पुरी

आत्माराम एण्ड सँस

काश्मीरी वेज दिल्ली ६

लखक क अन्य नाटक

स-गुरुं बगाल

भूमि कस्या माता

कथा के लिए

प्रेस में

द्वारकापीठ

कामता के अधिकारी

स्वयं-सेवक

विमापुर रा

सारस्वत

वही बर का बार

सत्यागी का नमार

मजदूरों का राज

त्रिवा-शिवा

प्रथम का नम

कोरी कगमान

[तर्कापिठार मुरतिल]

मुद्रण-१३)
१९६५

मुद्रक

रामनाथ पुरी

टिन्दी प्रिन्टिंग प्रेस

बबीम राह दिल्ली

प्रस्तावना

अपनी विद्यार्थी अवस्था में मैंने माधवराय की एक स्थानीय नाटक मंडली के लिए 'उत्तर रामचरित' नाटक का संगीत अनुवाद किया था। यद्यपि वह नाटक अस्मिन्नीत होने का शौभाग्य मुझे नहीं मिल सका तथापि उससे वास्मीकि की लिखी हुई रामकथा से अल्प रामकथाओं की तुलना करने की प्रवृत्ति मुझमें अवश्य उत्पन्न हुई।

प्रचलित रामकथा और वास्मीकि की रामकथा कहीं भी मेल नहीं खाती। विशेषतया धाम्यात्म रामायण अदभुतरामायण धानंभ रामायण धारि रामायणों की कथाओं तथा वास्मीकि की रामकथा में बिसंगति है। केवल काभिशस का रघुबंध वास्मीकि से मेल खाता है। इतना ही नहीं उसमें रामकथा के कुछ मण और अविपर्यस्त प्रसंग भी पाए जाते हैं। प्रस्तुत नाटक में मैंने वास्मीकि रामायण एवं रघुबंध की कथाओं का ही आधार लिया है।

साध—काशीवास से लेकर अम्बालासाहब किर्लोस्कर तक सभी पूर्व प्राचार्यों ने नाटक सिखते समय पौराणिक कथानकों में अभिनय की दृष्टि से प्रावश्यक केरफार करने की प्रथा चलाई थी। प्रस्तुत नाटक में इस प्रकार का रचना स्वातन्त्र्य यद्यपि मैंने अधिक नहीं लिया है फिर भी शम्भूक-काल और उर्मिसा का निर्माण इन दो बातों में मैंने पूरा प्राचार्यों का अनुसरण किया है। तथापि ऐसा करते समय सबसे वास्मीकि कथा में कहीं भी अस्मिन्नीत उत्पन्न न होने देने की मैंने पूरी-पूरी सावधानी बर्ती है।

नाट्य निवेदन के मोठी-राम राबणोद्धर ने जब मुझसे इसी कथानक को लेकर नाटक सिखाने का अनुरोध किया तब अपना पुराना संकल्प पूर्ण होने का अवसर प्राप्त जान मैंने फिर एक-बार रामकथा वाले सारे ग्रन्थ ध्यान

शली । बुधवार १९२० में यह नाटक बिखा समा और नाट्य निदेशक
 पत्था न उसी वर्ष बिबवा बबमी के दिन इसकी रिहर्सन धारम्भ की ।
 किन्तु अब तक यह नाटक मराठी रचभूमि पर न धा पाने के कारण
 धेर कई बिबों के धनुरोप से धाम यह पुस्तक क्य धे प्रकाशित हू। र्हा
 हू । बिब समय यह नाटक मराठी रचभूमि पर धारणा उठ समय धेरे
 बिस्तृत बिबचन तथा बनेध का। की प्रस्तावना के साथ इसकी रंवाकृति
 प्रकाशित होपी ।

दिस्ती के बस्तरुन कमान के लीतिकों से बबक हेमचन्द्र पुते क
 धभूम्य दिमपसंन से इस नाटक को १९२१ में हिन्दी में धमिनीत
 किया को बहुत ही सफल र्हा ।

श्री रामनास पुगी ने मेरे धम्ब प्रतिबिधि नाटकों के साथ-साथ इस
 नाटक का हिन्दी धभुवार प्रकाशित करने का जो धुर धार स्वीकार किया
 है उनके लिए मैं उनका धुधय से धामारी हूँ ।

साध ही धी १० ध० बंसकर को श्री बिग्हाने धपने साथ साथ में
 धास्त होठे धुर धी धेरे नाटकों का हिन्दी में धभुवार करने का धाबिन्ध
 धपनासा है धाम्यबाध तथा मैं धापरबध धमभता हूँ ।

हाजी कामध बाड़ी

सामा धररकर

१५ धास्त १९२६

प्रस्तुत नाटक के पात्र

विजय
कृशिका
सुमन्त
बासन्ती
सीता
राम
छनिता
लक्ष्मण
साम्बक
रावपुत्र
बास्मीन्द

भूमि कन्या सीता

पहला अंक

[दूर रामस्तुति पर एक वैतानिक बुनार्ई पड़ रहा है। राम का आराम गृह। पीठिकाएँ ठीकठाक करने में विजय और कुमिका व्यस्त हैं। दूर से बुनार्ई पड़ने वाले स्तोत्र की धोर उनके काम लगे हुए हैं। स्तोत्र समाप्त होते ही काम छोड़ कर दोनों नमस्कार करते हैं। कुमिका जब फिर से काम करने लगती है तब विजय दरवाजे तक जाकर भाँक कर बाहर देखता है और लौट आता है।]

विजय—अब जल्दी करो कुमिका सुना ? रात्र सभा अभी-अभी समाप्त हुई है। अब रामचन्द्र जी सीधे इधर ही आएँगे। कितने सानों के बाद आज उनके कारण हम आरामगृह को सनेँगे।

कुमिका—आज ? रात्र्यामिके होकर इतने महीने ह्रा गए फिर भी अभी तक प्रभु रात्र्यंश्र अपने आरामगृह में नहीं आए ?

विजय—घाटे तो तुम्हें न पठा सनता ! चारों धोर से इतने प्रतिबि गण आए हुए थे। ज्यपि मूनी रात्रे रजबाड़े तो आए ही थे—इसके बिना वह बाहर सेना बिनीपण के राजसपण—सारी धनोघ्या नगरी जैसे भर सी गई थी। आज कैसा बुला-बुला सा लग रहा है घारे प्रतिबि जैसे गए। आज ही रात्रा जलक की सवारी में भिविला नगरी की धोर प्रस्थान किया है तब जाकर श्रीरामचन्द्र जी को इधर आने का धनकाय मिला है।

कुमिका—प्रतिबिओं की धारममठ के कारण हम इधर ध्यान ही कब दे पाते थे ? अब से यहाँ आई है सीतादेवी को भी धम भर के लिए फुरसत नहीं। पहिली बार ही उन्हें देखा। बनबाठ की तो हमने मुनी

हुई बार्ते हैं। मैं बरा सी भी अब उम्होंने बनवास लिया बा। उमिसादेवी से रोज़ सुना करती पी के बार्ते—

बिजय—अब छत्र विषय में कुछ न कहो—समझी ? उन प्रथम बार्तों का अब उल्लेख भी नहीं करना चाहिए। अब राम राम्य मुक्त हो गया है। बार्ते घोर घानद ही घानद है। इतने सारों के बाद जाकर कहीं मुझे प्रभु के कपड़े धोने को मिसे है। मेरा हृदय जैसे घानद से भर उठा है। लगता है मानी मेरा माम्य बाप पड़ा है। इतने सारों से बरकत बारन करने वाले प्रभु के छरीर पर धरने हाथ से बोसा हुमा महाबदन पहनाते समय मुझे लजा मानी मेरा बाम सार्पक ही गया।

कुम्भिका—इसे माम्यबाग हा तुम बिजय। ईर्ष्या हाठी है मुझे तुमसे भीर तुम्हारे पत्नी—बाछंठी से भी। प्रत्यक्ष सेवा हो रही है वो तुम्हारे हाथों। सीता-राम के छरीर पर तुम्हारे हाथों बरकत बढ़ते हैं। माय प्रभु यहाँ धारणे ~ ।

[सुमंत प्रवेश करता है। सुमंत महसू का पुराना कार्यकर्ता है। वह काफ़ी बूढ़ा है। उसके धाँसे ही दोनों उसे नमस्कार करते हैं। अंदर धाँसे ही वह एक बार बार्ते घोर नजर करता है।]

सुमंत सब ठीकठाक हो गया है न बिजय ?

बिजय—बाप देक ही रहे हैं।

सुमंत—हाँ—देख रहा हूँ।—पर बढ़ावे के कारण मेरी नजर बुझती हो गई है। बीरह साल न इन घाँसों से बचकर पानी चूँ एरा पा—मैं हीठा उम्हें सीमा पार पहुँचाने गया बा ?—उस पाव का प्रायश्चित्त घाँसों से धर्ये देकर कर रहा बा। अब राग्याभियेक हुआ है—उन समय का वह राग्याभियेक बीसा ही रह गया बा—इसी घानधी मे बीरह बयों के परवान अब वह अभियेक हुआ है। घाँसों का ब्रत पूरा हुआ। इतने घाँसों के बाद माय प्रभु घान इन घारामबूढ़ में धाने बाने हैं—उनके कारण यहाँ पहुँचे ही न बीरह गाल निर बाने चाहिए ! तबधे बिजय ?

बिजय—घान्सी बात ठीक से नहीं समझ पाया सुमंत जी ।

सुमंत—इस धारामगृह को खाने के लिए तुम्हीं से क्यों कहा जा

बिजय ?

बिजय—इसी बात का मुझे धारण है । और सभी लोगों को छोड़ कर मन्त्र पर यह काम सौंपा गया है, इस बात पर सभी को आश्चर्य हो रहा है ।

सुमंत—बीरह बय पुत्र जब प्रभु न इस प्राण से प्रस्थान किया जा तो इसी धारामगृह से । वही उन्होंने अपने बस्त्र त्याग कर बस्त्र धारण किए थे । वे बस्त्र उठाने के लिए तुम आए थे । तुम्हारी स्मरण शक्ति को मैं परखना चाहता हूँ बिजय ।

बिजय—कौसी कौसी ?

सुमंत—बीरह सात पहले इस धारामगृह की बीसी सजावट की बीसी ही आज प्रभु को दिखाई देनी चाहिए । इसीलिए मैंने कहा था कि यहाँ पैर पड़ते ही बीरह बर्ष मिट जाने चाहिए—

बिजय—सुमंत जी स्वयं ही एक बार देखें ।

सुमंत—यही तो मेरे लिए कठिन है ! जब पहिले सा नहीं सूझता इसीलिए तो हम पर यह काम सौंपा है ? ध्यान से देखो । कहीं जरा भी अन्तर न दिखाई पड़े । बाढें में ? (जाने लगाता है ठहर कर) और देखो बिजय और तुम भी कुचिका प्रभु राम और सीता देखी यहाँ घाते ही तुम दोनों यहाँ से जाने जाना—समझे ? उसके पहले न जाना । यहाँ घाते ही जो कुछ वे कहें उनके वे प्रथम उद्गार धाकर मुझे बताना—धावा समझ में ?

[जाता है । बिजय बीचोबीच खड़ा होकर एक बार धच्छे तरह से निरीक्षण करता है ।]

बिजय—जब बताओ कुचिका सब ठीकठाक हो गया न ?

कुचिका—यह मैं कैसे कह सकती हूँ ? उस समय मैं कहाँ थी यहाँ ?

बिजय—हाँ— यह भी ठीक है। बासंती कहाँ गई ? उसकी स्मरण
शक्ति की परीक्षा लेनी भी मुझे।

कुशिका—इस समय वह यहाँ नहीं। बरबर नीतादेवी के साथ
ध्याना सी घूम रही है। दैलती भी नहीं हमारी ओर।

बिजय—घोर मेरी घोर की कहाँ देखती है ? (देखते-देखते चौंक
कर एक पीठिका की ओर जाता है घोर उसके पासन की ओर देखकर)
वह बाग ! कैसा रह गया वह बाग ? यह धामन किसने बोया था ?
बासंती ! बासंती !—

कुशिका—वह क्यों इस समय यहाँ धामन लगी। धाएमी नामक
के साथ।

बिजय—मह बाग ! यह बाग रहने से तो फिर मैं बोयी कैसा ?
(बासंती घाती है ।) यह बाग ! बासंती यह धामन किसने बोया था ?
यह बाग यहाँ कैसे रह गया ?

बासंती—मैंने पूरा प्रयत्न किया पर वह बाग नहीं निकला।

बिजय—कड़नी हो पूरा प्रयत्न किया ! बार-बार क्यों न बोया ?
घण्टी तरह क्यों नहीं रबड़ा ?

बासंती—घोर अधिक रबड़नी तो छ न जाता धामन ?

बिजय—फट जाता ! पर बाग ना बसा जाता !

कुशिका—इमीलिए सायर कपड़े फड़ा करते हा तुम माय ?

बिजय—हाँ हाँ इमीलिए ! कपड़ा फट जाना स्वीकार है पर बाग
नहीं रहना चाहिए। बचना यह धामन। (धामन खींचकर निकालता है ।)

कुशिका—पर हमारा धामन भी तो एगा ही होना चाहिए न ?

बिजय—हाँ नब ! ऐसा ही होना चाहिए (बासंती से) है काई
ऐसा हमारा धामन ?

बासंती—यही तो उन समय का धामन है एगा ही घोर हमारा
धामन घसी नहीं मिलेगा ? धनक धाने का समय हो गया है—
(चौंकती तो) कैसे यह बाग बिमी को दिना न देगा—

विजय—पर मुझे दिखाई दिया !

कुसिका—बोबी की गबर बो है—धीर किसी का ध्यान नहीं आया—
देवता का भी नहीं !

विजय—ना ना यह ठीक नहीं !

बासती—मैं बताती हूँ एक उपाय !

विजय—नहीं नहीं यह वाच निष्प्रमता ही चाहिए !

बासती—दिखाई न वे तब तो हो गया ? इसके ऊपर एक कृष्णा
बिन जाने देती हूँ—

विजय—नहीं नहीं उससे भ्रतर दिखाई देया—

बासती—बिरहुच नहीं मुझे अच्छी तरह याद है कि जिस समय
प्रभु यहाँ बस्करन धारण कर रहे थे उस समय एक कृष्णाबिन यही रक्खा
हुआ था वह उनके जाते समय यहीं रह गया था । उसे लेकर मैं स्वयं
प्रभु के पीछे गई थी ।

विजय—तुम्हें अच्छी तरह याद है ?

बासती—मैं ही जो से गई थी । उनके जाने के पूर्व कृष्णाबिन
वहीं था ।

विजय—तो आपो और-एक कृष्णाबिन से आपो - भ्रष्टपट से आपो
उनके ध्यान का समय हो गया है ।

[बासती जाती है । कुसिका धीरे विजय फिर से घासन बिछाते हैं ।]

कुसिका—शाग बिनाने के लिए कृष्णाबिन का धारण बड़ा फलदा है !

विजय—क्या कहा ?

कुसिका—मैंने कहा कि कृष्णाबिन ऊपर बिछाने से शान नहीं
दिखाई देता । चिंता मुझे इतनी ही है कि कृष्णाबिन देखते ही कहीं प्रभु
के बस्करन धारण की याद न आ जाय !

विजय—(स्निग्धताकर) वाग ! वाग ! वाग ! रुँठे रह गया यह
वाग ? (बासती कृष्णाबिन लेकर जाती है ।) अब तुम ही रक्खो इसे
छा वह उस समय था ।

कृषिका—घण्टी याद रही तुम्हें बासंती । नहीं तो इस रात के कारण सारा काम बिगड़ जाता ।

विजय—रात के कारण बड़े अपघात हो रहे हैं इस संसार में । इसी-लिए कहता हूँ कपड़ा पट जाना बचना है पर बाग न रहना चाहिए—
[बासंती पीठिका पर कम्पाजिन बिछाती है ।]

कुशिका—यों टेढ़ा-तिरछा क्यों बिछा रही हो ?

बासंती—उम समय यह ऐसा ही पड़ा हुआ था । मुझे घण्टी तख्त याद है । (दो रुबम पीछे हटकर घण्टी तख्त से निरीक्षण करके) अब बिल्कुल ठीक है कोई भी न जान सकेगा ।

विजय—कितना ही प्रयत्न क्यों न करो यह बाग धाज नहीं तो कम दिखाई पड़ ही जायगा । और तब मैं कहीं का न रहूँगा । ठूँपे सगो घामर के घा गए ।

[सीता प्रवेश करती है । उसके धौर पर नज दिक तक बरी के कपड़े धौर सोने रत्न के धामूपाए हैं । मस्तक पर किरिड है । वह धन्दर घातो है धौर एकदम ठहरकर धोककर धारों धोर बैपती है । उसके धाते ही विजय बासंती धौर कुशिका एकदम पीछे हटकर कोने में हो सेते है तत्परवात् धामे बड़कर जधीन धर माधा टेंकर नमस्कार करते हैं । सीता ने 'जठो' कहते हो जठकर हाव जोड़े एक धोर जड़े हो जाते ह ।]

सीता—स्वप्न तो नहीं है । ये धानन उनका बिछाव ये ठकिये तब कुछ बेधा वा बेमा हो है । कुछ भी धन्दर नहीं हुआ ! क्या यह ऐसा ही रक्ता हुआ था ? इन धौरह धवीं में क्या किसी ने भी इस नामान को नहीं घुपा ? (विजय से) तुम कोन हो ?—तब विजय ही ही न तुम ? धौर यह बासंती तुम्हारी पत्नी—(वे दोनों नमस्कार करते हैं ।) धौर यह कोन है ? कोई नई जान पड़ती है ।

बासंती—जी नई ही है । धावही धामी बनने धाई है । (कुशिका नमस्कार करती है) देवी की धमर धाराधि हो ।

सीता—उब क्यों का ल्यों है—उभी यचारवान है—कहीं भी कोई धक्कर नहीं हुआ है। मारे प्रासाद में उलट-मुलट हो गई है—परए छा लब रहा ना मुझे—यहाँ भाई और बह साठ परामापन सुप्त हो गया। चौबह बर्ष जैसे एकदम कुप गए हों। (हलकर) पर तुम बरस गए हो बिजय। बेस बही है पर भेहरा बरस गया है। काफी प्रौड दिखाई दे रहे हो।

बिजय—मैं अब बूडा होने लगा हूँ बेबी।

सीता—नहीं नहीं बूडा नहीं प्रौड। तुम्हें बूडा नहीं तो बासंती कठ आयनी।

बासंती—मैं तो बूडी हो जमी हूँ बेबी।

सीता—न न तुम्हें बूडी कौन कहेगा? समबयस्क ही तो है हम दोनों—

बासंती—ऐसा नहीं कहते बेबी—

सीता—क्यों नहीं कहते? यह सच नहीं है? वो तर से अधिक बप हो गए, तुम और मैं इस समयोभ्या में घाई भी तर से फिटना परिवर्तन हुआ है इस समयोभ्या में।

बासंती—घब नम सबकी बर्षा न कीबिए बेबी।

सीता—सबमुच। अब उम सबकी बर्षा नहीं करनी है। इस प्रौडा बस्ना को घब हमें भूम जाना चाहिये। छोटे से भी छोटा बन जाना चाहिए। इमे भी—क्या बठामा इसका नाम कुशिका है न यह? हम भी मने जैसे हम सब समबयस्क हैं।

कुशिका—मुझे ऐसा ही लग रहा है बेबी।

सीता—अच्छा? यहाँ का जानसूचीपन घायर तुम अभी से सीस जयी।

कुशिका—नहीं बेबी सबमुच मझे ऐसा ही लग रहा है। मैंने सोचा था न जाने कितनी बड़ी होंगी हमारे मातकिन घब बिस्तुत निकट मे देना है—ऐसा जना—(बघ्यती है)।

सीता—कैसे मया ?

कसिका—ऐसा क्या — कैसे कहें !

सीता—ऐसा लगा कि राम की सोता तुमही ही नहीं लड़की है क्या ? — (बहु सकारात्मक स्तिर हिलती है ।) यह बात है ! बड़ी खुश मरी है यह कसिका क्या बातें ?—इस तरह मैं फूल न बड़ की कसिका समझी । मैंने बहुत कस देखा है ज्योप्या से लेकर सफा तक सब कुछ देखा है । ज्योप्या के घाघम की तुम्ह वैसे न छोटी छोटी बातें—कितना प्रेम करनी की सम्भार ।—ब तुम्ह वैसे सुझावरी न थी । मुझे लक्ष्मण प्रच्छो नहीं समझी समझी । मेरे सामने एसी बातें न बिया करो—

बिजय — यह घनी छाटी है । कोई भी न था यहाँ जब यह आई थी । यह सारा प्रबन्ध हा गया है । यह वह अपने घाप समझ जावगी ।

सीता—मैरिन यह तुम एक बूटे की मति कह रहे हो ।

बिजय—यह बूटा तो हा ही गया है देवी ।

सीता—ऐसा न कहो यह बहु रामराज्य है । यह यहाँ कोई भी बूट नहीं होमा ! (इधर उधर घूमकर) घाघ मुझे कितना घातक हा रहा है । लगना है जैसे घनी घनी आई है यहाँ मिथिला नगरी से गई बधु बन कर । कितना चाहत थे मुझे उस समय सब साम ? यह कैसे भूल पण है सब ? इस तरह बरत रहे हैं जैसे मैं बूटी हा बर्द हूँ । सब भूल जाईनी यह मैं ! एसा सब रहा है जैसे बालक से भी छाटी बन गई हूँ । भी चाहना है पहले गी नाचूँ मेभूँ हूँ बौड यों इन लहेनियों को मेबर— (बाजती घोर कुतिका बोनों को बोनों घोर से अपने बिरद बौबती है ।) —निरल मोनठी बूबती रहूँ !

बिजय—हूँ है देवी यह क्या ! दामियाँ हूँ मे ।

सीता—मैं भी बामी हूँ—रामराज्य के बरगुँ की दामी !

बिजय—ज्योप्या की लक्ष्मी है घात ।

सीता—लक्ष्मी हूँ रामराज्य में । यहाँ नहीं । यहाँ मुझे मनुष्य मा

रहने दो। गठ चौदह बयों में छोटे-बड़े का यह भेद मेरे मन में नहीं धाया था। तो अब क्यों भाए ?—तुम कुछ रहो बिजय। तुम्हें इनसे ईर्ष्या हो रही है क्यों ? यह सब कुछ नहीं मैं यहाँ इन्हें यों ही निकट लेकर खानू-खूनी !

[बासंती और कुसिका को लिए सीता जाती जाती उलझती-कूबती है तभी राम प्रवेश करते हैं। बिजय सबसे पेर पीछे हटता है और बासंती को इंसारा करता है। बासंती और कुसिका की वृष्टि राम पर पड़ती है। वे चौंकर सीता को छोड़कर एक ओर हट जाती हैं तभी सीता भी राम की ओर देखकर दूर हटती है।]

राम—यह क्या हो रहा था ?

सीता—यह आपकी माइजी सीता का बचपन था। देख बिबा न बँसा था बँसा ही बना हुआ है यह आराम यह बरा भी परिवर्तन नहीं हुआ है यहाँ।

राम—सच। बरा भी परिवर्तन नहीं हुआ है यहाँ—परिवर्तन इतना ही हुआ है कि हम प्रौढ़ हो गए हैं। तब हम पिता की छत्रछाया में छोटे थे। अब यह भास्यावस्था बीत गई, युवावस्था बीत गई प्रौढ़ावस्था की बढ़ती सीढ़ी पर हम लोग खड़े हैं यही समझ रहा था तब ! पर यहाँ पेर रलते ही सब कुछ भूल गया। तब तुम दास-दासियों के साथ बों ही उलझा हुआ करती थी और बड़े बूढ़े कहते थे कि तुम्हें अपनी मान-मर्यादा का विचार नहीं।

सीता—जब समय आपने ऐसी बात कही नहीं कही थी।

राम—मैं बँसा नहीं समझता था और इसीलिए अभी मेरा हृदय कूल जठ। चौदह सास एकदम मिट गए से प्रतीत हुए। किसने सजावा है यह आरामगृह ?

सीता—इत बिजय ने। क्यों बिजय ? (बिजय बचकार करता है।)
कितनी पचूक स्मरणशक्ति है इसकी। देखिए इधर देखिए, हम बगवाज के लिए जा रहे थे यही हमने बसकब बारण किया था और यह कृप्याभिन

यही पका रह गया था—घब याद था रहा है मुझे—कैसे याद रहा बी तुम्हें बिजय ?

बिजय—बहु याद इसकी—इन बासंती की है—(बासंती नमस्कार करती है ।) मरी नहीं ।

राम—देख सो कितना सहाय्यी है बिजय ! उसका धनिक भी भ्रम यह नहीं घीनना चाहता ।

बिजय—रामराज्य है यह । यहाँ किसी के साथ धम्याय नहीं होना चाहिए ।

राम—सुन ना देवी !

सीता—सुन रही हूँ—धीरे देख भी रही हूँ । यही परिवर्तन इस राज्य में हुआ है । नये राज्य की नयी आशक्ति पैदा हुई है सब में ।

राम—पर तुम्हीं को उसका बिस्मरण हो गया है । यदि अभी कोई नहीं जाना है तो तुम । इन बासियाँ को लेकर नाच दूर रही थी । उनी हो तब इन सयोप्या की ।

सीता—यँ भी इन चरणों को ही बामी हूँ ।

बिजय—(एकदम धागे बड़कर हाँस जोड़ते हुए) गणों को धाजा मिले । [बिजय बासंती धीरे कुप्रिका भूमि पर जस्तक टेंककर नमस्कार करके उन्हें कहनों से पीछे हटते हुए चले जाने लें ।]

सीता—देतिये के मन्मथ गण ! ये ऐनी बावली हो गई थी—घबने बात ना भुन गई थी—घल घाए राम की जगह रामाराम मुझे दिगार्ई पड़े । बौक नडा मन ही मन । सुनी हुई प्रीड़ावस्था एतदम याद था बर्न—यही के भी मन्मथ गण । कस भी हा पर बड़े बड़े मन्मथार जाने हैं इसी निग के चल निग ।

राम—धीरे इस क्या मुषा है ?

सीता—चीन कहता है कि घन मुदर नहीं है ? प्रीड़ावस्था की याद दिगान के निग धिनु बहाँ रेंग रहे हैं एन चर में ? बार घाई है घल मोय पर लक भी रेंगना हुआ धिनु बहाँ दिगार्ई नहीं देता । घल क्यों

कर समझें कि आप ग्रीक हैं ?

राम—(हुँसकर उसके लज्जकी ओर देखते हुए) और फिर सती बनसूया के अंगराग के कारण तुम्हारा घटस यौवन—

सीता—किसी भी सती के अंगराग के प्रतिरिक्त अखंड यौवन से कुछ बिराजमान होने वाले मेरे राम—(राम के दोनों हाथ पकड़ कर) ऐसा सनटा है, बटाई ? नाराज तो न होये ?

राम—कहो न !

सीता—ऐसा सनटा है मानो सिधिका से हम लोग पहली बार ही यहाँ आए हों। प्रथम मेट के उत्साह से मेरा हृदय फूल उठे था। सारा अश्रुमात्र भुन कर किस प्रकार अठसोखियाँ करते थे हम लोग तब ? उस समय भी ऐसा ही बेच बरसा था। तब विस्वामित्र के यहाँ का उपस्वी बेच बरस कर आपने ऐसे ही राज्याभूषण धारण किए थे। अब वह वन वासी बेच बरस कर हम लोग राजा रानी बन गए हैं ! (अनकी ओर देखकर) क्या हम इस अकल्पित को भुला नहीं सकते ? यहाँ कोई भी नहीं है। घाएँ कस्र बेर पहले की माँठि घठसलियाँ कर में हम लोग !

राम—यह कह क्या रही हो बेबी ?

सीता—नेही स्वामी आज इतने बरों से 'सीता सीता' कह कर कानाफूनी करने वाले राम के मुँह से 'बेबी' सम्बोधन सोमा नहीं देता !

राम—तो क्या कहूँ ?

सीता—अब तक क्या कहा करते थे ?

राम—वह सम्बोधन बनवासी राम का था।

सीता—और उसका पुन बारह बर्य ?

राम—वह अयोध्या का सुवरज था। पिता की अज्ञानता में राजा पन से अगमिज बरारज का पुन राम—सीता का पति राम—

सीता—और अब जो बोल रहे हैं वे अयोध्या के सम्राट् हैं बरों ? अयोध्या के सुवरज के राम कितने यादुक थे ! बनवासी राम इस सीता का सर्वस्व थे अगमिज थे। बनवास का वह राजराज्य सीता और राम का राज्य था।

राम—धीर बहू राम का राज्य है यही न तुम्हारे कहने का धर्मिप्राय है ? तुम इस राम राज्य की सम्भाली हो । (सीता चुप रहती है ।) क्यों बाततो क्यों नहीं ?

सीता—न जाने क्या हो गया । आपके यह उद्गार सुनकर धर्मोपभवा सा सया । बहू राजसिंहासन राजबैसन का बहू सुवर्ण छत्र देव परदेस के राजार्थों का महामन्त्रक होना अपि मनिमों ने भी हुई प्राचीन पुरजनों के वे स्नेहाभियन ! (जरा ठहर कर)—धीर उह समय का बहू बनवास—मोटा बनवास—(सीता कृष्णाभिन पर बैठ जाती है । राम उसके पास घातन पर बैठते हैं । सीता उस कृष्णाभिन पर हाथ कर रही है) रामाच हो घाना है इस कृष्णाभिन पर हाथ फेरते हुए, इस मृगधर्म की पैर्या पर ही तो हमन सारा बनवास बिठायो था । यही हमारा घासन था यही हमारे घरीनो की घाम था यही हमारी घम्मा था धीर इन्हीं मुषों ने ता घामी जान रोकर—अपन घरीर का भोजन देकर हमें उस बनवास में जोबित रक्खा था !

राम—धीर क्या ऐसे ही मृग धर्म के सोभ के कारण हम नहीं बिपुडे थे ?

सीता—बहू मुषधर्म मृग था । उस मधर्म के सोभ के कारण भी बडि घट हो गई थी । धीर मृगधर्म के साम के कारण हम नहीं बिपुडे थे !—बिपुडे थे मुषधर्म के साम के कारण ! मुषधर्म की कबुकी पहले था सोभ मुष बनवास में हुआ इनीमिए इस सोभ बिपुडे नए । केवल मुषधर्म मुष क धर्म की ही नहीं लेकिन जिन समय मधे सोने के घामी की कबुकी पहनकर मैं उन मुषधर्म सिंहासन पर बैठी जिस समय मुषधर्म का छत्र इन बस्तक पर अयजगाने सया मुषधर्म क चामर मुनहरी हरा करने लगे मधर्म के बंड हाथ में लिए वैनातिक मगहृय कुणवान करने लगे उमी लमव मुझे उस मधर्म मृग की पार घा गई । राग्याभिनक के आनंद में पीबाबित होने के बजाय बर सवस्त गरीर पर रोने लड़े हो गए । (एक निश्वास छोड़कर अगधर्म बर हाथ फेरती है) बिठना

सुन्दर है यह मूत्रचर्म । कितना मोहक । कितना मधुर ! कितना स्निग्ध
है यह स्पर्श ! घ्रासन के पासपास खड़ा करने वाले उन मूत्र-घ्रासकों की
कितनी याद आती है मुझे !—

राम—बड़े आश्चर्य की बात है ! यह बीमर तुम्हें नहीं सुहाता ?

सीता—नहीं भी नहीं । मुझे इस बीमर से बुरा है । इस सुनहरे
बीमर से मुझे उस सुवर्ण मृग की याद आ आती है और तब भी व्याकल
होने लगता है । इसी तरह उस राक्षस का बीमर था । जान बूझकर उसने
मेरे सामने अपने बीमर का प्रदर्शन किया और इसीलिए मैं उस अशोक
वन में रही—केवल बूझों की छाया में आकाश के नील-मण्डप के नीचे—
स्वच्छ पवन मेरे ऊपर बँबर बूलाया करता था । पासपास के राक्षसियाँ
न होतीं तो सबता जीने में बनस्वाम के घ्रासन में ही रह रही हूँ । कैसे
बिताए वे मयंकर स महीने ? बीमर की वैशाधिक वायु चारों ओर चल
रही थी इसीलिए अपने घम कुराए बैठी थी उस अशोक की छाया में !—
बीमर ! राक्ष विनास ! रोपटे सड़े हो जाते हैं !

राम—याद तुम्हें हा क्या क्या है सीता ? छो मोचनों के पीछे
बिछाकर राक्षस सहित संका का जो विध्वंस किया गया वह क्या फिर
से बनवास सेने के लिए ? और वर्ष पूर्व यह राज्याभिषेक होना था ।
घमोन्धा की बनता चातक की भाँति जिस अक्ष की बात जोह रही थी
वह राज्याभिषेक हो गया स्वास्थ्य प्राप्त हुआ समृद्धि मिली तिष्कटक
भूमि का राज्य प्राप्त हुआ और तुम बहती हो—

सीता—छरिए, मैं कुछ भी नहीं कहती । मैं अपने घाम से ही बातें
कर रही थी । इस मूत्रचर्मने पुरानी याद जगा दी । बनवास की वे बातें
याद आ गईं । घाप मूक्या किया करते थे और मैं उस शिकार को रोक
कर परोसा करती थी । किसी भी बात की चिन्ता न थी । प्रतिदिन वे
अपि मुनि ! एक ही काम का एक बूँदरे के परस्पर सहवास में स्वर्ण
सुख के धारण का अनुभव करना । सब बड़े राज्य मिल गया है पर सुख
समाधान से क्षण भर घ्रास में बात करना भी कठिन हो गया है ।

हुमैला राजसभाएँ, हुमैला परिवारें प्राबंताएँ, म्मङ्ग निपटाना म्बाब करना बिफ्ट बीठी प्यारी पत्नी की बाह भूम कर छठार के भुमैलो में समय बिताना !

राम—‘हममें ब्रह्मा मी हमी ह्वम को बाह नहीं पा सकता’ वह बिल किसी ने कहा है झूठ नहीं है। हाँ वह ठीक है कि राजकाय में मुझे उलम्बा रहना पड़ता है, यद्यपि मर तुम से बुर रहना पड़ता है—

सीता—यद्यपि मर क्यों ? तारा बिल !

राम—हाँ तारा बिल ! तो क्या इतने बड़े राज्य की प्रजा का अनुरजन नहीं करना चाहिए ? इन अनुरजन के कारण ही न प्रजा मुझ पर प्रसन्न है ? मैं उसके काम के लिए तरार रहना हूँ इसीलिए न प्रजा बहूठी है कि रामराज्य का क्या है ? तुम्हें अभिमान होना चाहिए इनका ।

सीता—इनका मुझे आभमान है पर अभिमान समाधान नहीं ! साधे तैरह साल हम लीम एक बुरे की जग भी नहीं भूलने से । फिर वह बियोग बाल घाया—

राम—कितना बिफ्ट था वह बियोग-बाल ! ‘सीता सीता ! पुकारना बख-बागालों का धामिनन करता मैं उस समय बनों में मारा माग घब रहा था । लखन भी मरी मात्बना नहीं कर पा रहा था । वह बिचारा भी मुझ या ही पायल हो उठा था । हनुमान से भेंट हुई घसने तुम्हारा पता लगाया तब जाकर नहीं मैं मनुष्यों में लीग घौर घब ह्वप महीं है । बियोग का बन्नाम भी बिट गई !

सीता—क्या सधमुच बियाय की बलना मिग गई ?

राम—यह बात तुम पूछ रही हो सीता ?

सीता—उ-माह मुझे ६ मुगों से लवे से राजग मारा क्या मे मुक्त हुई हनुमान मुझे बरने साथ निबा लाए तब घाबने बिलनी बठार बाने नहीं था—

सीता—मैंने अग्नि परीक्षा भी जसती हुई प्राण की कसीटी पर खरी उतरी। मुझ तथा जैसे वियोग अब समाप्त हो गया है। धामन का वह धानम्ब फिर से मिलेगा तथा वा कि छ माह की मृत्यु में से मजजीवन का उदय होगा—(खुप रहती है।)

राम—जो क्या वह नहीं हुआ ?

सीता—क्या आप समझते हैं कि उस धामन का धानम्ब फिर से प्राप्त हुआ है ? (राम खुप रहते ह।) देख सीजिये आपके मुह से 'हाँ' नहीं निकलता। बीछा अब हुआ ही नहीं तो हों कोई कैसे कहे ? फिर भी वह प्रत्यक्ष वियोग था। वहाँ हम साथ-साथ खड़े हुए भी एक दूसरे से दूर है। (खिल्ल मुझ में बैठ हुए राम के चेहरे की घोर लाल मर के लिए दक लयाए बैसती है।) मैं जो कह रही हूँ ठीक है न ?

राम—कैसे कहें कि ठीक नहीं है। पर परिस्थिति बदल गई है। उस समय हम केवल राम सीता ने अब मैं अयोध्या का राजा हूँ और तुम उस राजा की राणी हो। अब वह एक व्यक्ति का संसार नहीं है। इस विस्तृत संसार का भार अब अपने ऊपर है। अपने समाधान की प्रपेक्षा हमें अब सोकाराबना को महत्व देना चाहिये। मेरी प्रजा के समाधान में ही हम सोमो के समाधान का अट्टहास समाप्त होकर अब समष्टि के समाधान का प्रारम्भ हुआ है वह बात तुम कैसे सुन जाती हो ?

सीता—एक राम को छोड़कर मुझे और किसी की भी पाह नहीं। राम के जीवन में ही सीता का बह सुष्ठ हो गया है। इसीलिए वो सारे सोम सीता राम का बचकमकार कर रहे हैं।

राम—कर रहे हैं न ? सीता के पहं का सोप राम में हो गया है न ? फिर तुम ऐसा क्यों सोचती हो ? राम का कर्तव्य ही तुम्हारा कर्तव्य है, राम का राज्य ही तुम्हारा राज्य राम की प्रजा ही तुम्हारी प्रजा और राम की सोकाराबना ही तुम्हारा जीवन है।

सीता—कितना कठोर सत्य है ! मुझे बैसता है—बुद्धि को बैसता है पर भावना भीत्कार उठती है। बनबास के धानम्ब की याद घाटे

ही लगता है कि फिर से बेसा ही बनवास निम जाए तो—

राम—कैसी प्रभुम बात कह रही हो ! देखा या न समने कि अपने बनवास के कारण क्या कितनी दुखित हुई थी ? वही दुख उसे फिर से प्राप्य हो यह कहने की निरपेक्षा तुम्हारे मन में कैसे उत्पन्न हुई ?

सीता—(तर्कांक होकर) क्या यह स्वार्थ की भावना है ?

राम—हाँ यह धार्मिकिच्छा का मसल है ! महान् आत्माओं को यह मसलण बीमा नहीं देना ।

सीता—मझे रामा कीजिये । निजी ध्यान के कारण के कारण बाहरी ससार का मूक धण भर क मित विस्मरण हा क्या । धन्तरदृष्टि से देखते ही मैं अपनी भूम जान गई—(राम के दोनों हाथ पकड़ कर व्याकुल भङ्ग से उनके मथ की घोर देखते हुए) फिर भी जी चाहता है वह बनवास पुन मिले !

[कनिष्ठा धन्तर आकर नमस्कार करके लड़ो हो जाती है ।]

सीता—(राम से दूर होकर) क्या है कनिष्ठा ?

कनिष्ठा—ममागृह में राजगुरु प्रनु रामचन्द्रजी की प्रतीणा कर रहे हैं ।

राम—राजगुरु की धामा विरोधाप है ! यही टहरो सीता—

सीता—दैन्य सीशिन मुझे घड़ी भर के निग भी धावका महवास नहीं मिलना—

राम—धमी धामा ।

[जाता है । कनिष्ठा भी जाती । सीता विषम्ल मन से पाती है ।

कनिष्ठा फिर से आकर सीता को नमस्कार करके लड़ो रहती है ।]

कनिष्ठा—उमिया देवी धापके विनमं धा लपती है ?

सीता—वह क्या है ?

कनिष्ठा—बाहुर—(दरवाजे के पास आकर) धारए देवी ।

[कनिष्ठा धन्तर जाती है । कनिष्ठा जाती है । सीता धावे धातो है । दोनों खोर से पने बिलती है ।]

उमिया—रामने विन हा गण कर धाण भर हैकर अभी तट हन

मिस भी न सकी। साथ तुमको इकर भापा देखकर चम्बर भा ही रखी थी कि श्रीराम को घाते देखकर सौट गई। अन्ध्रा हुषा का घब के पत्ते गए। बहिनें बहिनें हम—जैठानी वेबरानी का रिश्ता क्यों माने—

सीता—हम सब बहिनें बहिनें एक घर में रहती हैं पर मिलना भी कठिन हो गया है। जीवह सानों का विमोग—

उर्मिला—फिर भी तुम साथ गयी थी—

सीता—हाँ मैं साथ गई थी। बनबास की आज्ञा उनको हुई थी—उनको धकेले को। सद्भाग्य साथ हो लिये—

उर्मिला—पर मुझको कोई साथ न से गया।

सीता—क्यों न आई तुम साथ ? तुम आई होती तो एक दूसरे के सहवास में हम दोनों का समय कितने आनन्द से व्यतीत होता।

उर्मिला—मे साथ नहीं आई। कैसे घाटी में साथ ? बाड़े समय तक मुझे पता भी न थापा था। किये थी मेरी माय ? एक घोर ही ध्यान गया हुआ था—जहाँ राम वहाँ सम्भरण। बैचारी उर्मिला को कौन पूछता है ? न तब पूछा घोर न आज भी।

सीता—आज भी नहीं ?

उर्मिला—जीवह क्यों के विमोग के कारण मेरी माय भूल गए हैं। उन्हें ध्यान भी न रहा कि उर्मिला नाम की उनकी एक पत्नी भी है। इस वृत्तमिश्र के समय में उनके लिए पराई सी हो गई हैं। क्या स्त्री का हृदय पुरप ठीक से समझ ही नहीं पाता सीता ?

सीता—तुम्हारा कहना ठीक है। बनबास में उन्होंने एकनिष्ठा से हमारी रखा थी। उनका समय मेरे राम के समाधान पर ही गया हुआ था। मुझे जानते थी न बे बे। मेरा अस्तित्व उनके ध्यान में भी न था। स्त्री पुण्य की अर्थाङ्गिनी होती है और वह अर्थाङ्ग पुण्य से विन्न होता है हम बात से बे अवगत ही न थे।

उर्मिला—रावण द्वारा तुम्हारे पकड़े जाने के बाद भी ?—

सीता—यह मैं कैसे कह सकती हूँ ? तब मैं कहाँ थी वहाँ ? रावण

का नाप हुआ बिभीषण को राज्य मिला मुझ छुड़ाया गया—मुझे धर्म परीक्षा देनी पड़ी यह तो जानती हो न तुम ?

उर्मिला—तुम्हें धर्म परीक्षा देनी पड़ी ? किसलिए ?

सोता—स. महीने रावण की बंदिनी थी मैं—

उर्मिला—इसलिए धर्म परीक्षा देनी पड़ी ? (तीता सकाररमक गहन हिजाती है ।) इसलिए तुम पर संदेह बिबा क्या ? तुम्हारे निष्कलक बरिब के बारे में संदेह करने वाला कीन का वह पापी ?

सोता—(उसके मू ह पर हाप रकती हुई) ऐसा न कहो उर्मिला बड़ी मायबालू हो बी उस समय तुम उपस्थित न थी । घसस्य बालरों के सामने—किमी समय के बन्धु पर तब धर्म बने हुए राक्षसों के सामने—उन लारी परभीयों के सामने उस समय राम ने जो कहा का वह तुम मुनवीं तो तुम्हारा हृदय टुक-टुक हा जाता । (कल भर बप रहती ह ।)—इसलिए धर्म परीक्षा देनी पड़ी मुझे ।

उर्मिला—राजबन्धु भी का इतना उदार हृदय उस समय इतना कठोर कैसे हो गया ?

सोता—जाकागपना के लिए ! क्या के मरा मन नहीं जानने के ? मेरा स्वभाव नहा जानने के ? मेरी निष्ठा न क्या के अपरिचित के ? फिर भी उन्होंने मुझ धर्म परीक्षा देने के लिए कहा ! नीति का मोम बना बिफट होगा है । समाज को नीति मिगाने का जिन पर बाबिब हाता है उम गैना ही कठोर बकता पन्ना है—निष्कलक रहना पटना है ।

उर्मिला—बिग ? स्त्री का या पुण्य का ?

सोता—रानों को ! इसीलिए उन्होंने मुझसे कहा धीर मैंने धर्म परीक्षा दी ।

उर्मिला—बापों के लिए ? धरने लिए नहीं ? मर्य के लिए नहीं ? सोराजवाद के दर से—मर्य से पुनर्जन्म अपरिचित माधारण्य बनना से लिए ! नीना मेरी बन्धुबिड को यह बात नहा बंजरनी । बीरद नाप के से यह पन्ना मोग रही है । निष्कलक जीवन की जमनी हूँ गाई मैं

मेरा मन बराबर बल रहा था। बराबर एक का ही चिंतन कर रही थी। पर उस एक को मेरी याद भी न थी। धाज में पारखी बन गई हूँ। अपने उस उच्चमांस से। जिस लोकारोपना के लिए तुमने इतनी भयंकर परीक्षा ही क्या जन लोगों ने कभी तुम्हे भी याद किया? वह महीने तुम राबख की कारा में थीं इसलिए तुम पर संवेह किया गया। चौबह छान से मैं भी इस भयोप्या की कारा में हूँ फिर क्यों किसी ने मुझ पर संवेह नहीं किया? क्यों नहीं मुझे भगिन परीक्षा देनी पड़ी। तुम्ही को क्यों भगिन परीक्षा देनी पड़ी?

[अण भर बोलों बप रहती हूँ।]

सीता—रहने दो वे बातें। लोकारोपना का बाविल्व बिच पर होता है उसके सिवा और कोई भी इन बातों को नहीं समझ सकता।

उर्मिला—क्या तुम समझती हो?

सीता—मुझ पर लोकारोपना का बाविल्व कहाँ है?

उर्मिला—तुम इस भयोप्या के साम्राज्य की साम्राज्ञी हो।

सीता—हाँ—मैं रानी हूँ—राजा नहीं।

उर्मिला—हाँ, तुम रानी हो—पुरुष नहीं। पीरुव होता है पुरुष के लिए। चौबह वर्षों को मैं संन्यासिनी ही रही हूँ वह किस वृत्ति के बस पर? वह क्या मेरा पीरुव नहीं था? वेह के मेवमाव से वृत्ति का भेद छूराया जाय?

सीता—वह तुम्हें कैसे सूझ?

उर्मिला—चौबह छान में कर क्या रही थी? तुम बनबाध में थीं तुम्हें घर न था पास बैसब न था फिर भी तुम पठि के छाप थीं। पठि के प्रेम का छत्र तुम्हारे मस्तक पर बसक रहा था। मैं घर में थी—बैसब में थी कहीं तो भी अनुचित न होगा—फिर भी मैं बनबाध की निराधार थी। उस एककी जीवन में मुझे सोचने के लिए बाध्य किया। उस सोचने से जो मैंने समझ वह यह कि विवाहा की सृष्टि का रनी रनी है और पुरुष पुरुष।

सीता—ऐसी बातें न करो जर्मिला ! बहुत पबरा उठ है परा नन । धर पाया हुआ बँकन भी बनवास की यात्र से कुछ है उठ है । परे हृदय में सुलमी हुई इस घाम को और अधिक प्रकटवर्तित न करा । हम कहिनें इतने सालों के विनोम क परचाठ निभो है । पर भोटकर भी प्रत्यय मिलने में इतनी देर हो गई । अब तुम निसी हा क्युना घानक्य हुआ है मझे ! इतने सालों का प्रीकरण मिट गया सा सगता था क्यों उसकी मुझे याद दिसा रही हो ?

जर्मिला—बीरह साल में में बूढ हो गई है सीता ! बुझाया जा गया है मुझ पर, मीजन की ती छाड़ो पर बास्यावस्था की यात्र भी पुरुक्त मिट गई है । वह मुझे कैसे मिलेगा ।

सीता—मेरे कारण ! मेरी भेंट के कारण ! मेरी इस भेंट में ही सारा बीजन—सारी बास्यावस्था मथित है । मेरी इस भेंट से ही मुर भया हुआ अँदुर अब बुचाप हरा होया ।

जर्मिला—(बिगमता से हँसकर) इमीनिए तो मैं भापती तुमन मिलन पार !

सीता—घाई न ? तो फिर अब कुछ न कहा । पिछरीं बातें मुला हो । बीरह वर्ष कपी रात्र अब बीठ बुरी है मरिव्य का उदय हो रहा है । उस उदय की धार देखने हुए घामा हम नये संसार में फिर से जगम में । इस पुरावर्ग का घालग्य मैंने देखा है । उय घने पदीधा के कारण मुझे पुनर्जगम का सीमाम्य प्राप्त हुआ—

जर्मिला—वह सीमाम्य मुझ प्राप्त नहीं हुआ—

सीता—महीं—ये बातें ही न करो पर । हम कुछ और बातें करें ।

जर्मिला—तुम बातें करेंगे कहने से भी क्या कमी बातें करन की खूनि घाती है ? बीरह
 विनवारी को कैसे बुझा
 यारी फिर से ५

होकर दोनों पर सरसरी नजर डेर कर सिर झुका भेत हूँ घोर किसी की घोर न देखते हुए हाथ जोड़ कर खड़े-खड़े कहते हूँ ।]

लक्ष्मण—सीतादेवी के लिए रामचन्द्रजी का सवेसा है—गुस्सेन की धाका से मैं महत्वपूर्ण कार्य में उलझा हुआ हूँ । मेरे लौटने तक सीतादेवी मेरी प्रतीक्षा करें ।

सीता—(मुस्कराती हुई) इधर देखिये लक्ष्मण यहाँ कौन खड़ी है ?

लक्ष्मण—यह मैं कैसे बतलाऊँ ? मैं सब पहचानता हूँ । सीता देवी बोल रही है । दूसरी सब बोल नहीं रही है तो मैं कैसे कह सकता हूँ कि वह कौन है ?

सीता—यह याद है मझे । बनबास में मुझे आप सब से ही पहचानते थे—

लक्ष्मण—जब सुपौत्र न भ्रामुपण बिलाए थे तब मेने पायस पहचाने थे । चरण बंधना के समय में उन्हें देखता जो था ।

सीता—हाँ मेने यह सुना था ! (जमिना से) बोल न री तेरा सब इन्हें एकबार सुन तो लैने थे ।

जमिना—क्या बोसू ? बोसने के लिए मेरे पास सब है ही क्या ?

लक्ष्मण—इस सब से मैं परिचित नहीं हूँ ।

सीता—(जमिना से) अयोध्या की सीतल के परचाटू क्या तुने इनसे कमी बात मही की ?

जमिना—कब करतो ? रामचन्द्रजी की छाया में अखण्ड रहनेवाले व्यक्ति से मेरी भेंट कब होती ?

सीता—(लक्ष्मण से) वह सब है देबर भी ? अब भी पहले की ही भाँति सारी रात जाग हमारे दरवाजे पर खड़े रहते हैं ?

लक्ष्मण—मेरे नियाम में धातक कमी अन्तर महीभवदा है ।

सीता—अब भी अयोध्या में जाने के परचाटू भी ?

लक्ष्मण—जी रामचन्द्र जी की एकनिष्ठ सेवा को छोड़कर भी नहीं सकता यह सभण ।

सीता—जनी बातें न करो उनिपा ! बहुत पहर उग है मर मर ।
 सब पाया हुआ बीमर भी बनवान की मार न हुआ है हा उग है । मेरे
 हृदय में चुनरी हुई इस घाग का और अधिक प्रकटन न करे । इन
 कहने जने साधों के विनाग क परवान किया है । बर मोटकर भी
 प्रकट मिनन में चुनरी कर हो गई । सब मृम निर्भी हा कितना घनम
 हुआ है मर । जने साधों का प्रीकरण विट मर मर मर मर मर, जनी
 उमरी मने पार दिया रही हा ?

उनिपा—बीरु मर में मैं बूढ़ हा मर हूँ मीना ! बुझा हा मर
 है मर पर, बीरु की हा हाहा पर बाप्यामर का मर भी चुनरी विट
 गई है । बर मर मर मर मर ।

सीता—मर मर ! मरी मर क मर ! मरी मर मर में ही
 मर बीरु—मरी बाप्यामर मरिण है । मरी मर मर मर हा मर
 मर हा मर मर मर मर मर हा हा ।

उनिपा—(विमता में हँसकर) उनिपा मर मर मर मर मर
 मर मर !

सीता—मर ? मरी मर मर मर मर । विमता मर मर
 हा । बीरु मर मरी मर मर मरी है मरिण का मर हो रहा
 है । उम मर की मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर
 में । इन मर मर का मर मर मर मर है । उम मरी मरी मर के मर
 मर मर मर का मरी मर मर मर मर—

उनिपा—मर मरी मर मर मर मरी मर—

सीता—मर—मर मर हा न करो मर । इन मर मरी मर मर ।

उनिपा—मर मर मर मर मर मर मर मरी मर मर मर मरी
 मरी मरी है ? बीरु मर म मर मर मर मर मर मर मर मर मर
 मर मर मरी मर मर मर ? मरी मर मर मर मर मर मर मर मर
 मरी मर मर मर मरी है—

[मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर]

होकर दोनों पर सरसरी नजर फेर कर सिर झुका भेतें हैं और किसी की धोर न देखते हुए हाथ जोड़ कर कड़े-कड़े झूठे हैं ।]

लक्ष्मण—सीतादेवी के लिए रामचन्द्रजी का संवेष्टा है—'गुप्तेव की धात्रा से ये महत्त्वपूर्ण कार्य में उत्तम हूँ । मेरे लौटने तक सीतादेवी मेरी प्रतीक्षा करें ।

सीता—(मुस्कराती हुई) इधर देखिये लक्ष्मण यहाँ कौन खड़ी है ?

लक्ष्मण—यह मैं कैसे बतसाऊँ ? मैं खल्ल पहचानता हूँ । सीता देवी बोल रही हैं । बूझती जब बोल नहीं रही है तो मैं कैसे कह सकता हूँ कि यह कौन है ?

सीता—यह याद है मुझे । बनबास में मुझे आप खल्ल से ही पहचानते थे—

लक्ष्मण—जब सुघोष ने धामूपण दिखाए थे तब मैंन पामस पहचाने थे । चरण बंदना के समय मैं उन्हें बसता था था ।

सीता—हाँ मेने यह सुना था । (उमिलता है) बोल न री तरा खल्ल इन्हें एवबार सुन ती मेन रे ।

उमिलता—क्या बोधु ? बोलने के लिए मेरे पास शब्द हैं ही क्या ?

लक्ष्मण—इस खल्ल से मैं परिचित नहीं हूँ ।

सीता—(उमिलता से) अयोध्या का लौटने के पश्चात् क्या तुने इनसे कभी बात नहीं की ?

उमिलता—कब करती ? रामचन्द्रजी की छाया में अक्षय रहनेवाले व्यक्ति से मेरी भेंट कब होती ?

सीता—(लक्ष्मण से) यह खल्ल है देबर भी ? अब भी पहले की ही भाँति सारी रात आप हमारे दरवाजे पर खड़े रहते हैं ?

लक्ष्मण—मेरे नियम में धात्रतक कभी अन्तर नहीं पड़ा है ।

सीता—अब भी अयोध्या में आज के पश्चात् भी ?

लक्ष्मण—जी रामचन्द्र जी की एकनिष्ठ सेवा का आह्वान जी नहीं सकता यह सत्य है ।

सीता—एकनिष्ठ सेवा के कारण घापका सब समय बीतने लगे तो घापकी यह पत्नी क्या करे ? पति के नाते भी घापका कुछ कर्तव्य है क्या यह किसी ने भी नहीं बतलाया घापको ?

लक्ष्मण—राम की सेवा के प्रतिरिक्त मैं और कोई भी कर्तव्य नहीं जानता ।

सीता—बनबास में उस सेवा की आवश्यकता थी । हम दोनों की रक्षा का भार आपने स्वेच्छा से स्वीकारा था । यह बनबास जब समाप्त हो गया रामराज्य हुआ अयोध्या की प्रचंड सेना हमारी रक्षा के लिए दिन रात प्रस्तुत है, फिर भी हमारे द्वार पर अब घाप खड़ा पहरा क्योंकर बैठे है ? क्या रामचन्द्रजी यह नहीं जानते ? क्या उन्होंने घापको मना नहीं किया ?

लक्ष्मण—वे कैसे जानते ? और जानते ही नहीं तो मना कैसे करते ?

सीता—हम दोनों एक हैं न ? मैं कहती हूँ मेरी आज्ञा है घाब से यह खड़ा पहरा समाप्त कीजिए—और आपना भी कोई पति है यह बात एक बार उमिला को जान लेने दीजिए (लक्ष्मण परेघाम हो उठता है ।) यह क्या देवर जी मेरे कहने पर भी घापको बात नहीं बँधती ?

लक्ष्मण—इतने सारों का अग्र्याग अक्षमाठ कैसे छुट सकता है ?

सीता—बो त्यों से भी अधिक बय हो गए । हमारे विवाह हुए थे । हम सब समबयस्क ही तो थे । उबका भी घापको स्मरण है या नहीं ?

लक्ष्मण—जी भु बजा सा स्मरण है । बो त्यों से भी अधिक काब ध्यतीत होने के कारण यह स्मृति हूँने हुए भी न होने के समान हो गई है ।

सीता—(उमिला को छिने से बिपदाकर) इधर देखिये देवर जी हम बहिर्ने हैं । रामचन्द्रजी के सहवास में मैं स्वर्ग के आनन्द का अनुभव कर रही हूँ और मेरी सब बहन को अपने पति का परिचय भी न प्राप्त हो ? यह देखकर क्या मुझे कुछ न होना ? (लक्ष्मण चुप रहते हैं ।) हमारे मुँह को ही अपना आनन्द समझकर आपने घाबतक हमारी रक्षा की पर क्या मेरे इत नुब का घाप बिचारण नहीं करेंगे ? इधर देखिए,

इस उमिदा की धोर बैलिये । अपनी इस पत्नी की धोर बैलिये कैसी मुरम्भ गई है । क्यों इस प्रकार उमेसा करते हैं ?

लक्ष्मण—(एकबार उमिता की धोर बैलिये फिर बुझि करते हुए) मैं सब कुछ भुल गया हूँ । एक राम के अतिरिक्त मुझे इस संसार में धोर कुछ भी दिखाई नहीं देता ।

उमिता—सुन मिया ? हो गया विश्वास ? क्यों नाहक अपना अमृत्यु शब्द यँबाठी हो ?

सीता—(लक्ष्मण से) आपने देखा था न कि रामचन्द्रजी के सहवास में मैं कितनी आनन्दित थी—उमके सहवास में मेरे लिये बलबाध भी कितना सुखकर हो गया था ?

लक्ष्मण—मैं पर्वकुटी के बाहर रहता था ।

सीता—हम एक दूसरे के साथ रहते थे अथ भर के लिये भी एक दूसरे को नहीं छोड़ते थे इतना तो देखा ही था न आपने ?

लक्ष्मण—जी ।

सीता—तो फिर कैसे ही आप दोनों भी रहिये ।

लक्ष्मण—(परेसाल होकर) उमर रामचन्द्रजी मेरी प्रतीक्षा कर रहे हैं । कितना समय बिता दिया मैंने यहाँ !

[एकदम चले जाते हैं । उमिता सीता के चले से लिपट कर रोने लगती है ।]

सीता—(उमके मस्तक पर हाथ खेरते हुए) कुप हा जाओ । कुप हो जाओ ।

उमिता—मैं रोऊँ भी नहीं ? घाम इतने सानों से अक्षय विषय का दुःख हृदय में छिपित कर रक्खा था उसे पहीजने भी न हूँ ? क्या करें सीता क्या करूँ ? किस प्रकार दिन रात ये द्वार पर पहुँचा बैठे हैं उधी तरह इनके साथ मैं भी तुम्हारे द्वार पर पहुँचा दिया करूँ । क्या सहवास का इतना सुख भी मुझे मिलेगा ?

सीता—निष्ठा का अतिरेक है सुख निर्भयता ! इस मन्थ पर संसार

गौरव करेगा। इसके पीछे पापों पर उस अत्यधिक भक्ति के कारण बस कर राख हुए व्यक्ति की संसार को क्या कभी याद भी रहेगी ?

उमिता—बनवास में भी धाप सुधी ने सब तो यह धाप ही का राग्य है। सुख की भरमसीमा है—

सीता—क्या सचमच यह सुख की भरमसीमा है ? उमिता बनवास का यह सुख सब याद पाठा है। जब उसकी इस सुख से तलना मही हो पाती। प्रतिदिन का यह निकट सहवास जब फिर से दुर्मम होने लगा है मुझे। ठीक तुम्हारी ही तरह मही फिर भी लगभग तुम्हारी ही ही बिर हबस्था में मेरा प्राण मज्जमा रहा है। राबख की कारा में बिताया हुआ वह माह का समय—जस सुख के निर्मल बरुन पर पड़ा हुआ वह छोटा सा बाग—वह उतना ही सुख का काम—

[विजय और बासंती प्रवेश करते हैं और दोनों सीता के चरणों पर मस्तक रखत हैं।]

विजय बालंती—अमा करो माते अमा करो।

सीता—उठो बासंती सठो विजय क्या हुआ ?

बालंती—बड़ा बोर अपराध हुआ है हमारे हाथों।

विजय—प्रभु से प्रतारणा करन का पाप हमने जानबूझकर किया है।

सीता—कैसी प्रतारणा ?

विजय—(धातन की घोर उंबली से सकेत करते हुए) वह धामन—

सीता—उसे क्या हुआ कितना सुन्दर है वह।

बालंती—वह मूवचर्म—

सीता—कितना सुन्दर है वह भी इस मुनहर मसार की घुफ्फटा में इस मूवचर्म के स्पर्श से मुझे कितना जानम्व हुआ। पुरानी कितनी स्मृतियां जाग पडी। तुम्हें वह कैसा सुभ्य बासंती ?

बालंती—वह मेरी घूर्तता थी।

विजय—वह दाप दिगाने के लिए—

सीता—(बौककर) काहे वा दाव ?

बिजय—उस आसन का वाय ?

बासंती—कितना प्रयत्न किया मैंने । फिर भी वह बाग न निकला । इस मन्वन्त की पहली यात्र मुझे भी अक्षय पर उसके कारण यह मन्वन्त मैंने नहीं रक्खा था । उसकी यात्र इस बाग के कारण आई—यह बाग बचाने के लिए ।

सीता—यह बात हमारे ध्यान में नहीं आई । बल्कि हमें तुम्हारी स्मरणशक्ति पर कुतूहल ही हुआ । तुम लोगों ने अभी आकर न बतसाया होता तो मुझे पता भी न चलता—क्या इसी बात की तुम लोगों का माँग रहे हो ?

बिजय—हाँ माता यह ठीक है कि आपको पता न चलता पर यह जानबूझकर किया हुआ अपराध था । यदि हम न बतसाते तो पाप करते । अब यह रामराज्य है—

सीता—क्या कहा ?

बासंती—अब यह रामराज्य है । इस रामराज्य में जानबूझकर या धनवाने कोई पाप कर्म न करे यह शोषणा राव्यामिषेक के समय प्रभु ने की थी न ? क्रिये हुए कर्म का जो मुझे परबन्धनाप हुआ है वह उस शोषणा की यात्र धाने के कारण ही ।

सीता—सुनो उमिषा रामराज्य धारम्भ होने का यह प्रत्यक्ष प्रमाण देख लो ।

बासंती—(फिर सीता के पैर पकड़ कर) क्षमा करो माते—क्षमा करो ।

सीता—(हँसकर) बाधो तुम्हें क्षमा कर दिया ।

बिजय—प्रभु से भी क्षमा माँगनी चाहिये ?

सीता—कोई आवश्यकता नहीं । तुम बाधो अब—

बासंती—मेरी धपनी घौर भी एक याचना है । जोबहु बर्ष मैं आपकी प्रीति में यहाँ थी । एक बार भी मायके नहीं गई । अब रामराज्य हो गया है, रामराज्य में का मायका मैं एक बार देख आऊँ ?

उर्मिला—आजन्म कारावास !

सीता—सोझाराचना का कारावास ! हमेशा राज्य कार्य ! अपि मुनिबों की सेवा ! कुर्तों का हनन ! — उर्मिला तुमने कहा था मैं रानी हूँ ! राजा को कुछ-न-कुछ काम होता है मुझे क्या काम है ? छः महीने के बियोग में मैं मृतप्राय हो गई थी अब इस अज्ञान सहवास का अज्ञान बियोग मैं कैसे सहन करूँ ?

उर्मिला—अज्ञान सहवास का अज्ञान बियोग ! बियोग ! अब यही होगा। अब रामराज्य आरम्भ हुआ है। अब रामबन्धुजी को अन्वेषण मिलेगा। और वहाँ राम वहाँ लक्ष्मण—लक्ष्मण को भी अन्वेषण मिलेगा। अब तुम धीर मै—बोनों ही घबरेली !

सीता—बोनों ही घबरेली ! मच है क्या यह यों ही चलता रहेगा उर्मिला ?

उर्मिला—महितव्यता के उदय से कृपा प्रकाश होगा यह हमें कौन बता सकता है ?

सीता—तुमने जो कहा वही ठीक है। स्त्री स्त्री है और पुरुष पुरुष फिर चाहे वह रानी हो या साधारण गृहणी !—साधारण गृहणी का जीवन क्या पैसा ही होता है उर्मिला ?

उर्मिला—कौन कह सकता है ? मैं भी कहीं जानती हूँ ? राज करने में उत्पन्न होने का दुर्भाग्य जो हमें प्राप्त हुआ है ! इस साधारण लोगों का जीवन कैसे जान सकती है ?

सीता—जयता या इनने दिनों के बाद आज बड़ी मर सकलैत से बैठने को मिलेगा। कितनी प्रसन्न भी मैं ! बनवास की मीठी-मीठी बातें कर रही थी। और भी कितनी ही बातें मैं करने वाली थी पर यह लोका राचना मेरे मुख में घाड़ी आई। क्या जाने बामा है उर्मिला क्या जाने बामा है ?

[बनवास में यह उर्मिला को कतकर सीने से बिपदा भेती है।]

(पर्व)

दूसरा अंक

पहला दृश्य

[सीता का प्रसन्न पुर । कुशिका बाली-बाली घन्वर घाती है । उसके पीछे-पीछे बसे पुकारता हुआ विजय घाता है]

विजय—कह रहा हूँ न ठहरो कुशिका ।

कुशिका—माय बाली होये पर मुझे इस समय फुरसत नहीं । घाम प्रसन्न यहाँ आनेवाले हैं इसलिए मुझे यहाँ की सारी व्यवस्था करना है ।

विजय—अच्छा अच्छा बचने दो अपना काम तुम काम करती रहो और इसी बीच मुझे जो कहना है मैं कहे देता हूँ ।

[पीठिकाएँ इत्यादि ठीक करते-करते दोनों बालें कर रहे हैं । कुशिका काम कर रही है और विजय उसके साथ बहलता हुआ बालें कर रहा है ।]

विजय—मुझे अपने प्रसन्न का नाम ही उत्तर चाहिए । गद्दी सुना ? घाम बाली मायके से या नहीं है इसके पहले मुझ तुम्हारा उत्तर चाहिए ।

कुशिका—घोष के साथ मुझे पर नहीं बसाना है ।

विजय—क्यों नहीं ? राधा दशरथ के तीन रातियाँ भी उनका घर बसा या नहीं ?

कुशिका—घर क्या बसा ? दो अच्छी भी पर तीसरी ने पति की जाग ले ली या नहीं ?

1 विजय—सेकिन तुम बेसी नहीं हो ।

कुसिका—घोर उस दूबू कि हुई तो ?

बिजय—पर मैं जो पक्का हूँ, मैं किसी से दूबू या नहीं घोर बैस देखा जाय तो मैंने बासन्ती को घर लो लिए नहीं हूँ । उससे मेरी एकदम ठिठियन भर गई है । एक महीने के लिए कहकर गई पर घाब तीन महीने हो गए । मायके जाने के लिए कह गई थी पर पुष्पाछ की तो पता चला कि वह किसी दूसरे ही जाँब गई थी । इसीलिए तुम्हें उसकी छाती पर बैठना चाहता हूँ ।

कुसिका—बिचारी बीवह सान से यहाँ बन्दिनी थी रह रही थी । गई होगी कहीं घोर बाहर जाकर घाबपी चाहता ही है कि बार जपह भूम घाए । घाब घा रही है न वह ?

बिजय—कुसिका—(उसके कंधे पर हाथ रखता है । वह उसका हाथ मिकक देती है ।) ऐसा क्यों करती हो ? उसके जाने के बाद इतने दिन हम लोगो ने बड़े मजे से व्यतीत किए घोर घब वह घा रही है कहते ही मुझे मिकक रही हो ?

कुसिका—इसीलिए मिकक रही हूँ । जो हुआ वह बहुत हुआ । अब जाकर बरि उसने देखा लिया तो वह मेरा जला दबा देगी ।

बिजय—तभी तो कहता हूँ कि हम लोग ब्याह कर लें । एक बार ब्याह होने पर उसकी क्या मजाज कि तुम पर हाथ उठाए ?

कुसिका—घायकी घायु कितनी घोर मेरी कितनी बार घाघमियों को क्या घण्डा सगेवा ?

बिजय—तमने राजा बसरथ को नहीं देखा । रानी कैकेयी घोर उनकी घायु में पेशा ही घण्टर बा । देक ही रही हो कि कौसल्या देवी से कैकेयी देवी कितनी छोटी सगती है ।

कुसिका—मुझे बरा बिचार करना होगा । घमी जो घापने राज माताओं का सस्तीन किन्ना उससे मुझे लारा पुराना इतिहास बाब घा नबा । घावा-नीघा भी घोष मैना बाहिए या नहीं ?

बिजय—यए तीन महीने में हमारा कुछ बिपदा ? —नहीं बिपदा

न ? तो अब क्यों विचार किया जाय ?

कस्तिका—व्याह करना है न इच्छित । (सुनती हुई सी) सामय
छीता देवी मा मई ! अब जाओ तो यहाँ से ।

विजय—पर मेरे प्रश्न का उत्तर ?

कस्तिका—बासंती के धाने पर धान कैसे रखते हैं यह मुझे अब देखना
है, यदि मेरी इच्छानुसार सब कुछ होता दिखाई दिया तो—

विजय—तो हो जाओगी न व्याह के लिए तैयार ?

कुशिका—तब का तब देखा जायगा । पहले यहाँ से छीटा चले
जाओ । यहाँ तुम्हारा काम नहीं । छीटा देवी ने तुमको यहाँ रोक लिया
तो—कह रही हूँ न जाओ ! सब तम्हारी इच्छानुसार हो जायगा ।

विजय—होया न ? तब आता हूँ । (आते हुए उसके पास पर
हस्ती सी चपत समझकर बसा जाता है ।)

कुशिका—ये हैं बड़े लोप !

[बासंती और शम्भूक प्रवेश करते हैं । शम्भूक बीस घाल का
नक्युटक है—गठीले शरीर का तन्मुस्त । उतका रंग काला है फिर भी
वह बुरसुरत और हँसमुख है । मरत प्राते ही वह शर मर किर्कस्तम्भ-
बिमूढ़ ला इबर उबर बैचन समता है और बाब में चुपचाप खड़ा रहता
है । कस्तिका की मकर बासंती की धोर जाती है ।]

कुशिका—मा मई ? कहीं भी इतने दिन ? वह तुम्हारा पति
तम्हारे लिए जान दे रहा है ।

बासंती—छीटा देवी धाने बासी है न अब ?

कुशिका—हाँ ! पर पहले यह बतसाओ कि तुम मई कहीं भी धोर
यह तुम्हारे धान कौन है ?

बासंती—वह मेरा माना हुआ मई है । मैं इसी के पास मई थी ।

कुशिका—माना हुआ मई ? हाँ ! यहाँ क्यों मई हो जाने ? यह

पपमी बात का नहीं दिखाई देता ।

बासंतী—छीतादेवी छ मिलने आया है वह ।

कुशिका—तुम्हारे बहीसे से ?

बासंतী—कैसा बहीसा ? बिचारे के छाप छसी लोपों ने अन्धाय किया इसलिये न्याय मांगने आया है ।

कुशिका—कैसा अन्धाय किया ?

बासंतী—वह एक बस्तु है—घूर है । छारे अल्पि मुनी उस पर कुछ है—

कुशिका—तुम्हें अन्धी उस पर क्या आई ! यह ठीक नहीं बासंती । राजसेवा करने के पाए हुए अधिकार का ऐसा दुस्प्रयोग करना ठीक नहीं ।

अम्बूक—(अचानक छापे छाकर बासंती से) मैं क्याऊ ?

बासंती—क्यों ? यह कहती है इसलिये ? वह क्या जानती है ?

कुशिका—मैं कुछ नहीं जानती फिर भी इतना जानती हूँ कि राज राधियों को ऐसे अन्धों में न पड़ना चाहिए । उन्हें कोई दिखावट हो तो सीधा राज दरबार में जाना चाहिए —

[सीता आती है । अंदर आते समय वह अग्न पर ठहरकर अम्बूक की ओर देखती है तत्पश्चात् बासंती की ओर मुड़ती है ।]

सीता—आ गई बासंती ? मुझे बराबर याद आ रही थी तुम्हारी । यह कुशिका यहाँ थी अचरम फिर भी आकर वह नहीं ही है—

[बासंती अम्बूक को इशारा करती है । अम्बूक नमस्कार करता है । सीता अम्बूक की ओर प्रत्यक्ष अरी बन्धित से देखती है ।]

बासंती—वह मेरा नामा तुम आई है । तो भी वह आर्य नहीं बस्तु है । अम्बूक अब तुम्ही कहो जो तुम्हें कहना है ।

अम्बूक—मझे क्षमा कीजिए देवी । राज दरबार के सिंहाचार से मैं अलग नहीं । यदि मुझसे कुछ छुन हो जान तो उस पर क्या न

दीविए । (सीता आसन पर बैठ जाती है ।) मैं एक बस्तु हूँ । धूर हूँ । किसी भी बंध में जगद सेना किसी के बंध की बाध नहीं होती । प्रनाय प्रदाने में वंश होने के कारण मुझे सताया जा रहा है—

सीता—कौन तुम्हें सता रहा है ?

शम्भूक—सारा ब्राह्मण वर्ग सारे ऋषि-मुनि । ब्रह्मपत्र से मैं एक ऋषि की पर्वकुटी में पड़ा हूँ । मैं ऋषि बिश्वामित्र ऋषि के अनुवासी मे । प्रनाय होने के कारण उन्होंने मेरा ठिठकार नहीं किया । मुझे सिखाया पढ़ाया मुझसे बेबाध्य बन करवाया उन्होंने मुझे तपश्चर्या का मार्ग दिखाया । मैं स्वर्गवासी हो गये पर उनकी आज्ञा का पालन करते हुए मैंने अपना बंध खालू रखवाया । वे सब जीवित नहीं बहू देखकर सारे ब्राह्मण वर्ग ने मुझे सताया आरम्भ कर दिया है—

सीता—पर वे तुम्हें क्यों सताते हैं ?

शम्भूक—वही तो मैं भी नहीं जानता । देवी मैं एक दुर्मित्र हूँ । भूमि माता की सेवा करते-करते मेरे माता-पिता ने धीरे-धीरे सभी भूमि माता की सेवा में अब कर रहा हूँ । इस सेवा के साथ-साथ मृतक का बिखाया हुआ तप का माय भी मैं अपनाए हुए हूँ । वहाँ के तपस्वी लोगों का कहना है कि मझे यह अधिकार नहीं है । उन्होंने रामचन्द्र की से तिवेदन किया है कि मरा यह अपराध बन्धनीय है—

सीता—जन्तुओं के बस्तुओं के उत्पात के कारण प्रभु मर गये—

शम्भूक—जी बहू अकेला बस्तु मैं ही हूँ—धीरे-धीरे मेरा उत्पात है, इस उत्पात को मिटाने के लिए तपस्वियों ने माहक प्रभु को मर दिया ।

सीता—फिर प्रभु ने क्या किया ?

शम्भूक—मुझे मना किया । तपश्चर्या का मुझे अधिकार नहीं है यह निर्णय करके मुझे मर के बताने हुए मार्ग से मुझे पछवृत्त किया । इसीलिए मैं आपके पास आया हूँ ।

सीता—मे क्या कर सकती हूँ ? मेरे पास ऐसा कौनसा अधिकार है ?

धर्म्युक्त—प्रभु की समझना—

सीता—क्या प्रभु नहीं समझते ? उन्हें मैं क्या समझ सकती हूँ ? और वह भी किस आधार पर ?

धर्म्युक्त—एक ही आधार पर । मुझे तपस्वियों का अधिकार नहीं वह किसने ठहराया ? क्यों ठहराया ? क्या इसलिए कि मैं धर्मात्मा हूँ । हम यहाँ के धार्मिकवादी हैं । धर्मों ने हम पर धारण कर लिया । हमारे अज्ञान से नाम उठाकर ज्ञानी धर्मों ने हमें अपना दास बना लिया । इस दासता से बसुंधों को मुक्त करने के लिए ही मैंने तपस्वियों का मार्ग अपनाया । प्रत्येक मानव को इसका अधिकार है । इसी तपस्या के बल पर विश्वामित्र मुनि ने ब्राह्मणत्व नहीं प्राप्त किया था ? फिर वह अधिकार मझे भी क्यों न मिले ?

सीता—(स्वप्न) विश्वामित्र बह्मवि हो गए— विश्वामित्र मुनि के धार्मिकवाद से ही प्रभु न राजगण पर विजय पाई—विश्वामित्र मुनि के धार्मिकवाद से ही मैं प्रभु की अधीनस्थिनी बनी । (धर्म्युक्त से) तुमने विश्वामित्र मुनि का नाम लिया ? वह प्रभु को क्यों न बताया ?

धर्म्युक्त—मुझे किसी ने बोझने ही न दिया । इसीलिए मैं यहाँ आया हूँ । मुझे क्षमा कीजिए । यह न समझिए कि मैं धर्म में सूत्र जोड़ रहा हूँ । और लोगों को धर्म से अज्ञानमुक्ति नहीं होती पर धर्म मठ पर रखा करती इस विचार के कारण ही मैं अपनी इस बहन के कहने पर यहाँ आया हूँ ।

सीता—तमने यह किस समझ कि मुझे तुमसे अज्ञानमुक्ति होगी ?

धर्म्युक्त—भूमि पुत्र से भूमि कन्या को अज्ञानमुक्ति न हावी तो और हावी कितने । जमी मिट्टी में धारण जन्म हुआ है । हम के फल की लोका पर जन्म हुआ है, विदेह के राजा जनक ने भूत्र के हाथ से हम लिया । यज्ञधर्म के लिए राजा जनक न भूत्र वृत्ति स्वीकार की । इसीलिए सीता पैदा हुई—

सीता—मैं भूमि कन्या हूँ ?

शम्भूक—हाँ अयोधिसंभवा ! स्वयं भूमिमाता ने बनी हुई ! इस भूमिकन्या को भूमाता के छेबक पर बसा न आएगी तो और आएगी कैसे ?

सीता—मैं भूमिकन्या ! तुम भूमिपुत्र ! भूमाता के छेबक !—
शम्भूक इरो मत । तुम्हारी यह बहुत तुम्हारा साथ नहीं छोड़ेगी । तुम सब भोग आओ । बिरहुस निश्चित रहो शम्भूक । शाबास ! बासंती !—
आओ सब—मझे आसु मर चकेली रहने दो !

[बासंती कुबिका और शम्भूक आते हैं । सीता परेयानी से दृष्ट करने लगती है । तभी राम आते हैं । जग भर उतका ध्यान राम की ओर नहीं जाता ।

राम—सीता सीता कबूल हैर तक यों ही उनके मुख की ओर देखती रहती है ।) क्या हुआ ? क्यों ऐसी अस्वस्थ हो गई हो ?

सीता—यह रामराज्य है—

राम—इसीलिए तुम अस्वस्थ हो रही हो ?

सीता—राम राज्य की स्थापना म्याम के आचार पर हुई है—उत्स के आचार पर हुई है—क्यों ?

राम—इसमें तुम्हें संदेह क्यों हुआ ? इस रामराज्य में अपनी प्रथा के एक भी व्यक्ति के साथ अत्याय न होगा चाहिए ।

सीता—मानते हैं न ?

राम—किसके साथ अत्याय हुआ है ?

सीता—बिरुवाभिष मुनी कौल से ?

राम—मेरे मुक, मेरे बुद्धिदाता, मेरे अक्षिदाता !

सीता—उनका अन्त क्षत्रिय बंध में हुआ या न ? (राम तकारा-
त्मक सिर झिंलाते हैं ।) वे ब्रह्मचरि बन गए—

राम—उसके लिए उन्होंने कितनी कठोर तपस्या की !

सीता—उनकी उस तपस्या का विरोध हुआ या । विरोध हुआ या

पर उस पर प्रतिबंध नहीं लगाया गया था । बड़े पैरों से उन्होंने बिरोबियों का सामना किया और इसीलिए वे ब्रह्मचर्य बने । रघुवध के पुत्र बसिष्ठ महामुनि ने ही तो बाहिर उन्हें ब्रह्मचर्य करा था ?

राम—हाँ !—पर आज ही तुम्हें उस प्रसेव की क्यों माह माई ?

सीता—इसलिए कि ऐसे ही एक तपोनिष्ठ व्यक्ति का विरोध हो रहा है—इसलिए कि इस रामराज्य में उस पर प्रतिबंध लगाया जा रहा है !

राम—किस पर ।

सीता—धम्बूक नामक एक दूत पर—भूमिपुत्र पर—मेरे भाई पर ।

राम—तुम्हारा भाई ? कौन है यह तुम्हारा भाई ?

सीता—यै भूमिकन्या हूँ ! मैं भूल गई थी । उसने मुझे याद दिला दी । हल के फल पर अन्न हुआ था मेरा । इसी मिट्टी में से मैं उत्पन्न हुई हूँ ! मिट्टी की कन्या हूँ मैं ! उस मिट्टी की सेवा करने वाला हाथ में हल पकड़े हमारे धन के लिए शरीर-बाहु की तपस्या करने वाला प्रत्येक मानव मेरा भाई है । भूमिमाता के ऐसे उस पुत्र को तपस्या का अधिकार नहीं यह किसने तय किया ?

राम—अपि मुनिवों ने ! ब्राह्मण वर्ग ने ! ब्राह्मण वर्ग का धारा धारक सेवक है यह राम !

सीता—विरवामिन के सिव्य हूँ राम ! भूमिकन्या के पति हूँ यह राम !

राम—यह क्या से बेनी हो तुम जान ?

सीता—सिंहासन के सम्पर्क के कारण मेरी बुद्धि भ्रष्ट हो गई थी । मेने उस भाई ने धम्बूक ने मुझे मेरी जन्म कहानी की याद दिला दी । उठके ताब धम्याव नहीं होता चाहिए ।

राम—क्या यह तुम्हारी याज्ञा है ?

सीता—यह मेरी याचना है ! यात्रा देने का मुझे अधिकार नहीं ।

राम—बड़ा बटिन प्रसंग है यह बात मेरे अधिकार से बाहर है ।

सीता—यह राम राज्य है। इस राम राज्य में राम के प्रतिरिक्त और किसका अधिकार चलता है ?

राम—धर्म का पालन करना राजा का कर्तव्य है। धर्म पर अधिकार बाह्यसु बर्ग को है।

सीता—राम राज्य में भी ?

राम—बाह्यसु बर्ग की आजायों का पालन करना ही राम राज्य है।

सीता—बाह्यसु बर्ग की आजायें धर्म्याय को मिये हों तब भी ?

राम—बाह्यसु बर्ग धर्म्याय करेगा ही नहीं।

सीता—तो बिद्वामित्र को क्यों सताया गया था ?

राम—बाह्यसु बर्ग ने उनकी परीक्षा ली थी।

सीता—फिर धम्भुक की भी परीक्षा ले लेते बीबिए उन्हें।

राम—मे बिद्वध हूँ सीता बही। धम्भुक का धर्मभ्रंशरण सबके नाश का कारण होगा। बिद्वामित्र के साथ उसकी तुलना न करो। वह बस्तु है। धनार्थ है। धृष्ट है—

सीता—भूमिपुत्र है ! मेरा भाई है !—(राम चुप रहते हैं।) पर क्यों नहीं बोलते ?

राम—यह लोकाराधना बड़ी कठिन बस्तु है !

सीता—धापत्री लोकाराधना की व्याख्या में कौन से लीयों का समावेश है ?

राम—सबका।

सीता—तो क्या धम्भुक उनसे परे है ? किन लीयों की आराधना के लिए धाप धम्भुक को तपस्या बंद करना रहे है ?

[राजपुत्र प्रवेश करते हैं ।]

राजपुत्र—राजन् !

। [राम और सीता उनके चरणों पर मस्तक रख कर प्रणाम करते हैं ।]

राम—महाराज की क्या धाजा है ?

राजपूज—राजायम पंडपुर में घाने का प्रतिबन्ध करन योग्य नहीं बा ठिर भी मै क्या घाया । मै विषय बा । बडा दो, इन विषय प्रामाद में बहु घषर्षी कैसे घाया ?

राम—बहु कौन ?

राजपूज—बहु बस्तु । जिसके बदन के निरु कृत्तियों में राम का प्राह्वान किया बा बहु बस्तु । जिसके दही घाने में यह स्वयं भट्ट ही गया है । घषी तक उषवा गिरण्देर बनों नहीं हुपा ?

राम—गिरण्देर ?

राजपूज—हाँ ! गिरण्देर ! हम बधर्माचरण के निरु गिरण्देर के परिचित हुनय दण्ड नहीं ! यह बधर्माचरण देवा ही बनना खा तो हम राम राज्य पर घनर्षे हुए बिना न रहेपा ।

राम—यदि यह बधर्माचरण बहु घौर दे तो ?

राजपूज—किए हुए घाराब का दण्ड मितना ही बहिर ।

सीता—(उसके बंद बकड़ कर) दाना कौबिर दुस्तेर बा कौबिर । बहु मेघ मारि है ।

राजपूज—दुम्भारा मारि ?

सीता—जी—मेरा मारि ! बहु भूमिबन्ध है मै दुम्भारम्भ है । बहु हमघर है मै हन उग्या है । देरे तिर उषपर दाना कौबिर ।

राजपूज—बहु बस्तु है घनन है ।

सीता—घौर मै कौन है ?

राजपूज—दुम्भाराम राम बन्धा हो ।

सीता—मै भूमि बन्धा है । जिस प्रकार देरा उम्भाराम देरें नहीं हुपा है वैसे ही घानेबंद में भी नहीं हुपा है । जिस प्रकार मै घाने नहीं हूँ उमी प्रकार घाने भी नहीं हूँ । इतना हो नहो हम दुम्भार के देण कर्म होने के कारणा मै घाशों को घनेवा घननों में घदिर विरुट है ।

राम—उमे सीता एक बाब बजनाघो, दण्ड के घाने गिया

बाप तो यह ब्रह्मकर्म छोड़ने के लिए प्रस्तुत है ?

राजपुत्र—नहीं नहीं। धर्मनिष्ठा का अपराध उमसे हुआ है। उमे दण्ड मिलना ही चाहिए।

राम—गुरुरेव के चरखों में एक प्रायश्चित्त है। राम राज्य में किसी के साथ धर्म्याय न होना चाहिए। सम्भूत तपस्या छोड़ दे तो उसे जीवन दान दे दिया बाप निर्वासित कर दिया बाप गुरुरेव मेरी यह प्रायश्चित्त स्वीकार करें।

राजपुत्र—घोर गयानार बाबर यह तपस्या करने लगे तो ?

राम—तो उसका चिरञ्छन्द क्रिया बाधगा।

राजपुत्र—ठीक है। उस दस्तु के सार्ध से भ्रष्ट हुए हम प्रायश्चित्त को पुष्टि करने की में धात्रा दे रहा हूँ। राजा राम तुम्हारा कल्याण हो।

[आता है। राम घोर सोता लाल भर चुपचाप रहते हैं। सीता धीरे-धीरे घातन पर बैठ आती है। राम उसके पास आते ह घोर उसके कंधे पर धपना हाथ रखते हैं।]

राम—हो गया तुम्हारा समाधान ?

सीता—नहीं। सम्भूत बच गया पर म्यात्र का चिरञ्छन्द हो गया।

राम—बच किन्तु धर्मों से तुम्हारा समाधान करू ?

सीता—भाप ही में तो मुझे बताया था न कि विद्वामिष मुनी के प्रणार से प्रनार्यों में धानुति हुई है ? उन धानुत धनार्यों के साथ क्या बड़ी व्यवहार होगा इस राम राज्य में ? सम्भूत बच गया हम बात का मुझे समाधान है पर उनके उद्देश्य की हत्या हो रही है यह मुझे सहन नहीं हो रहा है।

राम—तुम्हारा कहना विरुद्ध ठीक है। पर यह राजनीति है। धर्म पर धार्मिक राज्य में ऐसा हुए बिना उपाय नहीं।

सीता—मुझे बनवास की जो बार-बार याद आ रही है यह हमी लिए। बहुत कहीं या यह मेरुमात्र ? वह केवल धर्म को पराया लया था ?

स्वा प्राण ही मे भुंके नहीं बठाया जा कि धापने बस्तु जाति की छत्रों के भुंके बेर जाए मे ? यह बनवास का इतीतिण ऐसे मेवमान धापके मन में नहीं घाते मे । कब पुन मिलेवा यह बनवास !

राम—ये विविध विचार क्यों बार-बार तम्हारे मन में घा रहे हैं ?

सीता—धाप नहीं धापते ये मेरी गर्भावस्था की बाधताएँ हैं । इस भूमि कम्पा के उदर का गर्भ तपोवन की भूमि लैम्बा पर उत्पन्न होना चाहिए ।

राम—सबोम्बा की राजतपसी की ये कौती विविध बाधताएँ हैं । धरम्य होना बही होना । तुम्हारी ये इच्छाएँ मे सबस्य पूर्ण कर्हेया ।

सीता—बचन बीजिए भुंके !

राम—रुक बबनी राम का इस इस भूमि कम्पा का यह बचन है ।

(पर्व)

दूसरा घुड़प

[राज प्राताम का एक भव्य मार्ग राजपुत्र कोबाधता में ला रहे है । उनके बीच-बीच बौद्धता हुआ विजय साकर उनके चरलों के निकट प्रताप करता है ।]

विजय—भववन्—

राजपुत्र—(बहुर कर बीच मुड़ कर) कौन हो ली तुम ? विजय ? क्या है रे राज ?

विजय—एक निर्भय पुरुषता है ।

राजपुत्र—यह स्वाम क्या निर्लुब बुद्धने के लिए है ?

विजय—नहीं मयबल पर धापके उस मधिर में प्रवेश पाता हमा पीनो के लिए कठिन होता है । धापके धाने का यह सुमचर पाप इसलिए धापके चरलों के पास ला मवा है धरा कीभिए । एक ही प्रसन्न पुरुषता है । धामा हो ली पुरु ?

राजगुरु—उठो-उठो क्या है ?

विजय—बड़ा विकट है प्रश्न। अपने ही मुँह से अपनी बहूज्वती की बात कैसे कहें ?—जरा संकोच होता है—

राजगुरु—मेरे पास अब समय नहीं जो पूछता हो मरुपट पृष्ठ बासो।

विजय—मेरी पत्नी बासंती—आप तो उसे जानते ही हैं—देवी की सेवा करती है उससे एक अपराध हुआ है अब कैसे कहूँ ?

राजगुरु—तो फिर कुछ भी न कहो। मेरे पास अब समय नहीं।

विजय—क्षणमर—साधगर ठहरिये मयबन् !—एक महीने के लिए मेरी बहू पत्नी मायके गई थी। अब मुझे पता लगा है कि मायके जाने का वह उसका केवल होंग था। तीन महीने बहू वहाँ रही—मायके में नहीं—एक दस्तु के घर।

राजगुरु—दस्तु के घर ?

विजय—हाँ मयबन् ! वह एक दस्तु के यहाँ रही थी। और अब यहाँ आई है तो उसे साथ लेकर। विस्तृत सुने आम निर्लज्जता से उस छात्र से आई है। आठे ही मुम्हले ठीक से बोली भी नहीं। उष सम्भूक को लिए सीधी देवी के यहाँ—

राजगुरु—सम्भूक को साथ लिए ?

विजय—हाँ मयबन् ?

राजगुरु—उसी ने सम्भूक की सीतादेवी से भेंट करवाई ?

विजय—और अब मैंने उसे धड़ा तो कहती है कि वह उसका माता हुआ आई है ! यह दस्तु हमारा भाई कैसे बन सकता है ? विस्तृत उसके कान के पास अपना मुँह से आकर बर्तें कर रही थी। और दोनों मुम्हल दूर हटकर आपस में कानाफूसी कर रहे थे।

राजगुरु—उसका यह व्यवहार संतयास्पद है अवश्य ! तुमने स्वयं देखा था ?

विजय—हाँ मयबन् ! सीता देवी से मिलने प्रभु पर्ये थे। धं ७७

वे वहाँ से चले गए तब वह बीड़ती हुई बेबी के अन्त-पुर की घोर फिर से जाने लगी। मैंने उससे पूछा तो उसने बड़ी भापरबाही से उत्तर दिया।

राजगुरु—क्या कहा उसने ?

बिजय—उसने कहा—इस मुह से कैसे नहीं वे घबड़ ?—उसने कहा हुआ क्या यदि उस बस्त्र के यहाँ रही तो ? सीता देखो नहीं रही थी राजस के यहाँ ? यह उसने साफ साफ कह दिया।

राजगुरु—यह कहा उसने ?

बिजय—हाँ भगवन्, यह कहा और तड़क से सीता बेबी के अन्त-पुर में चली गई।

राजगुरु—उसका भी क्या बोप है ? हुआ ही ऐसा है।

बिजय—भाप भी यही कहते हैं भगवन् ?

राजगुरु—मैं ही क्या सारी घबोघ्या कह रही है। प्रत्येक व्यक्ति पर स्वर यही कानाफूसी कर रहा है। गुप्त-धरों के अर्गों में यही अतक पड़ती है पर राजाराम से कहने का किसी को डर नहीं होता और तब वे सोच घाकर मुझे बतलाते हैं। मैं भी क्या कर सकता हूँ ? मैं राजगुरु धर्मस्य हूँ पर मेरे अन्त का यही मुख्य ही क्या है ?

बिजय—ऐसी घबड़म बाठ क्यों कर रहे हैं भगवन् ? भाप राजगुरु हैं। प्रभु भापके अन्त को वेदवाचन के समान मानते हैं।

राजगुरु—धमी धमी इस बाठ का प्रत्यक्ष अनुभव कर लिया। राजा राम के यहाँ मेरे अन्त का अन्तना मुख्य है यह मैंने धमी देख लिया।

बिजय—क्या हुआ भगवन् ?

राजगुरु—वहलें तुम्हें या कुछ पूछना है, पूछो।

बिजय—बासंती ने जो किया वह अपराध है न ?

राजगुरु—वह तुम धपना स्वयं देख लो।

बिजय—यदि मुझे विश्वास है याव कि उसने अपराध किया है तो मैं उसे क्या बन्द हूँ ?

राजगुरु—उसे त्याग दो मेरे अन्त का कुछ मुख्य होता तो मैं राजा

राम ने भी यही कहा।

बिजय—पर ऐसा करना निर्बलता न होनी भयवन् ?

राजगृह—प्रपत्नी निर्भय मने तुम्हें बठा बिया । अब तुम भी जाहो करो । अब स्वयं राजा के यहाँ हमारे सहर का मूस्य नही तब तुम राज-सिबक भला क्योंकर उषका पासन करने सने ?

[जाता है । बिजय मुग्न सा बड़ा है । इस बात-सिाप को छुपकर सुनती हुई कुचिका धापे धाकर जलका हाप पकड़कर उसे हिलाती है । धीर बह बौकता है ।]

बिजय—तुम हो ? कितना बोक उठा मैं ! मैं समझा बह है !

कुचिका—बासनी ? बह इस समय यहाँ क्या धाने सनी ! देवी की पहेती है न ? कितनी बेर से बाते कर रही है देवी के धाप ?

बिजय—तुम्हें बोड़ा पहने धाना जाहिए ना—

कुचिका—कमी की धाई हूँ—

बिजय—तो कहीं भी ?

कुचिका—तुम्हारी बात भीत मुन रही बी । अब क्या करने बाते हो ?

बिजय—जाता पासन । पुत्रवतों की धाजा का उस्सभन दिया ना सवता है कुचिका ? मैं रजक हूँ राजा नहीं !

कुचिका—ठा क्या तुम उसे निकाल बोपे ? कहीं से निकाल सने ? इस राजगृह से ?

बिजय—धपने धर से निकाल दू ना । इसके बाद धपने धर में धीर भी न रखने दू ना ।

कुचिका—क्यों ?

बिजय—बह उठ बस्यु के यहाँ रही बी । पराए धर में ! स्त्री जाति का कुछ भी निस्वास नहीं किया ना सकता । यों ही नहीं रही बी उसके धर इतने दिन !

कुचिका—धीर तूम ?

बिजय—मैं ? मैं तो यही ना ।

कुशिका—पर यहाँ बस क्या रहा था ? घनी जाकर कहीं मुझसे ब्याह की बातें करने लगे हो । पर पिछले तीन महीने—

बिजय—बुप ! उसकी चर्चा न करो । वह मेरा घोर तुम्हारा रहस्य है ।

कुशिका—अच्छा ? वह जो ही सम्भूत यहाँ रही थी ! उसके बिजय कोई प्रमास भी है तुम्हारे पास ?

बिजय—ऐसे प्रमास कहीं मिला करते हैं ? घोर इन व्यर्थ की बातों से तुम्हें मतमन ? अब तुम्हारा रास्ता साफ हो गया है । सीत का बर न रहा । बिजयसुस निष्कण्टक राज्य करेंगे हम ?

कुशिका—लेकिन अब तक तुमने जो कुछ किया क्या वह अपराध नहीं था ? यदि उसने अपराध किया है तो तुमने भी तो यहाँ मेरे साथ—

बिजय—मैं पुरुष हूँ कसिका । अब मजा देना । पुरुषों का सहारा मिल गया है । यों खेदू ना उठे—(कहता क्यूता जाता है ।)

कुशिका—ये हैं पुरुष ! (जती है ।)

सीसरा बुद्धय

[राज का घण्टम् ह । बासंती लजा रही है । बिजय प्रवेश करता है ।]

बिजय—यह तुम्हारा नाम घोर कितनी बेर बनेगा ?

बासंती—(पलकी घोर न देखते हुए) घापको इससे मतमन ?

बिजय—मायके की हवा सभी जान पड़ती है तुम्हें । सीता उतार नहीं दिया जाता क्यों ?

बासंती—घपने पति हौन का घण्टिकार यहाँ क्यों जाता रहे है ? यहाँ मैं प्रजु की हामी हूँ । मेर काम में बापा उपस्थित न कीजिये ।

बिजय—आज तुम्हारे मित्राङ्क बहुत बड़े हुए जान पड़ते हैं । कोई नई उगाधि मिल गई है घायब सीता देवी से—(उठे कुछ भी न कहते हुए देखकर) अब कितनी मसाई की मुसबुलकर बातें हा रही थी देवी के साथ ?

बासंती—आपको उससे क्या करना है ?

बिजय—मे तुम्हारा पति हूँ मुझे सब कुछ बानने का अधिकार है।

बासंती—एक बार कह दिया मैंने वहाँ जाने के परचासु में प्रसु की शादी हूँ। पति होने का अधिकार बताया हो वो वह घर में बताया कीदिये।

बिजय—यहाँ भी नाता तो बही है।

बासंती—आप भी यहाँ के सेवक ही है।

बिजय—मेरी बराबरी करना चाहती हो ? मेरे कारण तुम वहाँ आई। तुम मेरी पत्नी न होती तो इस महल के पास पास भी न आ पाती—(बहु झिड़ककर प्रत्य हट जाती है।) तुम्हारे साथ वह कौन थाया है ?

बासंती—तुम्हें उससे मतलब ? वह मेरा भाई है।

बिजय—वह कामा बसूटा दम्पु तेरा भाई किस बना ?

बासंती—कैना भी क्यों न हो वह मेरा माना हुआ भाई है।

बिजय—तो अब तुम्हें दम्पु माने लगे हैं क्यों ?

बासंती—बुन रहिये। ऐसी उल्टी सीधी बातें मैं नहीं सुनू गी।

बिजय—सब कुछ धाक-माक दिखाई दे रहा है। बराबर बून मिल-कर बातें हो रही थीं तुम दोनों की। इनने दिनों के बाद आई—महीने भर के लिए कहकर गई थी और तीन महीने लगा दिये—पर मुझे एक शब्द भी न बोली। उन और को लिए सीधी पहुँच गई सीता माई के पास—

बासंती—जोने मरने का प्रत्य वा उस बिचारे का—

बिजय—होगा ! इसलिए क्या मरी और झंझड़ भी न देखना चाहिए या ?

बासंती—उसे जो पहले सीतामाई से मिलना था !

बिजय—यह मुझे अभी क्यों न बता दिया ? क्यों गई मुझे बुलकार कर ? इसीलिए मुझे समझे हुआ।

बासंतী—कैसे सन्देह हुआ ?

विजय—सब बुरा होने लगा है न मैं ?

बासंतী—तौ मी कहीं ऐसी सुभा है ?

विजय—पर वह तो सुभा है न ?—कहीं रही थी वे तीन महीने ?

बासंतী—मायके में ।

विजय—तो फिर वह कहीं मिता ?

बासंतী—वह मिता अपनी पर्वकुटी में । धर्मिताम ऋषि की पर्व कुटी में । वह वही रहता है । उबर में अपनी मा के साथ गई थी । मेरी मा उन ऋषि की सेविका जो थी ।

विजय—धर्म के कारण सुन्दरों हैं तुम घोरता को । तुम घोरता का कैसे विश्वास किया जाम ? दृष्टि से जग प्रोक्षण होते ही तुम घोरता क्या करोगी कुछ नहीं कहा जा सकता । मुझे विश्वास हो गया है कि—

बासंतী—काहे का विश्वास हो गया है ?

विजय—छाफ छाफ कहने के लिए मुझे बाध्य न करो ।

बासंतী—क्यों न करो ? जो कहना हो एक बार छाफ छाफ वह डालिये । मैं सब कुछ सुनने के लिए तैयार हूँ ।

विजय—छाफ से मेरा तुम्हारा सम्बन्ध टूट गया । इसके पश्चात् मेरे घर में बैर भी न रहता । पराए घर में रही थी सब मेरे घर में तुम्हारे लिए स्थान नहीं ।

बासंतী—राज्य के यहाँ तो मैं रही न थी । वह तो राजस नहीं है ।

विजय—राज्य हो तो घोर दस्तु हो तो बात एक ही है ।

बासंतী—तो क्या मुझे अतिवारीदा देने के लिए कहनेवासी है माय ?

विजय—रहने को अतिवारीदा ! बड़ों की बातें हैं इतलिये अपनी बर्बा नहीं करनी चाहिये । जीत करना है अति की परवाह ? कुछ घर बाप है यह । मैं जाती हूँ कपड़ा पट बाप तो भी राज निकालने वाला । यह बात निकलना ही चाहिये । फिर काहे मेरा संसार ही क्यों न कर जाय, मुझे स्वीकार है ।

बासंतী—यह रामराज्य है !

बिजय—हाँ हाँ रामराज्य है इसीलिये कह रहा हूँ कि तुम्हारा मेरा सबब समाप्त हुआ ।

बासंतী—मेँ सीतामाई के सामन परिचाय करूँ मी ।

[राम धीरे लक्ष्मण प्रवेश करते समय उसके उद्गार सुनकर दरवाजे में ही रुक जाते हैं] ।

बिजय—(धीरे से हँसता है ।) मे क्या बताएँगी ? सारी प्रबोध्या जो बातें कर रही है उन्हें सुनो । कहते हैं अग्नि परीक्षा ! गुरुदेव से पूछो कुछ क्या कह रहे थे ! सब लोग बुरा कह रहे हैं—

बासंतী—प्रसु रामराज्य को मी ?

बिजय—प्रसु को कोई क्यों बुरा कहने लगा ? बुरा कह रहे हैं सीतामाई को—

बासंतী—ऐसा कहाने तो तुम्हारी बीम गल जायगी ।

बिजय—बीमे के घाय से बळ नहीं मरा करती । इतने लोग कहते हैं उनको बिछाएँ क्यों न गल गई ?

[राम एकत्रिम सामने आते हैं । लक्ष्मण पीछे ही आते हैं ।]

राम (बिजय से) इतने लोग क्या कह रहे हैं ?

[दोनों उनके चरणों पर सिर रखकर प्रणाम करते हैं ।]

बिजय—क्षमा काबिए देव क्षमा कीबिए । (उठकर जाड़ा होकर हाथ जोड़े बार-बार कौपल्य हुआ) लोगों को कळ मुना इसलिये मैंने कहा । मुझे क्षमा कीबिए ।

राम—गर साथ क्या कहते हैं ?

बिजय—किस मुँह में कहूँ ? मन नहीं कहने देता । बीम लुमी हो जाती है—

राम—मुझे जानना ही चाहिए कि लोग क्या कहते हैं ? तुम लोग मुझे न बताओगे तो मुझे पता कैसे जसेगा ?

बिजय—बहु बड़ी प्रसुम बात है देव !

राम—धुम हो चाहे समुन में जानना चाहता हूँ। इस रामराज्य में लोकापवाद को स्थान नहीं मिलना चाहिए। उरी मत विजय फिटली भी समुन बात क्यों न हो मैं सुनने के लिए तैयार हूँ। तुम धमक हो। भी है वह साफ-साफ कह जाओ।

विजय—बड़ा संकट है यह! (नमस्कार करके) सुनिए देव यह मेरी पत्नी एक महीने के लिए मावके गई थी पर वहाँ एक बसु के यहाँ जाकर तीन महीने रही। मुझे इस पर संदेह हुआ। मैंने गुरुदेव से पूछा तो उन्होंने मुझे इसे त्याग देने के लिए कहा—

बासन्ती—(स्वगत) मेरा त्याग करने के लिए कहा गुरुदेव ने?

विजय—(बासन्ती से) हाँ हाँ त्याग करने के लिए कहा। (राम चंद्र की ओर मुड़कर) उरी समय गुरुदेव ने कहा—प्रब कैसे कहें?—दुर्गों ने जलस कहा कि सीता वही के बारे में भी घबोह्या के जोस ऐसा ही संदेह कर रहे हैं—जमा कीजिए देव। भाये के धम मेरे मुह से नहीं निकलते।

राम—कही उरी मत!

विजय—उन्होंने कहा—समु रामचन्द्र पूछने लो मैं उनसे भी यही कहूँगा—

राम—सीता का त्याग करने के लिए कहते?

विजय—(रामचंद्र की ओर चरणों पर मरतक रखके उठकर हाथ जोड़ते हुए) जी।

[राम चुप रहते हैं]

विजय—जमा कीजिए प्रभु—एक प्रब में क्या करूँ ?

राम—इसे त्याग दो।

बासन्ती—प्रमा ?

राम—इस त्याग था। इस रामराज्य में संदेह के लिए भी स्थान न रहे। निष्कलक चरित्र के साधार पर ही यह रामराज्य लड़ा है।

वासन्ती—(राम के चरणों पर सिर रखकर) प्रभु की आज्ञा मुझे स्वीकार है ।

[जाती है]

विजय—बास को क्षमा कीजिए देव !

राम—मैं तुम्हारा भ्रातरी हूँ विजय । लोकापनाथ के कर्मक से तुमने मेरी रक्षा की । जाओ ईश्वर तुम्हारा कल्याण करे । (विजय अपने तपता है ।) ठहरो विजय सुमंत को इतर मेव हो ।

विजय—(सख मर चुपचाप राम के मुख की ओर देखकर) सुमंत की को बुलाऊँ ? किछ भिए देव ?

राम—मेरी आज्ञा का पालन करो जाओ । (बहु नमस्कार करके जाता है । राम परेशानी में टहनते हुए) क्या करूँ कर्मण क्या करूँ ? मन दुःख में पड़ गया है । बड़ा विकल होता है यह लोकापनाथ ! जोय निषा करते हैं—क्यों निषा करते हैं वे ? सीता निर्वोप है यह मैं जानता हूँ तुम जानते हो बिन्दोने स्वयं धर्म परीक्षा नहीं बची बही तो यह निषा कर रहे हैं ?—क्या करूँ ? इस निषा की ओर दुर्भ्रंश करूँ या निर्वोप सीता को त्याग दूँ ?

लक्ष्मण—सीता का त्याग ! यह क्या कह रहे हैं आप ?

राम—यह बलवासी राम नहीं कह रहा है दशरथ का पुत्र राम यह नहीं कह रहा है दशरथ का विजैता भी नहीं कर रहा है यह । जोकारा बना क सिए किसी भी बात की पर्वाह न करने वाला समोप्या का राजा राम रघुनाथ पर धर्ममान करने वाला, रामराज्य का प्रबन्धक राम कह रहा है यह ।

[सुमंत जाता है । राम को नमस्कार करके हाथ जोड़े जाता रहता है ।]

राम—सुमंत की रघुबंध के कई राजाओं की सेवा करते-करते घायल हुए हैं । रघुबंध की धान यदि कोई जागता है तो घायल । मैं जो वृक्ष रहा हूँ उसका टोक-ठीक उत्तर दीजिए, किसी बात का संकोच न कीजिए—

सुमंत—ऐसा कौनसा धर्म प्रभु पर धा पड़ा है धाम ?

राम—यह कसौटी का समय है । रघुवंश की प्राण की प्राण सभी सभी पपीसा होनी । तनिक भी संकोच न करते हुए मुझे यह बतनाइए कि सीता के बारे में भोव क्या कहते हैं ?

सुमंत—यह प्रश्न प्रभु मुझमें न पुछें तो अच्छा होगा । मैं अपने कर्णों से लोगों की प्रवृत्ति देखता धा रहा हूँ । राज्यों की सुराई करने में मैं साधारण भोव सबधा तत्पर रहते हूँ । वह उनका खेज होता है—अपसत होता है । निधा क समाज मध्य में भी नसा नहीं होता प्रभु !

राम—मैं अपने प्रश्न का उत्तर चाहता हूँ । वह केवल निधा हों हो सकती है उसमें सरयास भी न हा उस निधा में अविच्छिन्न मनोवृत्ति की व्याकुलता भी न हो फिर भी वह निधा है चारो घोर फँस रही है लोगों के मन कक्षुपित कर रही है । साधारण जनता की मनोवृत्ति को वृपित करने वाला वह कमक मिट जाना चाहिए । बतनाइए सुमंत भी हो रही है न इस प्रकार की निधा ?

सुमंत—बहि में नहीं कहू तो सत्य को छिपाना होगा ।

राम—ठीक है न ? ता फिर धब में क्या करू ? राजा विसीप ऐसे समय क्या करत ? पितामह ने क्या किया होता ? राजा बखरम की—मेर पिता की मत्बनिष्ठ धापन रचय देखी है—उन सब ने ऐसे समय क्या किया होता ?

सुमंत—ऐसा प्रसय ही न प्राण जग समय ।

राम—अच्छा ? तो फिर रघुवंश के धयने बसनों को ऐसे समय क्या करना चाहिए इनकी परिपाटी बनाने का भार मुझ पर धा पड़ा है । विवेक की बठोर दृष्टि को सम्मुख रखने हुए मैं क्या निर्णय करू ?

सुमंत—यहाँ मेरी बुधि काम नहीं करती प्रभु ।

राम—नबमल सुम बतानो ऐसे समय मैं क्या करू ?

सम्बल—मरा प्रथ धात्रापामन है, किसी भी बात का निर्णय करने का मने कभी भी साहस नहीं किया ।

राम—मैंने निश्चय कर लिया। सीता का त्याग करने के प्रतिरिक्त इस समय मुझे और कोई भी मार्ग दिखाई नहीं देता।

सुमंत—यह क्या कह रहे हैं प्रभु? निर्योप सीता बेबी को धाप त्याग देने? प्रबल धमि परीक्षा द्वारा जिसकी मुबर्सुं ही कीर्ति प्रस्थापित हुई है उस प्रयोध्या की रानी का धाप त्याग करोगे? इसके बजाय धाप धमि परीक्षा की गाथा इन लोगों को क्यों नहीं बताते?

राम—क्या वे धमि परीक्षा की बात नहीं जानते? मेरे बहने से और क्या होगा? उही समय मैंने सीता को त्याग दिया था पर उसने धमि परीक्षा ही। योप का निराकरण हो गया स्वयं के बेवताघों ने उस पर पुष्पवृष्टि की इरीलिण मैंने उसे भपनाया। जिस महान् कार्य के लिए मैंने रावसु से मुझ किया था वह सफल हो गया। सीता के प्रति मोह उस मुझ का उद्देश्य न था। दुर्बलों का नाश करना था वह हो गया अब सीता राम के साथ रहे या न रहे सोच कस्याण की दृष्टि से दोनों बातें एक ही ही हैं।

सुमंत—अदमण भी धाप ही प्रभु को कुछ समझिए—

राम—इस समय में किसी की भी नहीं सुनूंगा। इस निश्चय का उन्मुसल होता ही चाहिए। धाव धमि परीक्षा का उत्सैस करके मैं सोचों का समाधान करन लूँ ता वे मुझ स्वार्थी कहेंगे। वे कहेंगे कि मुन्दर स्त्री के प्रति मोह के कारण मैं उसके योपों को जिया रहा हूँ। मुझ पर इन्द्रिय भोग्यता का आरोप लगाया जायगा। वह आरोप मुझ सहन न होगा। जिसका धन केवल यश है वह यश को स्वयं से भी भेन्ठ समझता है। बनबास में प्रमाणित कर दिया है कि इस राम को धरोर मुख का मोह नहीं है। अब यह दूसरी कत्तीगी है। जो समझन है कि सीता के सहवास के कारण मैं बनबास के दुःख सहन कर सका उनके समाधान के लिए मुझ सीता का त्याग करना चाहिए। इस प्रपवाद की दूर करने के लिए इसके प्रतिरिक्त दूसरा उपाय नहीं है। मैं ऐसा कोई प्राचरण न करूँ ना जिसमें रघुवंश को तनिक भी कलंक लगे। सुमन्त भी रप ठगार कीजिए

भूमि कन्या सीता

घोर सीता को ले जाकर वंश के पार छोड़ आइए। सोचों में कैसी दुर्ग
इस अपकीर्ति को सहन करना मेरे लिए असम्भव हो रहा है।

सुमंत—नहीं प्रभु, नहीं। धाञ्जा वंश का श्रेष्ठ मुझे स्वीकार
उसके लिए प्रभु को बगड़ बने बह में मोहूँना पर बह बुझकर काम
हाथों न हो सकेगा। प्राण इतने सालों से मैंने रघुवंश की सेवा की—
वया रघु के बचनों को बगबास का मार्ग दिखाने के लिए ? कंकरी मात
की धाञ्जा से जब धापने बगबास स्वीकार किया था उस समय इस सुमंत
को ही सारथी का काम करना पड़ा था घोर प्राण बर्मबती सीतादेवी को
भी बगबास के लिए मेड़ने का भार धाप इस सुमंत पर क्यों डाल रहे हैं ?
नहीं प्रभो नहीं। प्राण बगड़ स्वीकार कर भू या पर धापकी इस धाञ्जा
का पापत मुझमें न हो सकेगा। मुझे धाञ्जा हीजिए।

[राम को नमस्कार करते चलता जाता है। राम काल भर तोकते
हुए ठहलते रहते हैं।]

राम—सबमण !

सबमण—धाञ्जा हो ?

राम—यह लोकाराजता एक भयकर परीक्षा है। इसमें भयने बरण
का नेत्र नहीं किया जा सकता। समता मोह एक घोर रण बना बड़ा
है। एक त्वाय—विस्वाची त्वाय के बिना लोकाराजता नहीं होती।

सबमण—ठीक है, पर क्या धाप नहीं सोचते कि इस बारे में ठिक
परिचार हो रहा है ठिक भीमता हो रही है ? यह मैं समझता हूँ
कि राजा का चलन निरापवाद जाना चाहिए, पर यह लोकाराजता क्या
है ? घोर बना यह लोकाराजता साधारण है ?

राम—एक घटर भी न कहो जो मैंने निश्चय किया है यह विक्रम
में भी नहीं बचल सचता।

सबमण—माता सीता बर्मबती है—

राम—हाँ उसे बगबास का शोहर है—

सबमण—यह बगबास श्रेष्ठिक है—यह त्वाय नहीं।

राम—एक पाप भी न कहो। सीता का त्याग मैं धर्म्य करूँ या कोई कुछ भी करे पर मेरा निश्चय धर्म नहीं बदलेगा। इसके परचाठ को कोई भी इस बारे में मेरा निश्चय बदलने का प्रयत्न करेगा उसका पस भेकर मुझ से विवाद करना चाहेगा—फिर चाहे वह कोई भी हो—मैं उसे अपना शत्रु समझूँगा। बोलो लक्ष्मण मेरी आज्ञा का पालन क्यों नहीं करता ?

लक्ष्मण—पिता की आज्ञा से परशुराम ने माता का धिरेन्द्र किया था। पिता की आज्ञा मुझे स्वीकार है।

राम—आवास ! धर्म ऐसा करो—नवापार जाकर स्वाम देखने की उसे प्रवृत्ति दृष्ट्या हुई है। उसकी दृष्ट्या पूरी करम का भेने की उसे बचन दिया है। उसे यह समझ कर कि मैं अपना वह बचन पों पुरा कर रहा हूँ अब मैं ले आओ धीर संभावार पहुँचते ही उसे बताना कि मगर बाँधियों ने लबाए कर्मक को डालने के लिए राम ने तुम्हें स्वाम दिया है।

लक्ष्मण—(सप्रक होकर) ऐसा ही बतलाऊँ ?

राम—हाँ-हाँ ऐसा ही बतलाओ। आपियों के आश्रम के पास उसे छोड़ कर—

लक्ष्मण—ओ आज्ञा।

[लक्ष्मण जाने को है तभी उर्मिला प्रवेश करती है]

उर्मिला—ठहरिए !—

राम—कौन—उर्मिला ?

उर्मिला—जी। आपके आवाचारक छोटे भाई की पत्नी मैं उर्मिला हूँ।

राम—इन समय तुम यहाँ कहीं ?

उर्मिला—बपने पति की छाया हूँ मैं (लक्ष्मण जाने लपते हैं। उन से) ठहरिए !

लक्ष्मण—नहीं मुझ आज्ञा हुई है कि—

उर्मिला—मैं जानती हूँ। मैं छाया हूँ घापकी। जो घापने मुला वह मेने भी सारा मुन भिया है। (राम से) देख पहले मेरा कहना मुन सीबिए फिर इन्हें जाने की आशा दीबिए।

राम—ठहरो सबमण—

उर्मिला—इस समय जो ये कह रही हूँ वह घापके छोटे भाई की पत्नी के नाते में नहीं सीता की बहन के नाते में भी नहीं कह रही हूँ अतिकार के वेरो तसे कृपली जाने वाली स्त्री जाति की प्रतिनिधि के नाते। राधा रामचन्द्र यह घाप ने क्या सोचा है? घाप सीता का त्याग करने ?

राम—कहती हो कि तुमने मरी बातें सुनी फिर मेरी प्रतिज्ञा मही सुनी ?

उर्मिला—जी सुनी। घाप मुझ सबु समझेंगे—सबु की दिया जाने वाला बन्ध घाप मुझे तें तो मैं उसे सह्यं क्षिराचार्य कर्कसी पर घापके इस कठोर निर्बन्ध कुर्य के बिच्छ पहले घाप को बार बातें मुताळेंबी।

राम—उर्मिला क्या तुम बारा भी मेरा हृदय नहीं पहचानती ? सीता को त्यागने में क्या मुझ भान्द्र हो रहा है। यह एक अत्यंत कठोर परीक्षा है। सोकाराचना के लिए की हुई यह एक आत्मसाधना है। सीता ने एक ही बार परीक्षा ही प्रत्यक्ष अग्नि की ज्वाला से भुनसकर वह एक ही बार गिकनी पर सेटी यह प्रतीक्षा उच अग्नि परीक्षा से भी कठिन है इस बात की तुम्हें कल्पना भी है कि प्रियमत्नी के विरह की मड़कती हुई ज्वाला में मुझे जग बर भुनसना पड़ेगा ?

उर्मिला—घापको भी कल्पना है कि ऐसी ही परीक्षा सीता बहन को भी बेनी पड़ेगी अपनी इच्छा के बिच्छ बेनी पड़ेगी ? पहले की परीक्षा स्वेच्छा में थी यह अबबंस्ती है—अत्यंत निर्बन्ध घोर कठोर अबबंस्ती है। क्या की कृति के मुख से वह कठोर निष्ठा कहे गिकना ?

राम—आकाराचना के लिए। इस सोकाराचना के सामने जब

मुझे क्या मामा, मुक्त घाति की चिंता नहीं तक सीता की मसुना ही क्या ?

उर्मिला—लोकशासन के लिए क्या छोड़िए, मामा छोड़िए, मुक्त घाति छोड़िए, सीता को भी छोड़ दीजिए, पर रामराज्य के संस्थापक रघुवंश के हीपक राम क्या सत्य का त्याग करने ? स्याम का त्याग करने ?

राम—एक शब्द भी न कहो ! अच्छी तरह विचार करके ही मैं इस निर्णय पर पहुँचा हूँ ।

उर्मिला—अच्छा ? तो सीता बहन को यहाँ बुला लीजिए । उसे बताइए । मुझे विश्वास है कि आपके बचन के लिए वह बड़े से बड़ा त्याग करेगी । वह त्याग करने का धक्का उसे दीजिए । उस त्याग का धंका उसे मिलने दीजिए । —

राम—यह धक्का नहीं हो सकता—

उर्मिला—क्यों ? राजसू जैसे प्रणव बोझ का मास करने वाले महा पराक्रमी राम को सीता को सामने बुला कर कहने में मजबूत लपता है ? इस प्रकार क्षिप्र कर बाण मारने के लिये सीता बाली नहीं !

लक्ष्मण—उर्मिला यह मर्यादा का धर्तिक्रमण हो रहा है ।

उर्मिला—जी, मर्यादा छोड़ कर ही मैं बोल रही हूँ । चौत्रह साल मैं बिरह की ज्वाला में जल रही थी । उन मर्यकर यातनाओं की अनुभूति मुझे है इसीलिए बोल रही हूँ । सीता बहन ने भी उस बिरह का अनुभव किया है पर केवल वह महीने उस कः महीनों के बिरह के समय जैसे पति से फिर से भेंट होने की धापा भी पर वह बिरह दमन है । वहाँ धापा के लिए स्थान नहीं । उस समय राजसू उसे अचरबंती से क्या का उतनी ही राजनीय अचरबंती से धाव धाप उसका त्याग कर रहे हैं । धाजापालन के बट के नीचे बड़े हुए मरे इस पति द्वारा धाप उसे निर्बन्धित कर रहे हैं । अपने इन धाप का मागी धाप इन्हें क्यों बना रहे हैं ?

लक्ष्मण—उर्मिला मेरे बटपालन पर तुम धापाव न करो । राम

बासन्ती—बहु देखिए उठ पार देखिए, बहु देखिए एव जा रहा है धपोध्या की घोर ।

सीता—सच ! वे क्यों इस प्रकार चले गए ? मुझसे कहा भी नहीं । मैं यहाँ धपेली हूँ इसका उन्होंने बिचार भी नहीं किया ? मुझे इस प्रकार छोड़कर क्यों चले गए ?

बासन्ती—हाँ छोड़कर चले गए ।

सीता—क्या कहती हो बासन्ती ?

बासन्ती—बिठना बठोर होता है पुरुष का हृदय । दया ममता तो दूर रही साधारण मनुष्यता भी नहीं ।

सीता—क्या कह रही हो बासन्ती ?

बासन्ती—जी छोड़कर चले गए । तदमग मुझ छोड़कर चले गए ?

सीता—क्यों ?

बासन्ती—राजाजी की ।

सीता—राजाजी की ? कहीं के राजा ने यह धाजा की की ?

बासन्ती—धापोध्या के राजा की रामचन्द्र की से—उन्हींने यह धाजा की की ।

सीता—मैं धावाध्या की रानी हूँ—

बासन्ती—जी हाँ—घाण धावाध्या की रानी है—राजा नहीं । धाजा दिया करता है राजा । इस राजाजी ने ही धापोध्या की रानी का सीमा पार किया है ।

सीता—किस निग ? मैंने कौनसा धपराध किया है ?

बासन्ती—राजा की इच्छा ! (हाथ भर दबकर) सोचापबाद के मगे हुए काँक की मिटाने के निग—सोचापबाद के निग—रामा एव ने धरनी धर्यापिनी वा यह दण्ड दिया है ।

सीता—साचापबाद ? कैसा साचापबाद ?

बासन्ती—राजा के यहाँ छः पहीने रहने के कारण सोचापबाद ।

सीता—धमिधरिघा देने पर जी ?

बासन्ती—वह मही किमत देखी है ?

सीता—घोर सोरों का यह कहना धीराम को बँच गया ?

बासन्ती—यह मैं नहीं जानती । उन्होंने एकपम तप किया—

सीता—कि मुझ त्याग होने ? नहीं कुछ सोपों के केवल निर्या
करण के कारण ही क्या मुझ पर दण्ड दिया गया है ? यह तुम्हें
किचन बताया ?

बासन्ती—उमिता बेबी ने । उन्होंने मुझ यहाँ भजा । वे प्रभु के
पाव मयङ्क पड़ी थी पर उसका कुछ भी परिणाम नहीं हुआ ।

सीता—मेरे लिए उमिता ममही ! घोर उसका पति इन तपोवन
में मुझ धकेली को छोड़कर बिना कुछ बोले भाग गया ! माय्य का
बँधा बिचित्र खेल है यह । घोर यह एक साधारण दासी अपना बरबार
छोड़कर मेरे लिए यहाँ बँधी आई ।

बासन्ती—नहीं बेबी मेरे ही कारण यह सब हुआ है ।

सीता—तेरे कारण ? ठेरा इससे क्या सम्बन्ध है ?

बासन्ती—मेरा भी त्याग किया है मेरे पति ने । राजगुरु की धाडा
मे—प्रभु रामचन्द्र जी की आज्ञा से—

सीता—मुग के संसार नष्ट करने की यह बुद्धि धायोष्या के साम्राट्
को बँध हुई ?

बासन्ती—यह रामराज्य है । प्रभु की प्रतिज्ञा है कि यहाँ के प्रत्येक
व्यक्ति का चरित्र निष्कलंक रहे ।

सीता—इसीलिए मुझ निवास दिया ?

बासन्ती—ही बेबी ।

सीता—तो फिर यमोवस्था की बासनाओं की पूर्ति के लिए मुझे
तपोवन भेजन की बात सत्य नहीं है ?

बासन्ती—उसम बातों काम हो गए । बासनाएँ भी पूरी की गईं
घोर दण्ड भी मिम गया ।

[सीता निकट एक अनाच्छाद पर बैठ जाती है । मुझ सी वह लख मर जैसे ही बैठी रहती है ।]

सीता—मुझे दण्ड मिला ।—कौई भी अपराध न करत हुए भी मुझे दण्ड दिया गया । फिर भुक्त में जो वासनाएँ बाध उठी थी वह कैसी थी ? दण्ड की थी या उपोवन में जाकर पुराने धाम्नाय की स्मृति बनाने की थी ? कैसी है ये बर्माबस्वा की इच्छाएँ ! कैसा है दण्ड ! वह बात मुझसे नहीं क्यों नहीं कहो ? मे लोनों के सामने जाकर खड़ी हो जाती । अपनी बात उन्हें सुनाती । मरत कहता उन्हें न बँचता तो मे स्वयं ही राज्य का स्थाप कर दती । स्वेच्छा से बतवास स्वीकार करती या प्राण ही दे देती । नहीं नहीं ! यह मैंने क्या कहा ! मे बर्मावती है । प्राण देन का मुक्त अधिकार नहीं है । रजुवस के अंकुर की हत्या मेरे हाथों कैसे हो सकती है ।—

बासन्ती—घात होइए बेबी घात होइए ।

सीता—क्यों इस प्रकार मुझे भोज्या दिया गया ? क्या मे समझते थे कि छाफ-छाफ कह देने से मे उनकी धात्रा का पालन नहीं करूँगी ? धीर धात्रा का पालन न करके भी मे क्या करती ? (बघाती होकर) यह क्या किया बेब क्या किया ? निष्फलक होने के लिए क्यों अपने पर वह क्या कसक लगा लिया ? दुर्बलों ने की हुई निन्दा को क्यों धापने इतना महत्व दिया ? (उठकर बासन्ती के पसे लिपट कर) क्या कर्क बासन्ती क्या कर्क ? कहाँ जाऊँ ? अब किसका धाधन लू ?

बासन्ती—मैं जो हूँ ?

सीता—तू क्या करेगी ? तुफ बर नहीं, मुझ भी बर नहीं । बदबल है पर किसी का सहारा नहीं !

बासन्ती—ऐसा क्यों कहनी है बेबी ? दिन रात मे धाधकी ठेका करूँगी । बनों में भटक मर कर मूक फम साऊँगी—

सीता—पर हम रहेगी कहाँ ?

बासन्ती—ये सामने अधियों के धाधन बिन्नाई पड़ रह है । अधि

रामा नहीं कोई न कोई हमें आश्रय दाय्यम देया ।

सीता—प्रयोध्या की सभ्राणी में मैं किसी के द्वार भीख माँगने जाऊँ ? पराए धाय्य के लिए मैं याचना करूँ ? नहीं चाँदनी उस समय भी हमने स्वेच्छा से ही बनवास स्वीकार किया था पर उस समय भी हमने कभी किसी के सामने याचना नहीं की । उस समय हमने अपने हाथों से पर्णकुटी बनाई थी अपना घर बनाया तभी उसके नीचे आश्रय लिया था ।

वासन्ती—अभी हम घर भी करेंगी ।

सीता—यह कैसे हो सकता है ? उस समय तो सामर्थ्यवान् पुरुषों का आचार था । उन्होंने कष्ट किया था मैंने तो केवल सह्यायता की थी । मैं घर ऐसी दुर्बल हो गई हूँ—घोर तू भी क्या कर सकती है ? बाँधी होने पर भी तुम राजगृह की बाँधी हो । इतना सास बनवास में रहकर हमें कष्ट उठाने का अभ्यास हो गया था तब तुम प्रयोध्या में भी बनवास के वे कष्ट तुम कैसे योग्य होगी ? (रत्नलक्ष्मण से) यह क्या किया देव ? अपनी इस साहसी पत्नी को बाँधित रखकर मृत्यु की कठोर वातनाएँ क्यों दे भी आपन ?

वासन्ती—घान्त होइए बेबी, घान्त होइए ।

सीता—कैसे घान्त होऊँ ? नाच होते हुए मैं घनाय हो गई रानी होते हुए निःकारित बन गई घर-बार होते हुए निराधार हो गई । कीन इस समय मरी रसा करैगा ?

[शम्भूक घांटा है । सीता को देखते ही बौड़कर उसके पैरों पर सिर रख बैठा है ।]

शम्भूक—मा !—मा !—क्या इस दोन को दगल देने घाई हो ?

सीता—नहीं बरम तुम सी ही मैं भी निर्वासित हूँ । तुम जैसी ही राज दण्ड की पात्र बन गई हूँ । मैं तुम से ही घनाय हो गई हूँ—घन घण्ट हो गई हूँ ।

शम्भूक—घोर तुम चाँदनी ?—

बातन्ती—मे जी ।

धम्बूक—वह मे क्या नुन रहा हूँ ?

सीता—यस सत्य है । मे किमी का भाषय दू ह रही थी । उस बन बान मे पति के प्रेम का खन मेरे मस्तक पर बा । इस बनबास मे—

धम्बूक—इस पुन का तुम्हे लाम हुआ है मा ।

सीता—नुन मा । (बरा होकर) उगमे सबी दर है ।

धम्बूक—क्यों मा ? बस्यु होमे के कारण मुझे प्रपाज समझनी हो ? पुन बनने के लिए प्रपाज समझनी हो ?

सीता—नुन भाई वो हो भूमि-कन्या के ।

धम्बूक—बहुन समझकर मिलन क्या बा पर बका बहु बहुन नहीं मा पी बीना की बलिठा की या राज बबन को त्याग कर क्या इस पुन का समाचार लेन पाई है ?

सीता—नही धम्बूक नहीं । यह निर्वासितों की बनी बनी है यहाँ ।

धम्बूक—पर क्यों ? किमने निर्वासित किया पापको ?

बातन्ती—सभाद न । लोकापपना के लिए !—क्या पापा प्रेम के साब-साप धिय पति को भी गसना करने वाले राजा राम मे ?

सीता—बस करो यह पापा । धम्बूक अब हूमे यहाँ बसती बनाकर रहना है । पास-पास ऐमा कोई स्वान है ?

धम्बूक—यह बास्मीकि मनी का प्राधम है । उन्हीं मे मुझे प्राधम दिया है । रामायण क रचियता क्या वे सीता बनी को प्राधम नहीं रहे ?

सीता—बास्मीकि बुनी । रामायण के रचियता ? प्रथम बनबास मे हमने कभी यह प्राधम नहीं देखा बा । तुमने कहा वे रामायण के रचियता है ?

धम्बूक—जी हाँ । रामचरित की मरिच्य बापी उन्नाम पहने ही की पी । यही बहु रामयण है । (बलबनर करकर) फिर बलिए न बनके यहाँ ? (सीता चुप रहती है ।) बगती है ?

सीता—बही धम्बूक यह प्रपोप्या की रानी जग्मबर नबको बतो

ही पाई है उसने कभी किसी से कुछ मांगा ही नहीं है !

बासंतो—बास्मीक मुनि बड़े बयासु हैं। उनके यहाँ जाकर कुछ माँगने की आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी।

तीता—मुझे किसी के भी यहाँ जाकर कुछ नहीं माँगना है। तु इस शम्भूक के साथ जा बासंतो। यदि मुझ किसी के पास कुछ माँगना पड़ा तो मैं अपनी माँ से माँगूगी। संसार में ऐसी चीज ही बस्तु है जो मरी मूमि माता नहीं ले सकती ? तुम दोनों जाओ। (जाती है।)

बासंतो—कहाँ जाएंगी ये ? ठहरा शम्भूक यही ठहरो। मैं देख पाती हूँ वे कहाँ गई हैं।

[बहु सीता के पीछे-पीछ जाती है। शम्भूक लक्ष्यता जिस घोर से दोनों गई हैं उस घोर बैलता रहता है दूसरी घोर से मुमन्त प्रवेश करता है।

मुमन्त—(शम्भूक से) इस स्थान का नाम मुझे बताओये बेटा ?

शम्भूक—कीन ? मुमन्त जी ! (उसके पैरों पर लस्तक रखके खड़ा होकर) यह ऋषि का आश्रम है मुमन्त जी।

मुमन्त—बेटा मैं बूढ़ हो गया हूँ। मुझे ठीक से बिछाई नहीं देता। मुझे एक बात बताओने ? कभी इधर किसी तेजस्वी स्त्री को घाटे देखा है ?

शम्भूक—हाँ। मैं समझ गया था कि आपके बारे में पूछ-छाछ कर रहे हैं। सीता देवी का वृत्तांत ही चाहिए है न आपको ?

मुमन्त—हाँ बेटा तुम जानते हो ?

शम्भूक—हाँ मुमन्त जी वे यही पाई थी। आप उनसे मिलना चाहते हैं ?

मुमन्त—कैसे कहूँ कि मिलना चाहता हूँ ? इनका ही नाम मेने से कि वे समुद्रम है उन्हें आश्रय मिला गया है और समाधान हो जायगा।

शम्भूक—(अंशुली उस घोर उठाते हुए) वह देखिये मोठा देवी ही नदी क किनारे-किनारे जा रही हैं। बासंतो उनके साथ है।

सुमन्त—मुझे ठीक से दिखाई नहीं देता बैठा बैठा । बासंती है न उनके साथ ? तब ठीक है । मेरी धापी बिन्ता गिट गई ।

शम्भूक—उन्हें यहाँ से भाऊ ? (ठहूरकर)—या धापी मेरे साथ बसते हैं ?

सुमन्त—नहीं नहीं । उनके सामने जाना भी मेरे लिए कठिन है । तुम चीन हो बैठा ?

शम्भूक—मैं एक बस्तु हूँ । मेरा नाम शम्भूक है ।

सुमन्त—राजगुरु की आज्ञा से निर्वासित शम्भूक क्या तुम्हीं हो ?

शम्भूक—हाँ सुमन्त भी प्रभु की कृपा के लिए अयोध्या प्रमाखित दुष्मा में ही बह गुरु हूँ ।

सुमन्त—घोर बासंती भी यही भाई है ? उसे कैसे पता लगा किसी का ?

शम्भूक—मैं नहीं जानता सुमन्त भी मरी घोर उनकी मोंट धनी-धधी हुई है ।

सुमन्त—उनसे तुम्हारी मट हुई ? फिर वे क्यों बसी गई ?

शम्भूक—बहु पाप उन्हीं से मुक्त कीजिए, मैं मैं बसता हूँ पापको उनके पात ।

सुमन्त—नहीं नहीं । उनका बुलावत मिमा मेरा काम हो क्या बस इनका ही जानने के लिए मैं यहाँ आया था ।

शम्भूक—पापको प्रभु में भेजा था ?

सुमन्त—नहीं शम्भूक समझ लो मैं अपने पाप हीं धा गया । मेरा बुझा प्राण व्याकुल होने गया हमलिए धा गया । यह निर्वसता का काम करने का भार प्रभु ने मुझ पर छोड़ा था । मैंने उसे धस्वीकार कर दिया प्रभु की आज्ञा का उल्लंघन किया । प्रभु की सेवा में धब में बधिय हो गया हूँ शम्भूक ।

शम्भूक—यानि ? क्या प्रभु ने पापको भी निर्वासित कर दिया है ?

सुमन्त—नहीं शम्भूक उन्हींमें मुझ धपनी सेवा से मुक्त कर दिया है ।

मान इतने सालों से रक्षुबंध की सेवा करते-करते मेरे बाल सफेद हो गए पर ऐसा अपमान सहन करने का दुर्भाग्य मुझे नहीं प्राप्त हुआ था। क्या इसीलिए अभी तक मैं बीजित था यह सोच कर मेरा हृदय टुकड़े टुकड़े हो गया। किठना कठोर है राजाराम का हृदय !

सम्बूक—मुझे भी उसका अनुभव है।

सुमंत—एसी बात नहीं सम्बूक। प्रभु कर्तव्य के स्थान पर कठोर है। यह निर्वयता नहीं। लोकापचना के लिए महान् धारमाधों की ऐसा ही कठोर बनना पड़ता है।

सम्बूक—तपोवन में पला हूँ राजनीति की ये बात मैं नहीं जानता।

सुमंत—राजनीति की बातें नहीं सम्बूक। बिड़ पर राज्य-कार्य चसाने का कामिस्व होता है उसका माय निरन्तर कठिन रहता है। हम हैं सामान्य लोग सामान्य व्यक्ति जिसे निर्वयता समझता है वह राज्य कर्ता की स्वाय निष्ठुरता होती है। फिर भी उसे तबाबत स्वीकार कर लेना कठिन होता है इसीलिए तो मैंने प्रभु की आज्ञा की श्रमज्ञा की। श्रमज्ञा की धीर उसके लिए बख्त भी मोगा पर भी न माना। घोषा न जाने क्या बीती होगी सीता देवी के साथ ? धीर तत्कास रथ तैयार करके खोजता चला गया।

सम्बूक—पर शयोध्या के राजप्रासाद में क्या किसी पर घसर नहीं हुआ ?

सुमंत—घसर न हो वह कैसे हो सकता है ? चारों धार उधा चीगता छावो है नहीं। कोई किसी से बात नहीं करता कोई किसी की घोर नहीं देखता एक दूसरे की कोई पूछताछ नहीं करता। बुरी घसा हो रही है उस राजपूत की।

सम्बूक—दैव की मूर्ति क जसे जान से शयोध्या निस्तेज हो गई है तो इसमें धारचय की क्या बात है ? (बासन्ती घाली है।) माधो बासन्ती घन्सा हुआ वो मुम था गई।

बासन्ती—(सुमन्त को नमस्कार करके) सीता देवी की बासी बासन्ती सुमन्त जी को नमस्कार करती है ।

सुमन्त—क्या धाखीबाँव पू में तुम्हें ? 'बिरंजीब हो' कहें तो तुम बर-बार जो चुकी हा । सोमाप्यवती भव' कहें तो पति ने तुम्हें त्याग दिया है । धाखीबाँव बना ही है इसलिए कहता हूँ सीता देवी की सेवा करके, कृतार्थ हो ।

बासन्ती—धाप यहाँ कैसे धाए ?

सुमन्त—मुझ उमिसा देवी ने मेजा है । मेरा प्राण तो ब्याकुल हो ही रहा बा । धमी तक राजमाताओं को भी कोई समाचार नहीं मिला बा । उन्होंने भी मन्त्र जाहा ही चारो घोर धक्का सा लग रहा है । महमण जी का पता सगला जना धाबा हूँ । परसे किनारे पर महमण जी रथ बापिस ने जाते हुए मिसे से उगहन इस खान का पता बताया । धक् बापिस जाकर क्या बताऊँ ?

बासन्ती—जिसे ? प्रभु को ?

सुमन्त—प्रभु राजकार्य में उचरु हए हैं । उन्हें कही भर भी धक्का नहीं मिलाता । उनके पास इस सब के लिए समय कहाँ है ?—कहाँ है सीता देवी ?

बासन्ती—(धौगुली से इशारा करके) यह दक्षिण से गया की बासु में बठी हुई हैं । उन्हें समझाने का मैंने कितना प्रयत्न किया पर से धमना हठ छोड़ने के लिए तैयार नहीं । पर्ववती होन त कारण उगका स्वास्थ्य नाडुरु हो गया है । यह धाम्बूक कह रहा बा बास्मीकि जी के धामध में धर्म—

सुमन्त—क्या यह बास्मीकि ऋषि का धामध ह ?

धाम्बूक—हाँ सुमन्त जी यह बास्मीकि मुनि का धामध है । राजा दशरथ के मित्र राजा जनक के धास्मीय तथा रामावग क रविपना बास्मीकि मुनि का ही यह धामध है ।

सुमन्त—तो अब मेरी सारी जिंदा मिट गई। सीता देवी को यहाँ प्रायम प्रायम मिल जायगा।

वासन्ती—प्रायम तो मिल जायगा पर प्रायम माँगने के लिए कौन जान ? प्रायम के लिए सीता देवी किसी के पास जाने के लिए तैयार नहीं। बर्माबन्धा के कारण उनका स्वास्थ्य बैसे ही नाशुक हो रहा है और उस पर यह हठ। क्या किया जाय अब ?

सुमन्त—उनका कहना ठीक है। वे किसी के भी द्वार पर नहीं जायगी और मैं भी यही कहूँगा कि उन्हें किसी के द्वार पर न जाना चाहिए। वे रानी हैं राजा राम की रानी हैं वे स्वामिमान कैसे चुला दें ?

सम्बूक—बड़ा विफट होता है अजिमान—यह स्वामिमान। प्रायम प्रतिष्ठा के इस अजिमान का रोकना कितना कठिन होता है इस बात की मुझे भली भाँति खबर है।

वासन्ती—तो इसमें से मार्ग कैसे निकले ?

सुमन्त—एक उपाय है, यदि सम्बूक चाहे तो।

सम्बूक—क्या उपाय ?

सुमन्त—बास्मीकि मुनी को ही यहाँ लाया जाय। वे ही सीता देवी से प्रायम में चलने के लिए कहें। उनके चरण की अवहमना करना उनके लिए कठिन होगा। अब मैं जाता हूँ। किध मुह से तुमसे बहूँ सम्बूक—प्राणों पर बीत सी रही है। तुम रागराज्य के अपराधी हो—निर्वासित हो—और तुम्हीं से प्रायम करने का समय मुझ पर आया है ? कौन बुर्बाय है ! अब इस बुर्बाय में से ही मार्ग निकालना है। इसका बाधित में तुम्हें सीगठा है। तुम्हारे 'हाँ' कहते ही मैं निश्चित होकर अयाध्या सीट आऊँगा। जमिना बची अहित सारी माताएँ मरे सीटन की ओर दृष्टि लगाएँ बीटी होवी उन्हें यह समाचार देना है। याद रखना सीता देवी को यहाँ बास्मीकि मुनी के प्रायम में प्रायम मिल गया है यह सम्बूक ही में यहाँ से आ रहा है।

[एकदम जना जाता है ।]

सम्बूक—नमस्कार करने के लिए भी इन्होंने समय न दिया । इतनी क्या जल्दी थी ?

बासंतौ—वे देवी के सामने जाने से डर रहे थे ।

सम्बूक—ऐसा क्यों हुआ ? यह दुबारा बनवान उनके हिस्से में क्यों कर आया ?

बासंतौ—देवी रामायण के यहाँ से माह तक बरिनी थीं । पुरवातियों ने देवी पर सविह करणा प्रारम्भ किया—

सम्बूक—देवी के चरित्र पर सविह ?

बासंतौ—हाँ । सारी प्रसोष्या जब इसी बात की खर्चा करने लगी तो प्रभु रामचन्द्र बड़े संकट में पड़ गए और उन्होंने देवी को स्थाप किया ।

सम्बूक—यही है वह भोकारावना । कितना कठोर है यह जाना । जब मुझे मने पाए हुए बण्ड के बारे में तनिक भी खेद नहीं । जहाँ प्रत्यक्ष तन्नाही को बण्ड मिसता है । परराय साबित हुए बिना ही केवल सविह पर बण्ड मिसता है । वहाँ से तो प्रत्यक्ष धाराधी हैं । बड़ाए जर्म की दृष्टि से दुःखारी—मुझे वह बण्ड मिसा ही पादचर्म किस बात का ? मैं समझता हूँ—

बासंतौ—ठहरो सम्बूक । वह देना सीता देवी इधर ही पा रही है । सभी जाओ और बास्मीकि मूनी को जल्दी से से पाया ।

[सम्बूक जल्दी-जल्दी जाता है । बासंतौ चुपचाप कुछ देर ताबने देखाती रहती है तभी प्रत्यक्ष प्रान्ति से पीने-पीने केवल रखती सीता प्रवेश करती है ।]

सीता—धन्यकार ! इस धन्यकार ने मुझ चारा घोर से जफ़ किया है । नहीं मार्ग नहीं दिखाई पड़ना । ना कामती धन मुझसे यह सहन नहीं होता । जीवन समाप्त हुआ सा लग रहा है मुझ । कहीं वह बनवान घोर नहीं यह बनवान । कितने उत्साह से घाँबी ने ! वे पुरानी स्मृतियाँ । इंगी गवा के तटाक पर मैंने कितने धान्य से बीड़ाएँ

की थी ! उसी धानत्व का दुबारा अनुभव करने के लिए कितन उरसाह दे नहीं पाई थी ? कहीं क्या वह धानत्व ? क्या दुबारा वह भाग्य मिलेगा ही नहीं ? गया क उष निर्मल प्रवाह की घोर टकटकी बंधे बैठी थी । सहर्ष पर सहरे उठ रही थी । वायु के मंत्र भ्रोकों से उष कीमें पानी पर मधुर-मधुर तरंगें बन रही थीं ! पर इधर मरे हृदय में विचलितों कड़क रही थी । मन बढ़ा उत्तेजित हो उठा या बाधती । क्या कि दोड़ती हुई जाऊँ घोर गर्भा में समयाऊ —

बासंतौ—आपत्ति टले ! यह क्या कह रही हैं देवी ?

सीता—सण मर ऐसा क्या प्रवच्य । अपमान की अनुभूति से भावस हुए हृदय से सख भर के लिए ऐसी अनुभव पुकार उठी प्रवच्य ! पर उमी सोचा कि किस प्रकार में राम की प्रिय पत्नी हूँ उसी प्रकार क्या उसकी प्रिय पिण्या नहीं हूँ ? उन्होंने मेरा त्याग किया प्रवच्य पर वह करते समय क्या उनके धर्म-करख को यादनाए न हुई होंगे ? उन यादनाओं का अनुभव में न कर सकू तो फिर मैं उनकी प्रयागिनी कैसे ? उन्होंने वह सब सहन किया धीर में एक मीठ की भाँति धात्म पाठ कर्क ? संज्ञा में मैं बाधक छ. मास तक विरहानस में बस रही थी । उन यादनाओं को तब मेंने सहन किया । वह मेरा प्रथम अनुभव था । किस प्रकार छ. मास सहन किया उसी प्रकार सब प्राचीन सहती रहूँगी । पूर्वबंध का प्रकुर मर उधर में है मुझ उसे बनाए रखना चाहिए । पूर्वबंध का वह प्रकुर उत्पन्न होते ही सूर्य की घोर दृष्टि बनाए मैं प्राचीन तपस्या करूँगी धीराम के महाविद का फिर एक बार दर्शन करूँगी धीर उसके पश्चात् ही इस बेह का त्याग करूँगी । डरो मत बाधती, मैं धात्मपाठ नहीं करूँगी । भविष्यता पर मुझ विश्वास है । मैं भीड़ नहीं हूँ । प्रत्य इतना ही है कि मरी रजा कैसे होगी ?

बासंतौ—आपन धनेक लोगों को धाप्य दिया है क्या उसका कुछ भी फल न मिलेगा ?

सीता—क्या उस की माया से ही मैंने साधव दिया था ? जो कुछ कर्मस्य समस्त कर किया उसके बचने की धोखा में क्यों कर सक ? (निश्चान छोड़कर) बक क्या है प्राण—

बासंती—प्रयाणा में चारों ओर हाहाकार मचा होया ।

सीता—यब धयोप्या की पाह ब विनाधो । धयोप्या ने मुझे जो बिना धोर मैने प्रयोप्या को । धयोप्या को पाह करतो रही तो भी न सङ्गी मैं । बह सब यब न रहा । यह मेरा दूमरा जन्म है । प्रथि वरीला के पबसात बह दूमरा जन्म था धोर यब बह तीसरा जन्म है । पूर्व जन्म की भी किसी को पाह रहता है ? बड़ी बात है । उस पुराने इतिहास की बार बनाए रहनु तो मैं इस नए जीवन को सङ्कल न कर सकू पी । (अरन भर टहुरकर) क्या ज्ञान वाला है यब ? कुछ बीत चुका है बतमान इस प्रकार दुःखमय है । भविष्य का दुःखमा बिना भी धाँकों के सामने नहीं घंटा — क्या बक ? मुझ कोन इस घबकार में से बचै बिनसएया ?

[धावे धावे सम्बूध धीर उसके पीछे बाल्मीकि प्रवेश करते हैं ।]

सम्बूध—(सीता के निरुद्ध आकर) या ये बाल्मीकि मुनि—[सीता एकदम आकर उनके चरखों पर मस्तक रखती है]

बाल्मीकि—मुपुबवर्ता भव ।

सीता—तो क्या कल्पवृक्ष के तीव्र बीजे भी मैं ?

बाल्मीकि—तुव सर्वथा ही कल्पवृक्ष के भीव ही बीटी गी हो ।

सीता—उन सबक हम यहाँ प्राण ध पर धारक रवान नहीं हो पसे पी । पाह मान धाया है तो दुर्भाग्य के समय

बाल्मीकि—गया क्यों बहती हो बालमे ? मैं तुम्हारी ही प्रतीक्षा कर रहा था । इस प्रकार धमिपान क्यों लिए रही धेरी ? यने धावम में क्या न बची धाई ?

सीता—मैंने धानी यबदम् ? हज बनबागी से ला भी मेरे पति के

राम रखा की याचना किए बैठों से दूर कर ज्योति-भुक्ति प्राप्ति करते हैं। उस समय तक देने वाले अनुभवी राम की पत्नी धर्म के लिए धर्म के द्वार धार ?

बास्मीकि—ऐसा क्यों कहती हो बेनी ? तुम्हारे समुद्र का प्रिय सखा मिथिलस का परम बंधु रघुवंश का पुराना मित्र दोनों क्यों व इनका निकट सम्बन्ध होते हुए भी मुझ पराया कहता हो। मुझ परदेश में रहने वाले अपने पिता के घर धार हो बेनी।

सीता—मैं क्यों क्यों धार हूँ यह धार जानते हैं ममभक्त ?

बास्मीकि—मैं सब जानता हूँ। झूठे मोक्षपत्रों के भय से राम ने मुझे त्याग दिया है। मोक्ष-निष्ठा का दूषण समझनीय हमें के कारण इन्हींके वह कठोर दिव्य किया। वह दिव्य होगा कठोर भी होगा पर मैं इनके सहमत नहीं। तीनों साधु का कटा उल्लाह फलन का मामुर्ष्य प्रियमें है वह इन धर्म कंटकों की क्यों पचाह करे ? राजाराम सत्य प्रतिष्ठ है राजाराम धर्मस्वाधी नहीं राजाराम दुःखही भी नहीं। फिर भी तुम्हारे साथ उठोते जो यह व्यवहार किया है वह एकदम सांख्य-तास्त्र है।

सीता—गोमा न कहिए ममभक्त—

बास्मीकि—मत्प निभय होता है बेटी। मत्प जान कहते हुए मैं कियो को क्यों पचाह करूँ ? इस सांख्यतास्त्र व्यवहार के कारण मुझ राम पर कंच धार हूँ।

सीता—इतने कठोर क्यों तन रह है ममभक्त ?

बास्मीकि—प्रिय के साथ प्रिय और कठोर के साथ कठोर जाना ही हमारी नृक है धार। स्वयं भगवान् की छाती में भाव मानने वाले मुझ का मैं जनक है। जाननी हा न तुम ? द्विती का भी दुःखवहान् ममभक्त सहन नहीं होगा—किन्ना बाद वह साधारण मनुष्य हो जाई राम-रघुव का प्रबन्ध धर्मोपमा का राजा राम हा मैं बुरे को बुरा ठीक नहीं ही इनी

लिये न मैंने रामायण लिखा ? बड़ी स्पष्टता से मैंने यह काव्य लिखा है। न किसी के दोषों पर धारण्ड बाला है और न ही किसी के दुर्गों की व्यर्थ स्तुति की है। राम ने तुम्हें त्याग कर धरमाव किया है। सत्य की हत्या की है—(सीता विस्मय से तिर नीचा कर गिती है।) अच्छा अच्छा तुम्हें मरी बातें घमिष लग रही हो तो अब मैं कुछ भी नहीं कहता। चलो अब मेरे साथ।

सीता—(कल नर चुप रहकर) कहाँ ? आपके प्रायम में ?

काश्मीकि—हाँ हाँ, मेरे प्रायम में। क्या तुम्हें सकोच होता है ? बरारण का मैं प्रिय मन्दा है। बरमुर के घर जाने में तुम्हें सकोच क्यों होता है ? बरारण राम के अग्र्यवस्ता से मैं रामायण का बनक हूँ। किसी भी हृष्टि से देखो तो भी मैं तुम्हारा समुर हूँ।

सीता—अम्बुक तो भट होने के कारण मुझे मरा समुपल फिर से मिल गया। वह भी मुझे ही निर्वासित है। मैं भूमि कन्या हूँ वह भी भूमि पुत्र—

काश्मीकि—और मेरा भी पुत्र ही है। सब अष्टि भूमि मुझे वस्तु कहते हैं। विरवामिष भूमि का वत मैंने भी पाया। यन्त्रों का लवर्षक बना इनी लिये सारे नाम मुझे का यन्त्रों कहने लगे—वस्तु कहने लगे। मुझे बड़ा घमिषमान है इस उपाधि का—किन्तु सौभाग्य का दिन है आज ! आज मुझे एक पुत्र और एक कन्या का साथ हुआ। [उसके बल करते लवक दूर से रामायण का पाठ सुनाई पड़ता है। मुझे काँठ के प्रन्तिल इतोक है।] मुझे वरमने मुनी। तुम बीना के वरिष लम्बकी हो रण। पाठ मुनी। इस बाधम में दिन राम गरी नाम होता रहता है। अब भी तुम्हें वह रामायण भूमि पराई मयती है।

सीता—(उन्हें नमस्कार करके) पिता की यागा निर घानो पर हूँ।

काश्मीकि—आज मे अग्र्य हो गया मा ! (सीता के पैर बकड़कर।) लास्या वर प्रनिबंध लव जाने न मरा घन क्याकुल ही रहा पा। अब मा

की सेवा करने का मुझ सौभाग्य प्राप्त होया। उस प्रतिबन्ध की अब मुझे
 चिन्ता भी बिता नहीं। मातृ सेवा के सामने तपस्या की क्या बिछाव ?
 (बास्मीकि से) ठीक है न भगवन् ?

बास्मीकि—अक्षरशः सत्य है। मातृ सेवा ही दूसरी तपस्या नहीं।
 बड़े माम्पदान हू। तुम धम्बूक। धीरे सीता तुम भी बड़ी माम्पदान हो।
 प्रसूति बेचना बिना ही तुम्हें यह पुत्र लाभ हुआ है। अब चलो मरे आश्रम
 में। फल पुण्य कृतार्थों की भाँति ही बाल बच्चों से मेरा यह आश्रम बरत
 हुआ है। उन सभी पुत्रवती तपस्विनियों से तुम्हारा परिचय करा
 देता हूँ।

सीता—पिता की आज्ञा स्वीकार कर सेने पर भी मरा यह मन सदाक
 हो रहा है। अयोध्या की साम्राज्य के भाग्य में यह परहूह बास क्यों ?

बास्मीकि—अब भी यही कह रही हो ?

सीता—मैं अयोध्या की रानी हूँ। राजा राम द्वारा त्यागे जाने पर
 भी रानी पर के ज्ञान का विस्मरण मेरे इस अभिमानी हृदय को नहीं
 होता।

धम्बूक—अयोध्या की रानी मुमि क्या है।

सीता—इसीलिए इस बर्बादस्था में मेरी हज्जा मिट्टी खाने की हुपा
 करती थी। मरी यह मा मुझे मार करा रही थी। मैं उसे भुल गई
 की क्या इसीलिए मुझ यह बन्ध मिता मयबन् ?

बास्मीकि—यह भवितव्य बताना। तुम्हारा यह दिव्य भवितव्य
 मुझे दिखाई देने लगा है। उस हृदय के ही रामायण का उत्तरकाण्ड पूरा
 होना। इसीलिए तुम यहाँ मरे आश्रम में धारि हो। यह अयत्ना हृदय—
 मेरी धारि के सामने दिखाई पड़ने वाला यह हृदय—अयोध्या नगरी की
 रामायण के बाल से माहित करने वाले के कौन बहुर मुझ दिखाई दे रहे
 हैं ?—मुनो—मुनो सीता रामायण का यह अयत्नाप मुनो ! इन कोप
 के निवार से बर्षों दिखाएँ हूँ जते समय मुझे इस बास्मीकि आश्रम में

रघुर्जय के दो मन्दुर उन दिखाई दे रहे हैं— (उत्तर काण्ड के आरम्भ के श्लोक कहने लक्षता है ।)

[अन्धर होने वाला रामस्वयं का नाम जोर-जोर से सुनाई पड़ता है । सब सोम मंत्र-शुद्ध से बड़े ध्यान सुनते रहते हैं ।]

(पर्व)

चौथा अंक

[राम का अंतःपुर । दूर से दो छोटे बालकों की आवाज में रामानुज के बूढ़ काण्ड के अंतिम भाग का नायक सुनाई पड़ रहा है । पर्वी जड़ों समय वह नायक समाप्त होने जा रहा है । राम और लक्ष्मण वह सुन रहे हैं । राम के बोलना आरम्भ करने के कुछ समय बाद वह नायक खर होता है ।]

राम—सुन लिया लक्ष्मण इस नायक को सुनकर इस राम के हृदय में भी हाहाकार मच गया है । आज बारह वर्ष से अंतरात्म की बिरह बेवना को दबा रखने का प्रयत्न कर रहा था परबोध के पुष्पाहवाचन का प्रसन्न हठ और राज के नीचे दबी हुई बिगारी फिर से सतेंब हो उठी । इन बाहकों के मावन में फूँक मार-मार कर मेरे भीतर उस बिगारी से ज्वाला पड़का ही है । हृदय को झुलस रही है वह ज्वाला ।

लक्ष्मण—मैं उसकी कल्पना कर रहा हूँ ।

राम—नहीं लक्ष्मण, उसकी पूरी कल्पना मेरे सिवाय और कोई भी नहीं कर सकता । इस परबोध में राज-वाली का अनाह मुझे लख-लख बटक रहा है । अठ-करण में बरबर हाहाकार मचा हुआ है । रामानुज के इस वाचन से वह सारा पूर्व इतिहास पुनः दृष्टि के समाने जा रहा है और उसका सिद्धान्तोक्तन करते समय मगता है कि कहीं से तब मूर्त तो नहीं हुई है मुझसे ?

लक्ष्मण—ऐसा न कहिए । आपके मुँह से निकले हुए वे पश्चात्ताप के उद्गार मेरे हृदय पर बख्शप्रहार कर रहे हैं । क्या मैं धपराभी नहीं हूँ ? मरा हृदय भी ऐसा ही झुलस रहा है राम—

राम—सुन्दारे धपराव का कारण भी मैं ही हूँ लक्ष्मण ! सोकारामना

के लिए मैं निर्बल बना आत्मापालन के लिए तुमसे अपराध हुए । इसका नेराकरण कैसे होगा ?

लक्ष्मण—आपने उन बालकों को देखा है ?

राम—यह क्यों पूछते हो ?

लक्ष्मण—बाल्यकाल की स्मृतियाँ भाग उठीं उन बालकों को देख कर । कहीं साम्ब दिखाई पड़ा । उनका यामन तुमने के बजाए मैं उनकी ओर देखता ही रहा ।

राम—किससे साम्ब दिखाई दिया तुम्हें ?

लक्ष्मण—इसका अनुभव आपने नहीं किया ? (राम चुप रहते हैं) बोलो कुछवा भाई है, मामों एक ही साथे में बने हुए दो बिन हों । यदि कवि कुमारी के बेष में न होत तो मैं उन्हें राजकुमार ही कहता । (कहकर) यहाँ बुला भाऊँ उन्हें ?

राम—नहीं । मैंने उन्हें भी मर कर देख लिया है । (कल मर चुप रहते हैं धीरे धीरे बन्द करके खोसते हैं) उनका यामन सोच बार बार मुन रहे हैं । मुग्ध हो रहे हैं । इस अरधमन की भूमिभाम की भी किसी को बिठा नहीं । तुम ऐसा करो उन बालकों को प्रत्यक्ष सहस्रत्र स्वर्ण मुहार्य पुरस्कार में दे दो । धीरे इस काव्य की रचना किसन की है यह भी उनसे पूछने पाओ —

[किर चुप हो जाता है]

लक्ष्मण—धीरे उनका ठीर-ठिकाना भी पूछना पाऊँ ?

राम—पूछ कर क्या करता है ? नहीं यह न पूछो केवल इतना ही पूछो कि—

[राजगुह अम्बूक के साथ प्रवेष्ट करते हैं]

लक्ष्मण—यसु नर विश्राम पाता भी अत्यन्त हो गया है राम को ।

[राम पद कर नमस्कार करते हैं धीरे राजगुह की आत्मन पर बैठते हैं लक्ष्मण आते हैं ।]

राजगुह—ईठो राजन् । (अम्बूक की ओर अंगुली पठाकर) इसे

बहानत हो ? (राम उसकी ओर देखते भर रहते हैं) यह वही बसु है । बारह बर्य पूर्व धर्मभारण के धपराब से जिसे धापने निर्वाचित किया जा वही है यह बसु ।

राम—(स्वगत) बारह बर्य पूव ।

राजपुत्र—यह फिर से धर्मभारण करने गया है । जानते हो यह यहाँ कैसे प्राया है ? धरमेश के लिए प्राए हुए ऋषि-मुनियों की टोलियों में बृष कर बना है यह बसु धयोध्या में—राजराज का धर्मभन करके धाया है । क्यों रे बाण्डाम ठीक है न ?

सम्बूक—हाँ ममबन् ।

राजपुत्र—कुलनकुस्ता ही कहता है ! लाज नहीं घाली ?

सम्बूक—यह रामराज्य है । प्रमथ राजाराम के सामने कैसे छूट बोसु । सब बोसने में क्या लाज !

राजपुत्र—तूने राज-भाजा का उर्ध्वन किया है—

सम्बूक—हाँ ममबन्—

राजपुत्र—यह धपराब तूने क्यों किया ?

सम्बूक—गत बारह बर्यो से में बास्मीकि मुनि के धाधम में रह रहा हूँ—

राम—(भीककर) बास्मीकि मुनि के धाधम में ?

सम्बूक—हाँ राजन् । वे मुन्ज जैसे बसुधो के रधक है ।

राजपुत्र—इसीलिए तो सारे लोग उग्हें बसु कहते है ।

सम्बूक—मैं उग्हें के परिवार में रहता हूँ । धरमेश के लिए वे सपरिवार यहाँ प्राए है, में भी उस परिवार में बना धाया । वही मुन्ज यहाँ नाए है ।

राजपुत्र—वे साए धधध पर तू यहाँ क्यों धाया ? बह्यकृष के परिवार में क्यों धाया ? इसका परिणाम क्या होगा यह भी जानता है तू ?

सम्बूक—जानता हूँ !

राम—इम धपराब के लिए बन्ध है धिरण्य—

शम्भूक—हाँ राजन् ।

राजनुव—घब की बार तुम्ह जना नहीं मिलेगी । जानता है तेरे इस घबर्माचरण का क्या परिणाम हुआ है ? एक बाह्यण का लड़का घसमय मर गया ?

राम—बाह्यण का लड़का घसमय मर गया ?

राजनुव—हाँ राजन् । लड़के का घब लिए वह बाह्यण राजद्वार पर बैठा है । यह अकल्पित उत्पात हुआ इतीलिए तो पूछनाच करता मैं इसे यहाँ से भाया । घब बोल बाह्यण क्या कहता है ?

शम्भूक—तो बण्ड मिले मैं भोगने के लिए प्रस्तुत हू ।

राम—धिरज्युव ?

शम्भूक—हाँ राजन् । बी कर भी क्या करे का ? अंतरतम की इच्छा अब पूरी होती ही नहीं तो किछ लिए जीऊँ ?

राजनुव—ये बारह ताम कंठे बीबित रहा ?

शम्भूक—इन बारह वर्षों में मूक तपस्या से भी एक बड़ी छात्रता करने का सुषवतर प्राप्य हुआ का । मुझे एक नाला मिल गई बी उली की सेवा करता रहा ।

राजनुव—सेवा करता ही तेरा कर्तव्य है ।

शम्भूक—साधारण सेवा से यह कतव्य अधिक ईबी का प्रभवन् । बाल्मीकि मुनि ने मूक बठाया कि परे उस वर्तव्य का अंत धार होमा इमीलिए धार भेने फिर से तपस्वा आरम्भ कर ही ।

राजनुव—धीर इतीलिए धार एक बाह्यण की अकाल मृत्यु का लकठ घयोप्या वर या पदा । तेरा विश्वर होता ही बाह्यण ।

शम्भूक—अपु राम के हाथों मृत्यु हुई तो घबनी तपस्या का अन्त पाया नमस्तु या । मोरा के लिए ही तो तपस्या की जाती है । बही मोक्ष इन प्रकार मिल बाप ही मैं घबना मीयाम्य समस्तु या ।

राम—धरे कीन है बबर । (बिजय घाता है) बिजय हम दस्यु की बने गिरज्युव का बण्ड दिया है । इने अनाति के पास ले आओ ।

विजय—बसो धम्बुक ।

[धम्बुक राम को पीरों पर मस्तक रखता है तथा राम उसके मस्तक पर हाथ फेरते हैं ।]

राम—इस्युक्तमोक्षम तपोनिधे तुम्हें मोक्ष लाभ हो ।

धम्बुक—मात्र मैं बन्धु हूँ ।

[धम्बुक एकदम चला जाता है उसके पीछे-पीछे विजय जाता है ।]

रामगुरु—राजाराम बर्माबरस की प्रतिष्ठा के लिए यह कठोर दण्ड दैते समय तुम्हें कुछ हुपा होगा यह मैं जानता हूँ । पर इसी दण्ड से बाह्य पुनर्जीवित होते ही छापी भयोप्या तुम्हारा भयबयकार कर उठेगी । ईश्वर तुम्हारा कर्माण करे, (जाता है ।)

[राम परेशान से होकर कुछ देर टहलते रहते हैं, तभी सुमंत प्रवेश करता है ।]

सुमंत—(राम को नमस्कार करते) प्रभु के विभ्रंशिकाल में घाकर बाबा उपस्थित करने के लिए लाया हो । बामभूत मंत्र-करण से प्रभु ने इस घटनेव समाटोह में भाग लेने का मुझ भयसर दिया । पर एक भयत्कार देखकर मगा कि यह प्रभु ने मुझ पर बहुत बड़ा उपकार किया ।

राम—कैसा भयत्कार ?

सुमंत—बारह वर्ष पहले की स्मृति—प्रभु के वास्यकाल की एक स्मृति (लालनर दकठर)—प्रभु वर्षसु के सामने खड़े थे । बसरवरात्र पीर कीसस्या माला कीसुक से रूक रहे थे । उपण में अपना प्रतिबिम्ब देख कर प्रभु स्वयं अपने से ही बोसने मने थे । यह देखकर राजा बसरव ने कहा था देखो सुमंत ये हो रामचन्द्र देखो—उसकी याद धा गई मुझे—(चकता है ।)

राम—उसकी क्यों याद धाई ?

सुमंत—मात्र मन्मथ में रामायण का ज्ञान करने वाले वे ही बहुत देखे मानो हो रामचन्द्र हों ! वही स्वरूप वैसे ही हैसुल वही मन्त्र धावात्र वही जीत-जीत कमी की तो केवल धर्मेण की बुझापे के कारण

इन बुधनी भाँसों में पुनः ज्योति प्रा गई । लक्ष्मण के लिए बुझपा मृत गया । जगा कहीं रामायण का बालकाण्ड तो फिर से धारम्भ नहीं हुआ ? (लक्ष्मण ठहर कर परेशान राम की घोर देखकर) क्या प्रभु ने इसी बात का अनुभव नहीं किया ?

राम—मैं ऐसा अनुभव क्यों कर ?

सुमंत—लक्ष्मण मुझे जगा कि येठी बोली बाबना को बोला हुआ है । ब्रह्ममंडप में रखी हुई सीता देवी को प्रतिमा की घोर मेरी दृष्टि बार-बार जा रही थी । उन्हीं बालकों के घातपात कही सीता देवी भी दिखाई पड़ेगी हम धांध से देने चारों घोर देला—पर कोई भी दिखाई न पड़ा । प्रतिमा की घोर दृष्टि आते ही मेरा हृदय जर धामा । यज्ञ का इतना बड़ा समारोह—यै बह स्थान जालता था—प्रभु कहते तो मैं जाकर उन्हें ले आता—

राम—मैं एक बचनी राम हूँ । प्रथमानुकार नहीं बदलता इत राम का शब्द ।

सुमंत—उत्त प्रतिमा की घोर देख रहा था । रघुवंश में कई बीड़ियों से न होने बाधा यह धारमेष धारम्भ हुआ—यै राम के हाथों धारम्भ हुआ पर उनके बचीप केवल बह सोने की प्रतिमा ।—सोने की पत्नी रहते हुए बह प्रतिमा क्यों बनवाई प्रभु ?

राम—बिना पत्नी के धम्मि का धाहाहन नहीं होता सुमंत ।

सुमंत—तो फिर पत्नी ही ले आते—कूनटी ।

राम—बह समय नहीं ।

सुमंत—क्यों संभव नहीं ? रघुवंश के सभी राजाओं ने धनेक विवाह किए थे । धात्र भी तो ठीक राजपाछार्द विधवाण है ?

राम—इमीलिए मुझे दुकारा विवाह नहीं करना है । सुम कैंडे मूलक हो सुमंत—उन प्रसंग को उज्ज्वारना भी कठिन हो रहा है—कनाचो सुमंत इन राम की बनधान क्यों मिला था ? क्या सीतेली भावना ही इनका धारम्भ न बनी थी ? बिना बा तनाधों को धंने नीचा

है उन्हीं के कारण मेने मन में निश्चय कर लिया—एकपत्नी इत ही मेरा जाना है। मैं स्वयं उसका पासन करूंगा और प्रजा से भी पासन करवाऊँगा। जिन कष्टों को मने सोमा है वे कष्ट मेरी प्रजा न भोग पाए। इसीलिए सीता की प्रतिमा—सीता के बैजब को सोमा देने वाली सुवर्ण प्रतिमा मुझे रखनी पड़ी।

सुमंत—सीतीलेपन का डर किसे हो ? संतान हो सभी न ?—
 नहीं ! नहीं ! यह मैं क्या कह रहा हूँ ? रामायण का गायन मेने सभी धमी तो सुना है। कितना मधुर था वह पान ? जैसी भावाज बीसा ही स्वल्प। घारे थोठा मंत्रमुग्ध हो गए थे। सभी पागल हो उठे वे उस बायल से। मैं तो अपने आप को भी मूस गया था। मामकों को पहचानने के लिए जब मैं ध्यानपूर्वक देखने लगा तो मेरी धाँखों में नई ज्योति घा गई। हृदय भर धाया। वे कौन और कहाँ के रहने वाले हैं यह पूछना भी मूस पया प्रीर बीड़वा हुआ यहाँ था पहुँचा।

राम—किसने लिखा है वह काव्य ?

सुमंत—मैं यह नहीं जानता !—पर उन कुमारों को तो प्रभु ने देला है। (राम चुप रहते हैं।) देखें हैं न वे कुमार ? क्या आपको वे रजुबंध के धंकर नहीं जान पड़ते ?

राम—वह तुम्हारे बुझाने की हटि का भ्रम या सुमंत।

सुमंत—नहीं प्रभु ! विद्वानिज मुनी धाए थे यज्ञ की रसा क लिए राम-नटमण को लिबा बात समय उनका भी ऐसा ही बटुक बेध किया पया था। ठीक वही मूर्ति मेरी धाँखों के सामने लड़ी हो गई है। नहीं प्रभु नहीं बारह बर्य के ये कुमार—

उजिता—(प्रवेश करके) सीता की संतान है यही न धापका कहना है सुमंत जी ?—

सुमंत—मुन नीजिए प्रभु। यह तो बुझाने की हटि नहीं है !

उजिता—अपने उस विवाह काल की याद धा गई। जिन ज्योति-

सकमल यद्ये वे ? पर यहाँ तो कोई राखस बिष्ण उपस्थित करने के लिये नहीं धाये हैं ।

राम—राखसों के बिना ही यहाँ बिष्ण उत्पन्न हो रहे हैं ! (सकमल से) उन्हें पुरस्कार दे दिया ?

सकमल—उन्होंने पुरस्कार प्रस्वीकार कर दिया ।

राम—प्रस्वीकार क्यों किया ? कम था ?

सकमल—नहीं । उन्होंने कहा कर्म-मूल जाकर रहने वाले हम ऋषि-कुमार तपोवन में ब्रह्म का वधा करते ?

उर्मिला—गुन लीजिये ।

राम—बहु काव्य किसने रचा है ? किसने सिखाया है उन्हें ?

सकमल—काव्य की रचना वास्मीकि मुनि ने की है । वक्र समारोह में वे भी धाये हुये हैं ।

राम—फिर उन्हीं को क्यों न बुला लाए ?

सकमल—वे स्वयं ही इतर धा रहे हैं ।

उर्मिला—वास्मीकि मुनि यहाँ धा रहे हैं ? अब पता सकेना यह पहेली अब इन होगी ।

राम—वास्मीकि मुनि यहाँ धा रहे हैं ? बड़ा भावघासी हूँ मैं । तब बनवास में कई ऋषि-मुनियों से भेंट हुई थी पर उन्हीं से भेंट न हो सकी थी । उनका यथायोग्य स्वागत होना चाहिए सकमल । उनको कहीं धाने का धारंभल दिया है ?

सकमल—मैंने धारंभल नहीं दिया । वे स्वयं ही धाने वाली हैं ।

उर्मिला—उन कुमारों को लेकर ?

सकमल—नहीं बड़े तैरस्वी हैं वे कुमार । उन्होंने कहा था कि स्वयं राजा राम ने बुलाए बिना वे नहीं धाये ।

मुमक्ष—बाहू बरं के छोटे से बटुह । कियना स्वाभिमान ! अब भी धागकी परिह है प्रयो ?

अमिता—यही हुआ जाता है उस सबेह का निराकरण मेरी बात सब है वह आप सभी को मानना पड़ेगा ।

[वात्सीकि प्रवेश करते हैं । सब उन्हें नमस्कार करते हैं ।]

राम—इस भासन पर विराजमान होइए भगवन् । कई दिनों की मेरी इच्छा आज पूरी हुई । इस रामराज्य को आपके चरणों का स्पर्श हुआ आज मैं बन्ध हुआ ।

वात्सीकि—चिरंजीव हो राम । आज मैं भी बन्ध हुआ । जिस पुरास पुरण का चरित्र मेरी दिव्य दृष्टि का दिखाई पड़ा था जिस चरित्र की रचना के लिए मुझ गया कष्ट बनाने की स्फूर्ति मिली जिस चरित्र को लिखने से तपस्या की तृप्ति इस वात्सीकि को प्राप्त हुई वह चरित्र आज इसी ने मुन सिखा । मरा नैसन सार्थक हुआ ।

राम—तपोवन का आपका नित्य क्रम तो ठीक चल रहा है न ? सब निर्विघ्न है न वहाँ ?

वात्सीकि—मेरी भी कोई तपस्या है ? धनार्थ बन्धुओं के समाज में बिचरता रहता हूँ । उन बन्धुओं की उन्नति करना ही मरा ध्येय है । उसी ध्येय के लिए संघर्ष कर रहा हूँ । कब होनी वह ध्येय पूर्ति ?

राम—मुनिवर्म ने मुझ निरुत्तर कर दिया है । आपकी इस तपस्या का विघ्न दूर करना इस राम के लिए भी असम्भव हो गया है ।

वात्सीकि—यह मैं जानता हूँ ।

राम—क्या बताऊँ मुनिराज वह लोकाराजना भी एक बड़ी घोर तपस्या है । इस तपस्या के लिए मन मारना पड़ता है । कभी भी निर्विघ्न नहीं होती यह तपस्या । इस लोक सेवा-की तपस्या का वैभव ही विघ्न है ।

वात्सीकि—ऐसा क्यों कहते हो राजन् ?

राम—आप सब्र हैं, मैं क्या कहूँ ? परचाठाप से मेरा मन बना जा रहा है । इस तपस्या के कारखु धपराव होते जा रहे हैं । उन धर राधों की जानकारी इस हृदय में ज्वालामुखी की भाँति सुलग रही है । अन्तरतम से निरन्तर पुकार छटती रहती है । राम, यह धन्याय हो रहा

लक्ष्मण बड़े से ? पर वहाँ तो कोई उल्लस विष्णु उपस्थित करने के लिये नहीं पाये हैं ।

राम—राजनों के बिना ही यहाँ विष्णु उत्पन्न हो रहे हैं । (लक्ष्मण से) उन्हें पुरस्कार दे दिया ?

लक्ष्मण—उन्होंने पुरस्कार घोषित कर दिया ।

राम—घोषित क्यों किया ? क्या था ?

लक्ष्मण—मही । उन्होंने कहा कश्यप-मुल खाकर रहने वाले हम ऋषि-कुमार तपोवन में ब्रह्म का वना करेंगे ?

उत्तिला—मृत सीबिने ?

राम—वह काव्य किसने रचा है ? किसने सिखाया है उन्हें ?

लक्ष्मण—काव्य की रचना वास्मीकि मुनि ने की है । वह समारोह में से भी पाये हुये हैं ।

राम—फिर उन्हें को क्यों न बुला लाए ?

लक्ष्मण—वे स्वयं ही इतर भा रहे हैं ।

उत्तिला—वास्मीकि मुनि वहाँ भा रहे हैं ? यह पता लड़ेया वह पहेली सब हल होपी ।

राम—वास्मीकि मुनि वहाँ भा रहे हैं ? क्या घाणव्याली हैं वे । सब बचवास से कई ऋषि-मुनियों से भेंट हुई थी पर उन्हें से भेंट न हो सकी थी । उनका बचावोष्प स्वागत होना चाहिए लक्ष्मण । उनको कहीं घाने का धामपल किया है ?

लक्ष्मण—मैंने धामपल नहीं दिया । वे रचक ही घाने वाले हैं ।

उत्तिला—उन कुमारों को तिकर ?

लक्ष्मण—मही बड़े तिकस्वी है वे कुमार । उन्होंने कहा था कि रचक राजा राम से बुलाए बिना से नहीं पायेगे ।

मुमल—बाहू बपे के छोड़े से बटुछ । फितना रवाबिमान ! अब भी घानको भरेह है घमी ?

सदस्य पये है ? वर यहाँ तो कोई रामस विष्णु उपस्थित करने के सिने नहीं पाये है ।

राम—उपस्थित के बिना ही यहाँ विष्णु उत्पन्न हो रहे हैं । (लक्ष्मण से) उन्हें पुरस्कार दे दिया ?

लक्ष्मण—उन्होंने पुरस्कार प्रस्वीकार कर दिया ।

राम—प्रस्वीकार क्यों किया ? क्या था ?

लक्ष्मण—नहीं । उन्होंने कहा कण्ड-मून खाकर रहने वाली हर्म ऋषि-कुमार तपोवन में इष्णु का क्या करने ?

उत्तिला—मून सीजिये ।

राम—वह काव्य किसने रचा है ? किसने सिखाया है उन्हें ?

लक्ष्मण—काव्य की रचना बाल्मीकि मुनि ने की है । वह तमायेह में ही पाये हुये हैं ।

राम—फिर उन्हें को कवी म कुला साध ?

लक्ष्मण—वे स्वयं ही इतर पा रहे हैं ।

उत्तिला—बाल्मीकि मुनि यहाँ पा रहे हैं ? यह पता सवेना यह पहेली यह इन होनी ।

राम—बाल्मीकि मुनि यहाँ पा रहे हैं ? बड़ा धार्यपासी हैं वे । यह बलसाध में कई ऋषि-कुमारों से भेंट हुई थी पर उन्हें से घेन म हो सकी थी । उनका बचामोष्य स्वागत होना चाहिए लक्ष्मण । उनको कहां पाने का धार्यपत्तु दिया है ?

लक्ष्मण—मैने धार्यपत्तु नहीं दिया । वे स्वयं ही पाने वाले हैं ।

उत्तिला—उस कुमारों को सेफर ?

लक्ष्मण—नहीं बड़े सेवस्वी है वे कुमार । उन्होंने कहा था कि स्वयं राधा राम से कुलाए बिना वे नहीं पायने ।

मुपत्त—बारह बर के छोटे से बट्ट । किउना स्वाभिमान ! यह भी धार्यको नरेह है प्रयो ?

है।—राम यह सम्भाव हो रहा है। फिर भी मुझ से अपठक परमा
व होते जाने जा रहे हैं।

बास्मीकि—दूसी में तुम्हारी महत्ता है धनम् । (राम नमस्कार
करते हैं ।) वीरों लोको में अत्यन्त कोवि जाने वाले तुम सत्य प्रसिद्ध
हो पर बाह्य तुमने अपने अन्तर भाँसल समा लिया । मुझे तुम पर अत्य
भाव था पर धान तुम्हारे से बाँटें सुनकर मेरा अत्य अत्य ही गया ।
रामायण की रचना करके मैंने तुम्हें भीरवीय कर दिया है। उद्य रचना
का उत्तर भाव अब मैं पूरा कर सकूँगा ।

अमिता—(सामने आकर हाथ जोड़ते हुए) एक बात पूछ सकूँगी
है धनम् ?

बास्मीकि—तब की अमिता हो न तुम ?

अमिता—मेरी माँ है धनम् ? मैं समझी थी कि धान मुझे सुन
गए होंगे ।

बास्मीकि—देना क्यों ।।

अमिता—धान भी श्रीरामचन्द्र की अति ही निर्दय हैं। रामायण
लिखते समय मेरे जीवन की बातें धान नहीं जान पाए ? उन बहनों
के मुख से मेरे बाँटें रामायण सुनी— तबको सब की माँ भी पर मेरा
ही विश्वास धानको रामायण लिखते समय क्यों हुआ ?

बास्मीकि—तबसे मैंने तुम्हारे निस्सीम स्वभाव से मैं इतना जका
भीष हो गया कि तुम्हारे उक्त स्वभाव का वर्णन करना मेरी अति से बरे
हो गया। मुझे क्षमा करी देती ।

अमिता—धनम् बहारा है बाहर जाने के लिए धान ही मुझे क्षमा
करें। (नमस्कार करके राम की ओर मुड़ती है) अब पूछ नीचिए न
रवने ?

राम—नया पूछ ?

अमिता—मेरी बहन का सुसम समाचार ।

बास्मीकि—जिनके नाम में अत्यन्त बनबाग लिखा है उनका सुसम

श्रीराम यानी सुखी बनबास । उसका यह पितृ बंधु भीबिध रखते हुए वह सकुशल क्यों न होयी ?

उमिला—वह कहाँ रहती है ?

बास्मीकि—मरने समुराम में । इस बास्मीकि के तपोवन में । प्रहो राम होने वाले रामायण का पाठ सुनती—सीतेसी माँ ने नहीं बरन् स्वयं पति ने दिया हुमा बनबास का बन्ध मोवती—वह तपस्वी सीता इसी बास्मीकि के धामम में थी ।

सुमन्त—श्रीराम से दोनों कुमार ? रामायण के नायक ?

बास्मीकि—वे रघुबंध के प्रकुर हैं । इस बास्मीकि के वे दोनों शिष्य सीताराम श्री ही संतान हैं ।

उमिला—कहाँ है मेरी बहन ?

बास्मीकि—वहाँ राम है वही सीता भी है ।

सुमन्त—कहाँ है सीता देवी ?

बास्मीकि—कहाँ है सीता देवी ?

राम—(स्वमत) कहाँ है सीता ! मेरी प्रसंगिनी ! मेरी शक्ति ! मेरा सबस्व !

बास्मीकि—है न ?—तो फिर वह कैसे विपुल सकती है ? राम के हृदय की पुकार वह सुन से तो शीघ्र ही हुई था बायनी यहाँ ।

उमिला—क्या धर्म भी उधने वह पुकार नहीं सुनी है ?

बास्मीकि—राम के हृदय की पुकार सब तक निःशब्द थी धाम वह धर्मों में मुबलित हुई है । उसका परिणाम हुए बिना नहीं रहेगा ।

[तपस्विनी के शेष में सीता धीमे कर्मों से प्रवेश करती है । सब की नजर उसकी ओर जाती है । राम के प्रतिरिक्त प्रथम सभी 'सीता देवी' कहकर मुँह ही मुँह बड़बड़ाते हैं । सीता बीचोंबीच धारक जाती ही जाती है सभी उमिला उसके पास जाती है । हाथ से इशारा करके वह उसे दूर रहने के लिए कहती है ।]

हे !—राम यह धमकाव हो रहा है ! फिर भी मुझ से धपछब पर धांव होने बने जा रहे हैं ।

बास्मीकि—इसी में तुम्हारी महत्ता है राजन् । (राम नमस्कार करते हैं ।) तीनों लोकों में अखण्ड कीर्ति पाने वाले तुम सर्व प्रसिद्ध हो पर ताहक तुमने अपने ऊपर लाक्षण नवा लिया ! मुझे तुम पर श्रेष्ठ भाषा का बर धाम तुम्हारी ये बातें सुनकर मेरा श्रेष्ठ धाम ही गया । रामायण की रचना करके मैंने तुम्हें कीर्तनीय कर दिया है । उस रचना का उत्तर माप अब मैं पूरा कर सकूँगा ।

उज्ज्वला—(सामने धाकर हाथ जोड़ते हुए) एक बात पूछ सकती हूँ मन्वन् ?

बास्मीकि—सकत की उज्ज्वला हो न तुम ?

उज्ज्वला—मेरी बात है मन्वन् ? मैं समझती थी कि माप मुझ धूल पर होते ।

बास्मीकि—रूठा क्यों ॥

उज्ज्वला—माप की श्रीरामचन्द्र की शक्ति ही निर्धम है । रामायण लिखते समय मेरे जीवन की घटनाएँ धाव नहीं जान बाएँ ? उन बटुकों के मुझ से मैंने तापो रामायण सुनी— आपको सब की माद की बर मेरा ही निबन्धन धावको रामायण लिखते समय क्यों हुआ ?

बास्मीकि—देवकी बावै तुम्हारे निस्तीन त्वाव से मैं इतना शका शीव हा गया कि तुम्हारे उक्त त्वाव का बर्तन करना मेरी शक्ति से बरे हो गया । मुझे क्षमा करी देती ।

उज्ज्वला—धरती मर्दाना से बाहर जाने के लिए माप ही मुझ धमा करे । (नमस्कार करके राम की धोर मुझनी है) अब धूल नीलिए न इमन ?

राम—नया धुएँ ?

उज्ज्वला—मेरी बहुत का धुएँप समाधार ।

बास्मीकि—जिनके धाम में धावण बनबास लिया है धमका मुझल

श्रेय यात्री मुझी बनबास । उसका यह निरु बंधु कीर्तिन यत्र ह्यु नर
समुपम क्यों न होगी ?

अमिता—वह कहां रहती है ?

बास्मीकि—अपने तसुराम में । इस बास्मीकि कल्पवृक्ष में । यहाँ-
राम होने वाले रामायण का पाठ सुनता—श्रीराम की में नहीं, यहाँ
स्वयं पवि ने दिया हुआ बनबास का एक भावना—वह बास्मी कीजा
इसी बास्मीकि के माधम में की ।

मुमल्ल—श्रीर में शोनों कुमार ? रामायण क बावक ?

बास्मीकि—ये रघुवंश के संकर है । इन बास्मीकि के के शाना
चिम्प सीताराम की ही संतान है ।

अमिता—कहां है मेरी बहन ?

बास्मीकि—वहाँ राम है वही सीता भी है ।

मुमल्ल—कहाँ है सीता देवी ?

बास्मीकि—कहाँ है सीता देवी ?

राम—(स्वगत) कहां है सीता ! मेरी प्रीतिनी ! बर्ग प्रीति !
मेरा सवत्न ।

बास्मीकि—है न ?—तो फिर वह कैसे विष्णु कर्मा है ? राम
के हृदय की पुकार वह मुन में तो बौद्धती हुई या बास्मी बर्ग ।

अमिता—क्या यानी भी उतने वह पुकार बड़ी मुनी है ?

बास्मीकि—राम के हृदय की पुकार पर एक विष्णु की प्राय
वह शाना में मुकटि हुई है । उसका परिणय हुए बिना नहीं रूना ।

[तपस्विनी के क्षेत्र में सीता बीस करणों से प्रवेश करती है । नर
की नजर उतकी ओर जाती है । राम के अनिच्छित प्राय सभी 'सीता
देवी' कहकर मुंह ही मुंह बड़बड़ाते हैं । सीता बीसवीं बार बाहर जाती
हो जाती है तभी अमिता उसके पास जाती है । हुए से श्याम करके
वह उसे दूर रहने के लिए कहती है ।]

है !—राम यह धमकाव हो रहा है ! फिर भी मुझ से अपराध पर प्रा
प होते बने जा रहे हैं ।

बास्मीकि—इसी में तुम्हारी महता है राजन् । (राम नमस्कार
करते हैं ।) पीनों मोकों में घबराह कीर्ति पाने वाले तुम बल्य प्रसिद्ध
हो पर बाहक तुमने अपने ऊपर लाक्षण लगा दिया । मुझ तुम पर शोध
घामा जा पर प्राय तुम्हारी ये बातें तुमकर मेरा श्लेष घाल्य हो गया ।
रामायण की रचना करके मैंने तुम्हें शीरंजीव कर दिया है । उक्त रचना
का उत्तर भाग अब मैं पूरा कर सकूँगा ।

उर्मिला—(घामने घाकर हाथ जोड़ते हुए) एक बात पूछ सकूँगी
है मनबन् ?

बास्मीकि—मरुम की उर्मिला हो न तुम ?

उर्मिला—मेरी याद है मनबन् ? मैं समझी थी कि घाय मुझे घुम
गए हूँगे ।

बास्मीकि—ऐसा क्यों ११

उर्मिला—घाय की श्रीरामचन्द्र की जाति ही निर्दय है । रामायण
लिखते समय परे जीवन की यादनाएँ घाय नहीं जान जाएँ ? उन बटुकों
के मुख से मैंने सारी रामायण सुनी— लकी सब की याद की पर मेरा
ही बिस्मरण घायको राबायस्य लिखते समय नहीं हुआ ?

बास्मीकि—शैरस्वी बाने तुम्हारे निस्सीम त्याग से मैं इतना बका
भीम हो गया कि तुम्हारे उस त्याग का वर्णन करना मेरी शक्ति से परे
हो गया । मुझे क्षमा करो बेटी ।

उर्मिला—घपनी नर्बाहा से बाहर जाने के लिए घाय ही मुझ क्षमा
करें । (नमस्कार करके राम की ओर मुड़ती है) अब पूछ लीजिए न
रनमे ?

राम—नया मुहुँ ?

उर्मिला—मेरी बहन का कुपान ममाचार ।

बास्मीकि—बिसके नाम्य मैं घयण्ड बनवास लिगा है उनका कुपान

नेम यानी सुखी बनबास ! उसका यह पितृ बन्धु बीबित खूँटे हुए वह सङ्कुचल क्यों न होगी ?

जमिना—वह कहाँ खूँटी है ?

बास्मीकि—घरने समुदास में । इस बास्मीकि के तपोवन में । यहाँ राम होने वाले रामायण का पाठ सुनता—सीतेकी माँ न नहीं बन्धु स्वयं पति ने दिया हुआ बनबास का दण्ड भोगती—वह तपस्वी सीता इसी बास्मीकि के आश्रम में थी ।

मुमन्त—और ये शेरों कुमार ? रामायण के पापक ?

बास्मीकि—वे रजुबंस के प्रकुर है । इस बास्मीकि के ये शेरों पिप्प सीताराम की ही संतान है ।

जमिना—कहाँ है मेरी बहन ?

बास्मीकि—वहाँ राम है वहीं सीता भी है ।

मुमन्त—कहाँ है सीता देवी ?

बास्मीकि—वहाँ है सीता देवी ?

राम—(स्वगत) कहाँ है सीता । मेरी प्रचीयनी । मेरी शक्ति । मेरा सर्वस्व !

बास्मीकि—है न ?—तो फिर वह कैसे बिछुड़ सकती है ? राम के हृदय की पुकार वह सुन ले तो दौड़ती हुई या भागती यहाँ ।

जमिना—क्या धमी भी उतने वह पुकार नहीं सुनी है ?

बास्मीकि—राम के हृदय की पुकार जब तक नि-गम्य थी याव वह शब्दों में मुबारक हुई है । उसका परिस्मरण हुए बिना नहीं रहना ।

[तपस्विनी के बेअर में सीता पीने कर्यों से प्रवेस करती है । तब की तरह उसकी घोर आती है । राम को प्रतिरिक्त धन्य सभी 'सीता देवी' कहकर मुँह ही मुँह बड़बड़ाते हैं । सीता बीचोंबीच आकर खड़ी हो जाती है सभी जमिना उसके पास आती है । हाथ से इमारत करके वह उसे दूर रहने के लिए कहती है ।]

बाणसीकि—बैद्य भी राम तुमने प्रपत्नी सीता ? मेरी यात्रा से यहाँ आई है ।

राम—सीता निर्वासित है ।

सीता—जी हाँ । यह बात किसी ने मुझसे कही थी राजाजी मैंने राजा के मुँह से नहीं सुनी थी ।

राम—फिर भी राजाजी थी ।

सीता—पुष्पाहवाचन के समय यज्ञमंडप में यज्ञमान के पास कीम थी ?

राम—बहु प्रतिज्ञा—

सीता—सीता की प्रतिमा ? इस घण्टोष्वा में जब सीता का धाला मना था तो उसकी प्रतिमा को क्या भाने दिया गया यहाँ ?

राम—यज्ञकार्य के लिए—

सीता—सीता जीवित थी ।

राम—राम के सेले वह कहाँ जीवित थी ?

सीता—इसलिए उसकी प्रतिमा बनाई गई क्यों ? (राम चुप रहते हैं) जीवित रहते हुए भी मरणसु रूप हो गई थी इसलिए उसकी प्रतिमा बनाई गई ?

राम—इसलिए कि यज्ञकार्य के लिए यज्ञमान-पति की भावबकता होती है ।

सीता—समीच पति के नाथ निर्वास परती से किते काम जाता यज्ञ का ? अवि मुबियों न लग्यनि है ही ?

राम—अपिबनों ने इनका विरोध नहीं किया ।

सीता—सम्राट के घर में ?

राम—अविमूनी क्यों करने लये सम्राट से ?

सीता—राम की परती जीवित है ये तो जानते थे न थे ?—सर्वत्र होने है वे अवि-अनि ।—ये जानते हुए भी उन्होंने निर्वास पति क्यों स्वीकार की ?

राम—किसी ने भी प्रतिमा का विरोध नहीं किया।

सीता—माजीबन जिसने पति की आज्ञा का उन्मत्तन नहीं किया वह यह सीता धाका होते ही या चापसी क्या इस बात का विरोध उनके पति को न था ? अस्त्रमेव के सौभाग्य का अनुभव एक उत्तमार्थ करे—दुपटा प्रार्थना क्यों बंभित किया नाम उससे ? उसने क्या धप धप किया था ?

राम—लोकप्रवाद ! लोकनिवा के कर्मक से वह दूषित हो गई थी।

सीता—प्रत्यक्ष कर्म से नहीं ! (राम चुप रहते हैं) लंका में उन्हें प्रथि विषय किया था क्या इस बात को निरंक नहीं जानते थे ?

राम—निन्दा हो रही थी प्रवाद चल रहे थे नगरवासियों के मन दूषित हो गए थे उसका परिष्कार सामान्य जमता की नैतिकता पर हो रहा था। उस परिष्कार के संपर्क से रामराज्य कर्मकित हो रहा था।

सीता—वह निवा ठी मूठी थी निरुधार थी क्यों ?

राम—भूट हो या सब हो पर उसके परिष्कार से बचते न बनता था।

सीता—फिर उसका निराकरण क्यों नहीं किया गया ? बनवास का वह प्रसंग—सीता के अंक में राम विधाम कर रहे थे। एक कौशा धावा धीर सीता के बहस्यन पर चोंच मारने गया। राम को शोक धाया। उस कौशे पर उन्होंने दूषीकास्त्र छोड़ा। उस अस्त्र ने कौश का सारे निजुवन में पीछा किया। अन्त में कौशा घरलु धावा धीर एक पाँच कौशर अपने अपने प्राण बचाये ठमी से कौशा एकाय है। वह पाद है न ? (राम चुप) एक छोटा सा छिद्र देखकर चोंच मारने वाले कौशे को इनका कडा दण्ड देने वाले राम को चाहिये था कि विप्रान्धपण करने वाले इन अस्त्रक्य कौशों को—इन लोनों को—बँठा ही कडा दण्ड दते क्यों ?

राम—वह राम बनवासी राम था स्वतन्त्र था। उसके मर्त्ये राज्य का भार न था—

सीता—यह राम के मरने राम राम का भार है। धर्मियों के लोप के लिए एक ब्रह्म की—आजीवन धार रह कर धारा मुक्त दुःख छोड़ने वाले जीव की—निबिडार होकर हत्या करता ही क्या राजनीति का लक्ष्य है? क्या यह स्वाव है? (राम को चुप देख कर सीता आत्मोक्ति के पास जाती है। आत्मोक्ति से) नामा कीबिये सुन्दर धारके सामने मैं यह धारण कर रही हूँ। लम्बाई का—पति का उपमर्द हो रहा है मरे हाथों मुझ धारा कीबिये। धारकी कृपा से ही मुझ यह धारण मिभा है। मुझे बिना कुछ बनाए सीमा पार किया क्या वा। धारणी धार लुप्ताने का मुझे धारण भी न दिना वा इसलिए धार मैं धारणी धारिण बाव रह रही हूँ। लंका में धारिण पटीका के धारण ऐसा हुआ वा। उस समय भी मुझ पर धार बगलाबी गई थी। फिर भी मैं धारणी बाव धारे राज्यों बालगों मनुष्यों देव-बल बंधर्ब क्रिमरादि के सामने रह नहीं थी। मुझे जो कुछ कहना वा यह कह कर ही मैंने धारिण-परीक्षा ही थी। इस बार ऐनी कीव बाव हुई थी जो मुझ बिना बनाए ही मरी धारिण-परीक्षा की बावनाओं को पूरा करने के बहाने मरे धार बाव निभा गया? लंका में धारिण-परीक्षा से पूर्व जित निर्भयता के मैंने उत्तर दिया वा बँता ही बड़ा उत्तर लुप्ताने पड़ेगा क्या इस बात का राजा राम को भय वा?

राम—वही रघुकुमोत्पन्न राम किमी मे नहीं डरता।

सीता—निबर्कों मे नहीं डरे? यह जानने हुए भी कि मैं बर्बन्धी हूँ क्यों धारने मुझ धारिणी की धार में छोड़ दिया?

राम—तोकाराधना के लिए!

सीता—धारी लोपों मे डर के। नाव कीव? निबर्क ही तो? महा पटवनी राम इस निबर्क मे क्यों डरे? (राम चुप) धारिण के लम्बाई मे धार धार ही धारिण न सुन्दर।

आत्मोक्ति—रामचन्द्र माहात्म्य के धारण जिने लुप्ताने इस तरह मरे धारण के निबर्क छोड़ दिया यह धारिणी धारिणी निबर्क है—

निष्पाप है। यह निष्पाप है इस बात का मुझे विश्वास था इसीलिए मैं उसे धाधम किया। रामायण का ज्ञान करने वाला जो हो कुमार तुमने बोले हैं वे साधारण ऋषि-कुमार नहीं तुम्हारे ही पुत्र हैं। प्रवैतसा का यह वचन पुत्र वास्मीकि प्रतिज्ञा पूर्वक कहता है कि तुम अपनी इस पुत्रवती परमा का स्वीकार करो।

जमिना—क्या अब भी प्रयोप्या के सम्राट् को मेरी बहन के बारे में लगे हैं ?

राम—मुझ कमी भी संदेह न था। संदेह का निराकरण मेरा नहीं सीता का होना चाहिए। मेरे प्रजापति का। राम ने जनता से एक के नाते इस रामराज्य का जूना बहन किया है उस जनता का समाधान होना चाहिए। सीता ने संका में विषय किया मैंने उसे धपनावा फिर भी सोक-निवा रकी नहीं। सोकापदाह बुझता हुआ है इसीलिए मैंने इस भूमि कन्या का स्थाप किया। इस धपराज के लिए मुझे अपना कौशल, मुनिपत्र।

वास्मीकि—सीता का स्वीकार करते ही तुम्हें मेरी शपथ प्राप्त हो हो जायगी।

राम—पर पहले लोगों का समाधान होना चाहिए। सीता स्वयं तिरु ही पवित्र है न भगवन् ? या धापके पवित्र धाधम में रहने के कारण निर्दोष हुई है ?

वास्मीकि—वकि सीता के विचरने से ही परा धाधम पवित्र हुआ है।

जमिना—(तड़ाठ से सामने धाकर) यह अब क्या हो रहा है ? संका कुसंकापों का यह बचकर क्यों उठा रखा है ? एक बार स्वयं ही कहते हैं कि सीता निर्दोष है। फिर पूछते हैं कि धाधम में रहने से तो कहीं यह निर्दोष नहीं हुई ? यह संका कुसंकापों का संभव क्यों बन रहा है धापके मन में ? यदि धाप सचमुच समझते हैं कि सीता निर्दोष है

तो मरुत संकल्प में रखी हुई वह सीता की प्रतिमा फेंक दीविए और इस बतती बोलती बीबिन पत्नी का श्रावण पकड़कर सम्भवेन पूरा कीविए।

वासुदेव—घाम्त हो बसने घाम्त हो।

उर्मिला—घाम्त कैसे होठे ? निरन्तर बिडम्बता हो रही है—राम की पत्नी की नहीं जनकमुखा की नहीं अयोध्या की रानी की नहीं मेरी लाइली बहन की भी नहीं ! क्यों हो रही है वह स्त्री जाति की बिडम्बता ? संदेह ! संदेह ! केवल स्त्री जाति पर ही क्यों संदेह किया जाता है ? क्या पुरुष संवदा निर्रोप होता है ? सुपंखवा घमंठ मुन्बर रूप मारण्य करके राम के बने पड़ने घाई थी—वह बाहूनी थी कि सीता को छोड़कर राम उसे धमिकार करे, यह बात (महामरुत की धोर देखकर) मही बताया करते हैं। उन समय बर्हा सीता उपस्थित नहीं थी !—क्यों ठीक है न ? (राम चुन) पर उस समय सीता ने भी कहीं घाव पर संदेह किया ? कभी उर्मिला भी किया उत पटना का ? किन्तु निमित्त होती है स्त्री जाति की मनोबुद्धि ! धोर घाव बुझ्य ! घका ! घका ! घका ! हमसा संदेह ! हमसा घंकाए ! घाव पुरानी को स्वयं अपने पर बिस्वास नहीं होता !—

सीता—उर्मिला !—

उर्मिला—बुझ न रहो ! मैं इस बात का महत्त्व जानती हूँ। मारी जाति का हम किश उरह चुटना रहता है यह जिनसा में अनुभव कर चुकी हूँ तुव नहीं ! कई क्यों ने बटने जाने मेरे हृदय की कूट निकलने का घाव घबनर किया है—तुम्हारे कारण मिया है ! (राम से) बणाइए, क्या अब भी घावके भग में संदेह है ?

राम—मुझे प्रमा करो उर्मिला मोकाराधता के पुनः मार के नीचे से रख गया हूँ कुर्बत ही क्या है। मे बिबघ हूँ। घन्तिम बार बड़े देठा है कि नाता उन महर्षि की घावा मे माने बिबिह होने के बारे में यहाँ घणव है।

सीता—(बास्मीक से) मुना दुन्देव ? घक मेरे लिए क्या घात्रा है ?

बास्मीक—मैं प्रतिज्ञा पूर्वक कहता हूँ कि सीता निर्दोष है । निष्पाप है । वह निर्दोष प्रमाहित न हुई तो मेरी सहस्रावधों की तपस्या निष्फल हो जावगी इससे घबिक्त मैं घौर क्या कहूँ ?

सीता—पर मेरे लिए घापक क्या घात्रा है ?

बास्मीक—घपनी रक्षा करने के लिए तुम स्वयं ही तपय हो ।

सीता—(राम से) मुना ? मेरे दुन्देव की घात्रा मुन ली ? घक मैं क्या कहूँ ?

राम—घपय सो । दिव्य करो । सोवों का समाधान होना चाहिए !

सीता—इस तरह किठनी बार दिव्य करूँ ? एक बार घपय ली दिव्य किया केवल शक्यों से नहीं घगि दिव्य किया । दिव्य एक ही बार किया जाता है । घपय एक ही बार ली जाती है । बार-बार घपय सेने वाले के तम पर कोई कसे बिबान करेया ? एक बार दिव्य करके भी यदि मैं बार-बार दिव्य करने सगू तो क्या मय घपने कर से बिदवास नहीं उह जायया ?

राम—मैं बिबलता से कह रहा हूँ—सोवों के समाधान के लिए घौर एक बार घपय सो ।

सीता—नहीं कमी नहीं मैं दुबारा कमी घपय नहीं सूगी । दुबारा रव्य नहीं करू वी । मैं स्वयं निठ पवित्र होती हुई भी केवल इसीलिए कि सोवों को मुझ पर संदेह है मैं कमी भी दुबारा दिव्य नहीं करू वी । घाप राजा है इसलिए घापका सोवों की परवाह है । मैं स्त्री हूँ इसलिए मुझे स्त्री जाति का बिचार है । स्त्री जाति के भविष्य की बिन्ता है, हम लिए कि मैं नारी हूँ । मरि इस समय मैंने पीछ हटकर दिव्य किया तो उतका पल भविष्य में समस्त स्त्री जाति को मोपना पड़ेगा । संदेह ली मइ कठी ब्यासा से घापी नारी जाति भ्रुतस उडेगी । मैं भी उतमी ही बिबलता से

तो यज्ञ मंडप में रखी हुई यह सीता की प्रतिमा एक बीबिए और इस बलती बोधती जीवन परती का हाथ पकड़कर धन्वमेघ पुरा कीबिए।

बासन्तीकि—घाम्ठ हो बरबने घाम्ठ हो।

जमिला—घाम्ठ कंसे होऊँ ? निरांतर बिडम्बना हो रही है—राम की पत्नी की नहीं जनकमुता की नहीं धयोप्या की रानी की नहीं मयी साइमी बहूज की भी नहीं। क्यों हो रही है यह स्त्री जाति की बिडम्बना ? संदेह ! संदेह ! केवल स्त्री जाति पर हो क्यों संदेह किया जाता है ? क्या पुराण सर्वथा निर्दोष होता है ? सूर्यणखा धर्यंठ सुग्बर रूप धारण करके राम के पत्ने पडने घाई थी—बहु बाहूली थी कि सीता को छोड़कर राम इसे धमिकार करें, यह बात (लक्ष्मण की ओर बेलकर) यही बठाया करते हैं। उस समय वही सीता उपस्थित नहीं थी।—क्यों ठीक है न ? (राम खुद) पर उस समय सीता ने भी कही घाप पर संदेह किया ? कभी इस्तीख भी किया उस घटना का ? कितनी भिमल होती है स्त्री जाति की मनाकृति ! और घाप पुरूप । घफा ! घफा ! घफा ! हमेशा संदेह ! हमेशा संकाए ! घार पुरूपों को स्वय घपन पर बिरवास नहीं होता।—

सीता—जमिला !—

जमिला—कूड न बहो। मैं इस घाप का महत्व जानती हूँ। मारी जाति का हम किस तरह घटना रहता है यह जिनता में धनुमन कर चुकी हूँ तुम नहीं। कई क्यों से घुटने बाने घरे हूबम को घूट निकलने का घाम घबतर भिमा है—तुम्हारे कारण भिमा है। (राम लै) बगाशा, क्या अब भी घापके मन में संदेह है ?

राम—मुझे घना करो जमिला लोफाराघना के घुड भार के बीचे में बब गबा हूँ कुबन हो गया हूँ। मैं बिबघ हूँ। घाठिन बार बहू देगा हूँ कि सीता इन बर्तव की घाघा न घाने पबिन होने के बारे में यहाँ घपन से।

सीता—(बास्मीकि से) मुना गुरुदेव / अब मन लिए क्या आजा है ?

बास्मीकि—मैं प्रतिज्ञा पूर्वक कहता हूँ कि मीना निर्णय है । निष्पाव है । यह निर्णय प्रमाखित न हुई तो मेरी सहस्रा बरों की तपस्या निष्फल हो जायगी इसके अधिक में और क्या करें ?

सीता—पर मेरे लिए धारकी क्या आजा है ?

बास्मीकि—धरती रक्षा करने के लिए तुम स्वयं ही समर्थ हो ।

सीता—(राम से) मुना ? मेरे गुरुदेव की आज्ञा मन की अब म क्या करे ?

राम—धरत ली । दिव्य करो । लोगों का समाधान जाना चाहिए ।

सीता—इन छह दिवसीय बार दिव्य कर / एक बार तपस्या दिव्य किया, केवल बरों से नहीं धर्म-दिव्य किया । जिस एक ही बार किया जाता है । धरत एक ही बार ली जाती है । बार बार तपस्या धर्म बरों के धरत पर कोई कहे विन्यास करेगा ? एक बार जिस बरों में बार-बार दिव्य करने बसू तो क्या में धरत धरत म विन्यास नही उड़ जायगा ?

राम—मैं विन्यास से कह रहा हूँ—बोगो के समाधान के लिए धरत एक बार धरत हो ।

सीता—बड़ी, कभी नहीं मैं दुःख कभी धरत मन नगी । दुःख दिव्य नहीं करती । मैं स्वयं निवृत्त पवित्र होती हुई भा कबल इर्ष्या कि लोगों को मुझ पर मीन है, मैं कभी भी दुःख दिव्य नही करती । धरत राजा है इसलिए धरत लोगों की बरदा है । मैं नहीं हूँ इसलिए मुझे रबी जाति का विचार है । रबी जाति के धरत का विचार है इसलिए कि मैं बारी हूँ । यदि हम समय में पीछ हटकर दिव्य किया तो उठका धर्म विन्यास से समस्त रबी जाति को मोचना पड़ेगा । बड़े ही बड़ी बड़ी ग्याता से ठापी ठापी जाति मुझ से उठेगी । मैं ही उठनी ही विन्यास है

तो वह मंडप में रखी हुई वह सीता की प्रतिमा फेंक दीजिए और इस बसती बोगती जीवन कर्मी का हाथ पकड़कर सम्बन्ध पुरा कीजिए।
 ब्रह्मन्वीकि—घात हो बसबसे घात हो।

उर्मिला—घात कैसे होई ? निरन्तर विदम्बना ही रही है—राम की पत्नी की नहीं जनकमुठा की नहीं धर्मोपमा की राणी की नहीं मेरी लाइमी बहन की भी नहीं ! क्यों ही रही है वह स्त्री जाति की विदम्बना ? संदेह ! संदेह ! केवल स्त्री जाति पर ही क्यों संदेह किया जाता है ? क्या पुण्य धर्मका निर्दोष होता है ? सुप्यलका अत्यंत सुन्दर रूप धारण करके राम के बने पड़ने आई थी—बहु बाहली थी कि सीता को छोड़कर राम उसे धमिकार करें, वह बात (सबमरुत को छोड़ देकर) यही बताना करते हैं। उन समय वहाँ सीता उपस्थित नहीं थी।—क्यों ठीक है न ? (राम चुर) पर उस समय सीता ने भी कही घात पर संदेह किया ? कभी उत्सुक भी किया उत बटना का ? कितनी निर्मल होती है स्त्री जाति की मनोवृत्ति ! घोर घाव पुरुष ! घका ! घका ! घका ! हमेशा संदेह ! हमेशा घकाए ! घाव पुरुषों का स्वयं भाने पर विश्वास नहीं होता !—

सीता—उर्मिला !—

उर्मिला—दुख न रहो ! मैं इन बातों का महत्व जानती हूँ। मारी जाति का रूप कुछ ठरहूँ घुटना रहना है यह जितना मैं अनुभव कर चुकी हूँ तुम नहीं ! कई क्यों से घुटने बाने मेरे हृदय को घुट निरालने का घाव घबहर दिया है—तुम्हारे कारण दिया है ! (राम से) बणाइए, क्या अब भी घावके मन में संदेह है ?

राम—सुनो क्या करो उर्मिला लोकाचारिका के बुद्धिघार के नीचे मैं सब गया हूँ पुर्वज हो गया हूँ। मैं विश्वास हूँ। अश्विन बार बड़े देता हूँ कि सीता इन महति की दावा में अपने पवित्र होने के बारे में वहाँ घाव से।

सीता—(बास्मीकि से) गुना घुस्सव ? अब मर विग क्या दादा है ?

बास्मीकि—मैं प्रणिता पूर्वक कहता हूँ कि नीता निर्दोष है। निष्ठाव है। वह निर्दोष प्रमाणात्क म हूँ ता मेरी महत्त्वों कर्षों की शान्त्या निष्कल हो जायगी इससे अधिक मैं और क्या कहूँ ?

सीता—पर मेरे लिए बाबू क्या दादा है ?

बास्मीकि—अपनी रज्य करने के लिए तुम स्वयं ही समथ हो।

सीता—(राम से) गुना ? मेरे दुर्भाग की दादा मुज मी ? अब मैं क्या करूँ ?

राम—दापव लो। विष्य क्या। मेरी या नवावान इता वादिग !

सीता—इस तरह किठनी बार दिव्य कर्ष ? एक बार दापव मी दिव्य क्रिया केवल दादों स मही प्रवि-निष्क विष्य। विष्य एक ही बार क्रिया जाता है। दापव एक ही बार ही जाती है। बार-बार दाव विने बाव के दाव पर कोई कसे विव्वाव करेगा ? एक बार दिव्य दावे मी यदि मैं बार-बार दिव्य करने महु तो क्या मंग कर्षे का के विव्वाव मर्षी उड़ जायगा ?

राम—मैं विव्वलता से कह रहा हूँ—लोको के मन्त्र के लिए धीर एक बार दापव लो।

सीता—नही कमी नहीं मैं दुवाप कमी दापव मही दाव विव्वलता से कह रही हूँ। मैं स्वयं सिद्ध प्रवित्र होनी हूँ जो केवल विव्वलता से कि सोपों को मुझ पर मरेह है मैं कमी मी दुवाप दिव्य कर्ष विव्वलता से दाप रज्या है इसलिए दापको लोको की परवाह है। मैं स्वयं विव्वलता से मुझे दसो वादि का विचार है। दसो वादि के मविष्य की विव्वलता से विग कि मैं नारी हूँ। यदि इस समय मेने पीछ हटकर विव्वलता से उठका फम मविष्य में समस्त दसो वादि को मोगना वड़ेगा। मैं मी उठनी हूँ कठी श्वासा से ठापी नापी वादि मुजस अटेगी। मैं मी उठनी हूँ

भूमि कन्या सीता

तो यज्ञ मंडप में रखी हुई वह सीता की प्रतिमा फट बीबिए धीर हथ
बलती बोधती बीबिन पत्नी का हाथ पकड़कर धरममथ पूरा कीजिए।
बालमीकि—घात हो बलसे घात हो।

उमिता—घात कैसे होऊँ ? निरन्तर विदम्बता हो रही है—राम
की पत्नी की नहीं जनकमुठा की नहीं समोष्मा की रात्री की नहीं मेरी
साइली बहन की भी नहीं ' क्यों हो रही है यह स्त्री जाति की विदम्बता ?
सदेह ! सदेह ! केसम स्त्री जाति पर ही क्यों सदेह किया जाता है ?
क्या पुरुष धरबा निर्योप होता है ? धूपराखा अत्यंत सुन्दर रूप धारण
करके राम के यत्ने पड़ने पाईं थी—बढ़ चाहती थी कि सीता को छोड़कर
राम उसे धमिकार करें यह बात (लक्ष्मण की धीर देखकर) मही बनाया
करते हैं। उस समय वहाँ सीता उपस्थित नहीं थी।—क्यों डीक है न ?
(राम चुप) पर उस समय सीता ने भी कही घाप पर सदेह किया ?
कभी उन्मेष थी किया उस पटना का ? कितनी निर्मल होती है स्त्री
जाति की मनोवृत्ति ! धीर घाप पुष्प ! संका ! संका ! संका ! हमेषा
सदेह ! हमेषा संकाए ! घाप पुष्पों को स्वयं धपने पर निश्वास नहीं
होता।—

सीता—उमिता !—

उमिता—बुध न बहो। ये इस घाप का महत्त्व जानती हैं। मारी
जाति का हम किस तरह पटना रहता है यह जितना मैं अनुभव
कर चुकी हूँ तुम नहीं। कई क्यों से पढ़ने जाने मेरे हृदय को जून निकलने
का घात धरधर मिला है—तुम्हारे कारण मिला है। (राम से) बजाए,
क्या अब भी घापके मत में सदेह है ?

राम—बुद्ध जमा करो उमिता मोहापचना के घुद मार के नीचे मे
रब गया है बुधन हो गया है। ये बिबसा है। अन्तिम बार बड़े देता है कि
सीता इन महर्षि की धाजा ने धपन पवित्र होने के बारे में मही धपन
से।

सीता—(बास्मीकि से) मुना पुश्तेब ? अब मेरे लिए क्या आज्ञा है ?

बास्मीकि—मैं प्रतिज्ञा पूर्वक कहता हूँ कि सीता निर्दोष है । निष्पाप है । वह निर्दोष प्रमाणित न हुई तो मेरी सहस्त्रों बपों की उपस्था निष्कल हो जायगी इससे अधिक मैं और क्या कहूँ ?

सीता—पर मेरे लिए आपकी क्या आज्ञा है ?

बास्मीकि—अपनी रक्षा करने के लिए तुम स्वयं ही समर्थ हो ।

सीता—(राम से) मुना ? मेरे पुश्तेब की आज्ञा सुन ली ? अब मैं क्या करूँ ?

राम—अपय लो । दिव्य करो । भोगों का समाधान होना चाहिए ।

सीता—इस तरह कितनी बार दिव्य करूँ ? एक बार अपय ली दिव्य किया केवल सब्जों से नहीं घनि दिव्य किया । दिव्य एक ही बार किया जाता है । अपय एक ही बार ली जाती है । बार-बार अपय देने वाले के सब्ज पर कोई कैसे विश्वास करेगा ? एक बार दिव्य करके भी यदि मैं बार-बार दिव्य करने लूँ तो क्या मेरा अपने ऊपर से विश्वास नहीं उड़ जायगा ?

राम—मैं विह्वलता से कह रहा हूँ—भोगों के समाधान के लिए और एक बार अपय लो ।

सीता—नहीं कभी नहीं मैं दुबाटा कभी अपय नहीं लूँगी । दुबाटा दिव्य नहीं करूँगी । मैं स्वयं छिद्र पवित्र होती हुई भी केवल इसीलिए कि लोगों को मुझ पर संदेह है, मैं कभी भी दुबाटा दिव्य नहीं करूँगी । आप राजा हैं इसलिए आपको लोगों की परवाह है । मैं स्त्री हूँ इसलिए मुझे लो बात का विचार है । स्त्री जाति के भविष्य की चिन्ता है इस लिए कि मैं माटी हूँ । यदि इस समय मैंने पीछे हटकर दिव्य किया तो उसका फल भविष्य में समस्त स्त्री जाति को भोगना पड़ेगा । संदेह की वजह से कभी आज्ञा ही नहीं ली जायेगी । मैं भी अपनी ही विह्वलता से

कह रही है सम्राट् कि घाय मुझे क्षम्य लेने का धनुरोप न कीजिए ।

राम—रामराज्य की प्रतिष्ठा के लिए मैं तुम से प्रार्थना कर रहा हूँ—

सीता—राम राज्य की प्रतिष्ठा ! रामराज्य की प्रतिष्ठा से भी मैं स्त्री जाति की प्रतिष्ठा को अधिक महत्त्वपूर्ण समझती हूँ ! राम राज्य ? केता रामराज्य ! रामराज्य का जनबास में । वहाँ बैभव थे ऐसी प्रतिष्ठा न थी । अधिकार की महत्ता न थी । वह केवल रामराज्य न था सीताराम का राज्य था इसीलिए ऋषि-मुनिवों की तपस्या निबिन्न हो सकी सीताराम का राज्य था इसीलिए राक्षसों का संहार हो सका दुर्जनों का नाश होकर सबनों की प्रतिष्ठा प्रस्थापित हो सकी । राक्षस का साम्राज्य नष्ट होकर विभीषण सका का राजा बना तथा पृथ्वी निष्कटक हुई वह इसलिये कि वह सीताराम का राज्य था । सीता की शिष्य करने का जो यह प्रथम बार-बार सा रहा है वह भी इसीलिए कि वह रामराज्य है—राम राज्य है । स्त्री जाति का यह अपमान वह भूमि कन्या कदापि सहन नहीं करेगी । राजा रामचन्द्र में शिष्य कर रही हूँ पर अपनी पवित्रता की प्रस्थापना के लिए नहीं । शिष्य कर रही हूँ स्त्री जाति के अपमान को मिटा डालने के लिए । मैं चाहती हूँ सीताराम का राज्य । सीताराम के राज्य में जीना चाहती हूँ । पतिव्रतपवन के नाम से जिसका अवलम्बन हो रहा है वह राम नहीं सीताराम है सीताराम के रामराज्य की छत्र छाया बिना मरे सिर जीना असम्भव हा रहा है इसीलिए शिष्य कर रही हूँ । यदि मैंने रघुकुमात्वान राम क मित्राय श्य किमी भी पुरुष का चित्तन नहीं दिया है जनता बाधा और कर्मणा स एक राम की ही उपासना की है तो यह विष्णु पत्नी—मेरी माता—यह सुमाता अपनी तपसक कन्या को इसी क्षण स्वान दोगी । भूमि ग उत्पन्न यह धारमा भूमि में ही लमा आययी । जय सीताराम !

[सीता नीचे बैठकर जमीन पर मस्तक टेकती है । चारों ओर

धँबेरा हो जाता है । प्रकाश की एक कौपली ज्योति कड़कड़ाने के साथ
 कमकती है और फिर से ज्वाला हो जाता है । ज्वाला और मस्मण
 बौकते हुए सामने आते हैं ।]

ज्वाला—हाँ ! राम की चित्तस्थिति अनंत में विनीत हो गई !

राम—हा सीते ! हा सीते !

॥ ॐ तत्सत् ॥